एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ॥ओ३म्॥ डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३
प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित
हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १२ ● अंक : १० ● २५ अगस्त २०२३, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : २५/- ● कुल पृष्ठ : ३६

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य रत्न ठाकुर विक्रमसिंह जी

आर्य रत्न, भामाशाह ठाकुर विक्रमसिंहजी अभिनन्दन एवं वेदनिधि समारोह

चलो दिल्ली

दिनांक : १९ सितम्बर, २०२३, मंगलवार
समय : प्रातः ७:३० से दोपहर २:०० बजे तक
स्थान : तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली
सम्पर्क : ०११-४५७९११५२, ९८१०७६४७९५, ९३१३८२४१५३

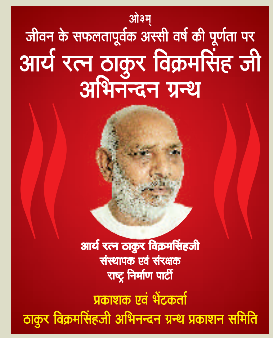

अभिनन्दन ग्रन्थ

गरिमामयी उपस्थिति

संरक्षक
स्वामी आर्यवेश जी
प्रसिद्ध आर्य नेता एवं संन्यासी

आशीर्वाद प्रदाता
स्वामी प्रणवानन्द जी
गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली

अध्यक्ष
श्रीमान् सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सार्वदेशिक आ.प्र. सभा

मुख्य अतिथि
स्वामी रामदेव जी
पतंजलि योग पीठ

८० वें अमृत महोत्सव पर शत-शत अभिनन्दन एवं बधाई - वैदिक संसार परिवार

सम्माननीय ठा. विक्रमसिंहजी आप आर्य समाज व राष्ट्र के सच्चे सजग प्रहरी, समाज सुधारक, पुरोधा, आध्यात्मिक पुरुष हैं। आप वेदों व महर्षि दयानन्द के सच्चे अनन्य अनुयायी हैं। आपने आर्य जगत् के विद्वत् महापुरुषों का सम्मान करके अत्यन्त ही महान् पुण्य कार्य किया। आप बहुत ही बधाई के योग्य महापुरुष हैं। पारखी व्यक्ति ही कसौटी बन शुद्धता की परख करता है।

मैं आपके अस्सीवें अमृत महोत्सव पर शत-शत बधाई के साथ शताधिक वय एवं सुस्वास्थ्य की कामना के साथ हार्दिक हर्ष प्रकट करता हूँ।

यूँ तो संसार में कई जन्म लेकर मरते हैं,
जीवन उसी का सफल जो श्रेष्ठ कर्म करते हैं।
कहते हैं जन्मदिन ने उम्र आपकी एक वर्ष घटा दी,
ठाकुर सा. कहते हैं मैंने वय अपनी अनुभव में बढ़ा दी।।
जिसमें त्याग वीरता व शौर्य का हो अंकुर,
ये हैं विक्रमसिंहजी बहादुर सच्चे ठाकुर।
आपमें राष्ट्रवाद व समाज सुधार गुण भरा भरपूर,
आध्यात्म मूर्ति हैं आप, नहीं ब्रह्म आपसे दूर।।

अम्बालाल विश्वकर्मार्य 'कवि'
विश्वकर्मा प्रतिष्ठान,
पिपल्या मण्डी, मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९५३२४१३

महान् ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, गऊभक्त, वेदभक्त, देशभक्त, महा दानवीर आर्यरत्न ठाकुर विक्रमसिंह आर्य शतायु हों... दीर्घायु हों...

जगत् गुरु ऋषि दयानन्द थे, योगी ईश्वर भक्त महान्।
त्यागी तपधारी ब्रह्मचारी, देशभक्त वैदिक विद्वान्।।
वीर साहसी देशभक्त थे, निर्भय किया वेद प्रचार।
काँप गए थे वेद विरोधी, सुनकर ऋषिवर की हुंकार।।१।।
स्वामी श्रद्धानन्द, लाजपत, लेखराम, गुरुदत्त महान्।
सचमुच बड़े भाग्यशाली थे, प्यारे ऋषि से पाया ज्ञान।।
हंसराज बन गया महात्मा, सुनकर ऋषिवर के व्याख्यान।
गुरुकुल विद्यालय खोले थे, किया सकल जग का कल्याण।।२।।
देवजनों ने देश जगाया, झेले थे तब भारी कष्ट।
कहा सभी ने गौ हत्यारे, अंग्रेजों को कर दो नष्ट।।
बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह ने, सचमुच किया घोर संग्राम।
मदनलाल, करतार सिंह, ऊधमसिंह का है जग में नाम।।३।।
स्वामी भीष्म, ब्रह्मचारी का, चेला विक्रमसिंह बलवान।
महाशय श्री लटूरसिंह का पुत्र बहादुर शेर समान।।
देश-धर्म का दीवाना विक्रम देता खुलकर व्याख्यान।
भले-बुरे की, पुण्य-पाप की, विक्रमसिंह को है पहचान।।४।।

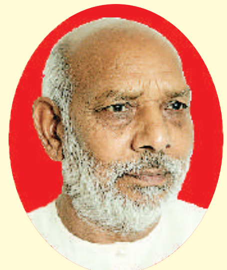

• पं. नन्दलाल निर्भय
सिद्धान्ताचार्य
बहीन, पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

वर्ष तिरासी उम्र है मेरी, सुनो जगत के सब विद्वान।
मेरा प्यारा साथी सच्चा, ठाकुर विक्रमसिंह सुजान।।
किया विश्व के विद्वानों का, प्यारे विक्रम ने सम्मान।
भामाशाह सा दानवीर है, विक्रम है भारत की शान।।५।।
अपने जीवायु के विक्रम ने पूर्ण लिए कर अस्सी साल।
पूर्ण स्वस्थ सानन्द घूमता फिरता है भारत का लाल।।
देता है व्याख्यान धड़ाधड़, योद्धा यह कर रहा कमाल।
शास्त्रार्थ कर लो कोई भी, ठोक रहा है विक्रम ताल।।६।।
वैदिक विद्वानों का सम्बल, विक्रमसिंह है सच्चा वीर।
उदारमना है साथी मेरा, देश भक्त विक्रम रणधीर।।
संतजनों का सच्चा रक्षक, दानव दल का है यह काल।
बेईमानों की विक्रम के, आगे ना गलती है दाल।।७।।
हे भगवान! जगत् के स्वामी, दया करो, हे दया निधान।
ठाकुर विक्रमसिंह को प्रभुवर, शतायु जीवन का दो दान।।
घूम-घूम कर दुनिया भर में, विक्रम करे वेद प्रचार।
'नन्दलाल' निर्भय विक्रम का, फूले-फले खूब परिवार।।८।।

महान् ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, मातृ-पितृ भक्त, कर्तव्यनिष्ठ, शीलवन्त
आर्यवीर डॉ. कमलकान्त गोस्वामी का अल्पायु में निधन

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

जगत् पिता जगदीश का, बड़ा निराला खेल।
उसके आगे हो गए, अच्छे-अच्छे फेल।।
सुख चाहो तो सज्जनों!करो ओ३म् गुणगान।
वेदों के पथ पर चलो, यदि चाहो कल्याण।।

पुन्हाना (मेवात) हरियाणा। आर्य समाज पुन्हाना आर्य वीर दल पुन्हाना, के सक्रिय कार्यकर्ता डॉ. कमलकान्त गोस्वामी, राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पुन्हाना का दिनांक ७.६.२०२३ को हृदयाघात से अल्पायु में निधन हो गया। अन्तिम (अन्त्येष्टि) संस्कार दिनांक ८.६.२०२३ को स्वर्गधाम पुन्हाना में वैदिक रीति से आचार्य तरुण प्रकाश, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल भादस (नूंह) हरियाणा ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आर्यों (हिन्दुओं) और मुसलमानों की लगभग दो हजार व्यक्तियों की उपस्थिति थी। यह डॉ. कमलकान्त की सज्जनता का प्रमाण है।

दिनांक १९.६.२०२३ को शान्ति यज्ञ वैदिक विद्वान् पण्डित नन्दलाल 'निर्भय' कविरत्न बहीन (पलवल) हरियाणा ने सम्पन्न कराया। यज्ञोपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य नन्दलाल 'निर्भय' ने अपने प्रवचन में बताया कि परमपिता परमात्मा हमें शुभ कर्मों के उपरान्त मानव चोला प्रदान करता है। वह संसार का स्वामी बड़ा न्यायकारी और दयालु है। हमें उस जगतपिता को सदैव याद रखना चाहिए तथा शुभ कर्म करने चाहिए। डॉ. कमलकान्त गोस्वामी सच्चा आर्य युवक, ईश्वर भक्त व धर्मात्मा था, इसलिए हमें भी शुभ कार्य करना चाहिए।

स्मृति शेष डॉ. कमलकान्त गोस्वामी

डॉ. कमलकान्त जी की धर्मपत्नी
श्रीमती करुणा गोस्वामी एवं
सुपुत्री प्रकृति तथा सुपुत्र रघु

छोटा भाई
अश्विन गोस्वामी

इस अवसर पर श्री दुलीचन्द वाजपेयी, श्रीराम अवतार 'आर्य', श्री बिहारीलाल 'आर्य', श्री वेदराम 'आर्य' पुन्हाना, श्री बाबू गिरी न्यायाधीश गुजरात ने श्री कमलकान्त को ईश्वर भक्त, देशभक्त युवक बताया। श्रीमती सुरेखा आर्या रेवाड़ी, श्री नरेश गोस्वामी पानीपत, डॉ. भारत भूषण सोनीपत, श्रीकृष्ण कुमार शिक्षाविद् कैथल ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर श्रीमती उषा कुमारी (माता), श्रीमती मामो देवी (बुआ), श्रीमती कमलेश (बुआ), मुन्नी देवी (बुआ), श्रीमती रामरती देवी (ताई), श्रीमती सरोज देवी हिसार, श्री राजेश कुमार गोस्वामी सरपंच छाजपुर (हिसार) आदि महानुभाव उपस्थित रहे। यजमान की भूमिका श्रीमती करुणा गोस्वामी ने निभाई।

श्री शमशेर गोस्वामी शिक्षाविद् (कमलकान्त के पिता) ने सभी विद्वानों, आगन्तुकों का धन्यवाद किया। शान्ति पाठ के पश्चात् आयोजन का समापन किया गया।

अश्वनी कुमार गोस्वामी
पुन्हाना (नूंह) हरियाणा

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : १०

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अगस्त, २०२३

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  गजेश शास्त्री, इन्दौर (अवैतनिक)
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
  बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	२५,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	५,१००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,५००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	९००/–
वार्षिक सहयोग (प्रेषण व्यय सहित)	३५०/–
एक प्रति (प्रेषण व्यय रहित)	२५/–
विज्ञापन : रंगीन प्रति पृष्ठ	७,१००/–

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलिया हाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
ये गधा कौन सा हिन्दू राष्ट्र बनाएगा?	सम्पादकीय	०५
गायत्री समस्त मनुष्य (स्त्री–पुरुष) जाति के लिए	आ. राहुलदेव आर्य	०७
मीडिया भगवान विश्वकर्मा की अनदेखी क्यों कर रहा है?	डॉ. लक्ष्मी निधि	०८
आर्य समाज की शिथिलता का दुष्परिणाम : कलुषित अन्तःकरण...	आ. सुशीलकान्त	०९
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	०९
भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल	डॉ. गंगाशरण आर्य	१०
महान् विभूति : योगेश्वर श्रीकृष्ण अद्वितीय महापुरुष	मनमोहन कुमार आर्य	११
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	१२
महान् विभूतियाँ : कुछ क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय	खुशहालचन्द्र आर्य	१३
: ...१४८ महान् विभूतियों का पावन स्मरण	आचार्य राहुलदेव आर्य	१४
अपने जन्मदाता की जन्मतिथि को लेकर भ्रम का शिकार आर्य समाज	इं. आदित्यमुनि	१५
ब्रह्माण्ड एक है या अनेक?	ओमप्रकाश आर्य	१६
मनुष्य तन	देवकुमार प्रसाद आर्य	१७
वेदों में श्राद्ध एवं पितृ तर्पण	शिवनारायण उपाध्याय	१८
वेद का परमचक्षु ज्योतिष	गजेन्द्रसिंह आर्य	२१
शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ	सुन्दरलाल चौधरी	२२
सर्वहितकारी आर्य समाज के १० नियम का काव्यानुवाद	पुष्पा शर्मा	२२
शताब्दी पूर्व का विस्मृत एक नृशंस हिन्दू नरसंहार	जगदीश प्रसाद आर्य	२३
पुस्तक परिचय : संस्कृत में नवाचार	देवमुनि	२४
अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की नीति से राष्ट्रीय अस्मिता एवं संस्कृति को खतरा	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	२५
तृतीय स्वाध्याय साधना शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न	ब्र. प्रविन्द्र आर्य	२६
इस्लाम मुक्त भारत (ISLAM FREE INDIA- IFI)	राधाकिशन रावत	२७
हे मानव! तू मानव बन	कर्मपाल वैदिक	२९
युगनायक योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी	पं. नन्दलाल निर्भय	३०
आर्यो! क्या आपको स्मरण है– हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का रक्तरंजित संघर्ष?	रामफलसिंह आर्य	३१
पुस्तक समीक्षा– योग विद्या प्रश्नोत्तरी	आ. रमेश आर्य	३३
आज बेटियों की दशा/दुर्दशा पर जनमानस	मोहनलाल दशोरा	३४

विश्व जागृति का आधार महर्षि दयानन्द कृत महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं उत्तम जीवन निर्माण के लिए 'संस्कार विधि' अवश्य पढ़ें और जीवन में प्रगति पथ पर आगे बढ़ें।

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५१४८१०, ९६६४६३०११६

इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः (४१)

– सामवेद उ. १.२.३.३

शब्दार्थ– हे प्रभो! **देवाः** = विद्वान् लोग **सुन्वन्तम्** = अपना साक्षात् कराते हुए आपकी **इच्छन्ति** = इच्छा करते हैं **स्वप्नाय न स्पृहयन्ति** = निद्रा के लिए इच्छा नहीं करते **अतन्द्राः** = निरालस होकर **प्रमादम् यन्ति** = अत्यन्त आनन्द को प्राप्त होते हैं।

विनय : हे प्रभु! आपकी यह न्याय व्यवस्था है, आपका यह सिद्धान्त है कि आप और आपके विद्वान् सन्त महात्मागण– सतत् क्रियाशील पुरुषार्थशील उद्यमी लोगों को चाहते हैं व उन्हें सुख प्रदान करते हैं, जबकि जो मनुष्य निद्रा, तन्द्रा, आलस्य–प्रमाद में पड़कर सोते रहते हैं। उन्हें आप व आपके विद्वान् मनीषीगण नहीं चाहते हैं अपितु उन्हें दण्डित करते हैं। किन्तु जो निरालस होकर स्वयं व अपना कल्याण करते हुए औरों का भी कल्याण करते हैं उन्हें आप आनन्दित करते हैं।

हे महाविद्वान् परमात्मन्! आप हमें ऐसा ज्ञान, बल, विद्या, बुद्धि प्रदान करिये कि हमारे अन्दर आलस्य प्रमाद आदि कोई दोष दुर्गुण न्यूनता नहीं रहने पाये व हम पुरुषार्थी मेहनती बनते हुए सब प्रकार के भौतिक व आध्यात्मिक ऐश्वर्य से सुसम्पन्न होते हुए आनन्दित रहें तथा हमारे स्वजनों को भी आनन्दित कर सकें।

पद्यार्थ: *हे परमेश्वर! आपकी वाणी, कहती सुन लो प्यारे प्राणी।*
निद्रा और आलस्य को त्यागो, विषयभोग की ओर न भागो।।
चलो सदा मेरे अनुकूल, विमल बनो सुरभित ज्यों फूल।
पुत्र बनो तुम प्यारे न्यारे, पिता तुम्हारा तुम्हें पुकारे।। ■

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली**
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त सितम्बर मास, २०२३ के कुछ विशेष पर्व–दिवस

०१. गुरु ग्रन्थ साहिब प्रकाट्य दिवस, जीवन बीमा निगम स्थापना दिवस, ०१–०७ राष्ट्रीय पोषण सप्ताह, गुट निरपेक्ष दिवस, एन.सी.ई.आर.टी. स्थापना दिवस। ०२. विश्व नारियल दिवस। ०५. बाबू जगदेव प्रसाद बलिदान दिवस, शिक्षक दिवस। ०६. **पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जयन्ती**। ०७. श्री कृष्ण जन्माष्टमी। ०८. विश्व साक्षरता दिवस, फिजियोथेरेपी दिवस। ०९. हिमालय दिवस, शिक्षा को हमले से बचाने का दिवस। १०. विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस, दादा–दादी दिवस (दूसरा रविवार), अन्तर्राष्ट्रीय दक्षिण सहयोग दिवस। १३. **स्वामी ब्रह्मानन्द लोधी पुण्यतिथि**। १४. विश्व बन्धुत्व एवं क्षमायाचना दिवस, हिन्दी दिवस। १५. अन्तर्राष्ट्रीय लोकतन्त्र दिवस, संचयिका दिवस, अभियन्ता दिवस। १६. विश्व ओजोन दिवस। १७. विश्वकर्मा पूजन दिवस, विश्व रोगी सुरक्षा दिवस, तमिलनाडु सामाजिक न्याय दिवस, मराठवाड़ा मुक्ति संग्राम दिवस। १८. विश्व बाँस दिवस, **हुतात्मा शंकरशाह रघुनाथ शाह बलिदान दिवस**। १९. **आर्य भामाशाह ठाकुर विक्रमसिंहजी ८१वाँ जन्म दिवस**, ऋषि पंचमी (ब्रह्मर्षि अंगिरा जयन्ती)। २१. विश्व शान्ति दिवस, विश्व अल्जाइमर दिवस। २२. विश्व रोज डे (कैंसर पीड़ित सहायतार्थ)। २३. विश्व हैजा दिवस, अन्तर्राष्ट्रीय सांकेतिक भाषा दिवस, महर्षि दधीचि जयन्ती। २४. विश्व बेटी दिवस। २५. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती, अन्त्योदय दिवस, विश्व फार्मासिस्ट दिवस। २६. विश्व मूक–बधिर दिवस, सैन्य इंजीनियरिंग सेवा दिवस, सी.एस.आर.आई. स्थापना दिवस। २७. **आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जयन्ती**, विश्व पर्यटन दिवस, राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण स्थापना दिवस। २८. विश्व रैबिज दिवस। २९. **पं. दादा बस्तीराम जयन्ती**, विश्व हृदय दिवस, विश्व समुद्री दिवस। ३०. अन्तर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

ये गधा कौन सा हिन्दू राष्ट्र बनाएगा?

सम्पूर्ण धरा पर निर्विवाद रूप से मानवीय मूल्यों से युक्त ईश्वरीय ज्ञान पर आधारित कोई धर्म–संस्कृति है तो वह एकमात्र सनातन धर्म संस्कृति है। जिसका प्रवर्तक कोई मनुष्य नहीं, क्योंकि सनातन धर्म का न आदि है और न अन्त। किसी समय में यह सम्पूर्ण धरा का मार्गदर्शक गुरु रहा है। यह भूमि स्वर्ग से सुन्दर और सोने की चिड़िया के रूप में सुविख्यात थी। इसी धर्म–संस्कृति के कारण यहाँ के राज्याधिकारी चक्रवर्ती सम्राट होते थे। इस धरा का इतिहास त्यागी–तपस्वियों, बलिदानियों से भरा पड़ा है। सनातन धर्म–संस्कृति की प्राचीनता, सार्वभौमिकता, सार्वकालिकता, सार्वसमावेशी, वसुधैव कुटुम्बकम्, कृण्वन्तों विश्वमार्यम् जैसी अनेक अवधारणाओं के समक्ष उपजी नवीन विचारधाराएँ जिनका प्रादुर्भाव किसी न किसी मनुष्य के द्वारा किया गया है जो वास्तविक रूप में धर्म नहीं होकर मत–पन्थ–सम्प्रदाय है, जिनमें अपने–पराये का भेदभाव है। जो सार्वभौमिक–सार्वकालिक–सार्वजनिन नहीं होकर किसी देश–काल तथा कुछ मनुष्यों तक सीमित थी, जिनमें संकीर्णता, दुर्भावना, अमानवीयता कूट–कूट कर भरी हुई है। किन्तु कहा गया है कि सूर्य के अस्त हो जाने पर तारे भी चमकने लगते हैं। ऐसा ही कुछ सनातन धर्म–संस्कृति के ज्ञान प्रकाश के अभाव की रात्रि में कुकुरमुत्तों की तरह उपजे मत–पन्थ, सम्प्रदाय अपने- आपको धर्म घोषित कर जिस प्रकार अन्धकार पूर्ण रात्रि में तारे चमकते हैं और अपनी सत्ता का आभास करवाते हैं, उसी प्रकार चमक रहे हैं और जन–जन को अपने अज्ञान–अधर्म से ग्रसित–पीड़ित कर अपनी सत्ता को प्रचारित–प्रसारित कर खूब फल–फूल रहे हैं। फले–फूले भी क्यों नहीं, क्योंकि महाभारत के लगभग एक हजार वर्ष पूर्व से वैदिक धर्म सिद्धान्तों का ह्रास होना प्रारम्भ हुआ। परिणाम स्वरूप समूची मानव जाति के विनाशक रूप में महाभारत उपस्थित हुआ। वैदिक सिद्धान्तों के ह्रास की रही–सही कसर को महाभारत युद्ध ने पूर्ण कर दिया। इस विनाशकारी युद्ध ने वेद के ज्ञाता विद्वानों की इस उर्वरा भूमि को मरुभूमि में बदल दिया। एक प्रकार से अज्ञान के अन्धकार का साम्राज्य स्थापित हो गया और वेद विरुद्ध अवधारणाएँ, मत–पन्थ, सम्प्रदाय उत्पन्न होने लगे। एक मानव जाति विचारधाराओं के नाम पर खण्ड–खण्ड होने लगी। विश्व गुरु की सन्तती अपनी सुध–बुध खो बैठी। जिसका दुष्परिणाम आना ही था और आया भी। जो अनार्य (अमानवीय) कहे जाने वाले लोग थे उन्होंने इसे पददलित किया और आर्य जाति के वंशजों ने लगभग १२५० वर्ष की पराधीनता का दंश भोगा। ऐसे घोर अन्धकार युग में मानव जाति उद्धारक महान् दिव्यात्मा देव दयानन्द का अवतरण हुआ। अपनी सुध–बुध खोई आर्य जाति को उस महामानव ने झंझोड़कर जगाया और **'वेदों की ओर लौटो'** का दिव्यास्त्र हाथों में थमाया। जिसके परिणामस्वरूप वेद ज्ञान प्रकाश की गहन कालिमा में कुछ कमी आई और सोई हुई आर्य जाति अंगड़ाई लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु उठ बैठी। किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व ही हमने देव दयानन्द और देव दयानन्द से प्रेरित असंख्य विभूतियों को खो दिया। फलत: देश विदेशी दासता से तो मुक्त हो गया किन्तु महाभारत युद्ध के पश्चात् जो वेद विरुद्ध अवधारणाएँ, मत–पन्थ–सम्प्रदाय और पराधीनता के काल में विदेशी विधर्मियों द्वारा थोपी गई कुशिक्षा, कुसंस्कार और परस्पर फूट रूपी विष के जो बीज बो दिये गये थे उनसे मुक्ति दिवास्वप्न बनकर रह गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जिन विभूतियों को स्वतन्त्रता का वास्तविक श्रेय दिया जाना था उनके मन्तव्य तथा इस धरा की मूल सनातन धर्म–संस्कृति, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली, राज व्यवस्था के अभाव में जिन वेद विरुद्ध अवधारणाओं का शमन होना था वे फलने–फूलने लगे और देव दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज भी शनै:–शनै: अपना तेज खोता चला गया और वर्तमान में तो वह इतना सिमट गया है कि आर्य समाज के सामने बौने दिखने वाले अनार्ष मत–पन्थ–सम्प्रदाय आर्य समाज के सामने विराट–विशाल हो गए हैं।

वर्तमान में इतनी दयनीय दशा हो गई है कि थोड़े से वाक् चातुर्य वाले लोग, जिन्हें अपने स्वयं के जीवन का लक्ष्य पता नहीं, कल्याण तो दूर की बात है। जिन्हें वेद–शास्त्रों का ज्ञान तो दूर वैदिक सिद्धान्तों का सामान्य ज्ञान भी नहीं है, ऐसे–ऐसे ढोंगी–पाखण्डी धर्माधिकारी बन बैठे हैं। जो निरंकुश होकर कुछ का कुछ अनर्गल प्रलाप कर रहे हैं। दूसरों को मोह–माया से दूर त्याग–तपस्या का उपदेश देने वाले मोह–माया, विलासिता और भोग में आकण्ठ डूबे हुए हैं। इन पर किसी प्रकार का कोई नियन्त्रण नहीं। कोई इनसे प्रमाण पूछने वाला नहीं कि आपने ऐसा कहा तो इसका क्या प्रमाण है? जो समझ में आया कह दिया। कोई पूछने वाला नहीं, कोई टोकने वाला नहीं, कोई आपत्ति उठाने वाला नहीं। पूछे भी कौन? टोके भी कौन? आपत्ति भी उठाए तो कौन? शिक्षा में वेद–शास्त्रों के अध्ययन की व्यवस्था देश की स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष बाद भी नहीं। वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों के प्रतिकूल साहित्य पर कोई नियन्त्रण नहीं। वैदिक सिद्धान्तों के विपरीत सिद्धान्तों की साहित्य में प्रक्षिप्तता, प्रचार–प्रसार पर कोई नियन्त्रण–उन्मूलन नहीं। स्वतन्त्रता के नाम पर अनार्ष साहित्य, तथ्यों को खुली स्वच्छन्दता प्राप्त है। इन परिस्थितियों में जन सामान्य **'अकल का अन्धा और गाँठ का पूरा'** भेड़ सदृश बन चुका है। इन भेड़ों की भीड़ जिसे वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञान अभाव में न तो **'कर्मफल सिद्धान्त'** का ज्ञान है और न पुनर्जन्म का और न ही परमात्मा के वास्तविक स्वरूप तथा न ही परमात्मा की न्यायकारी व्यवस्था का। वह तो यह समझता है कि उसके बाबाजी ही सर्वोपरि है। बाबाजी ने जो कह दिया उसके सामने ईश्वर भी नतमस्तक है। उन्हें बिल्कुल भी भान नहीं होता कि बाबाजी स्वयं पत्थर की नाव पर बैठे हैं। बाबाजी तो डूबेंगे ही, उसे भी साथ ले डूबेंगे और कोई इसे यह बोध करवाने का प्रयास भी करे तो वह बाबाजी का इतना अन्धभक्त होता है कि बोध करवाने वाले का सिर फोड़ दे। ऐसी दशा में धूर्त–पाखण्डियों की पौ–बारह तो होनी ही है। **'हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा'** कहावत चरितार्थ करते नए–नए बाबा सनातन धर्म संस्कृति के क्षितिज पर टिमटिमाने लगते हैं और देखते ही देखते सम्पूर्ण भक्त रूपी नभमण्डल पर छा जाते हैं। जब भीड़ बढ़ती है तो इनकी नाक में नकेल डालने वाले हमारे नेतागण भी इनके चरणों में दण्डवत् देखे जाते हैं। जब नेता दण्डवत् करते हैं तो राज्याधिकारी क्यों बैर मोल लें। वे भी बाबाजी की कृपा वृष्टि की बहती गंगा में स्नान करने लगते हैं। स्थिति यह हो जाती है कि **'सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का?'** किन्तु परमात्मा तो न्यायकारी

है। ये लोग प्रारब्ध के शुभ कर्मों के उदय से पूजे जाते हैं तो शुभ कर्मों के समापन और अशुभ कर्मों के उदय से विराट साम्राज्य वाले अनेक बाबाजी जेल की सलाखों के सीछे पहुँच चुके हैं। कहा भी गया है कि- **'अति का अन्त होता है।'**

विगत कुछ समय से एक ऐसा ही पाखण्डी बाबाजी सनातन धर्म नभमण्डल पर चमक रहा है। अज्ञानी लोग तो इसे शास्त्री कहते हैं किन्तु इसका जो बड़बोलापन और मसखरापन है इस कारण से हम इसे केवल गधा ही कह सकते हैं। वैसे तो यह कुछ तो भी बोलता रहता है और कब क्या बोल जाये इसका कोई विश्वास नहीं। किन्तु पिछले दिनों इसने तीन बातें प्रमुख रूप से कही हैं जो विचारणीय हैं। वे इस प्रकार हैं-

१. इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने की इसने जोरदार वकालत की है।

२. महिलाएँ गायत्री मन्त्र का जाप नहीं कर सकती क्योंकि उनका यज्ञोपवीत नहीं होता।

३. महिलाओं के गले में मंगलसूत्र और माँग में सिन्दूर देखकर पता लग जाता है कि प्लाट की रजिस्ट्री हो चुकी है।

वैसे तो गधों के रेंकने का कोई विचार नहीं किया जाता किन्तु इन गधों के रेंकने का वर्तमान में अज्ञानी लोगों पर व्यापक प्रभाव होता है और इस गधे द्वारा कही गई बातें राष्ट्र तथा सनातन धर्म संस्कृति के सन्दर्भ में है और वैसे भी ये गधे ही सही किन्तु सनातन के प्रवक्ता बन बैठे हैं अथवा मान लिये गये हैं। इसलिए विचारण आवश्यक है।

आइये! इस गधे की इन बातों पर विचार करते हैं।

सर्वप्रथम तो कोई इस गधे से पूछे कि तू तो शास्त्री किया हुआ है। धर्म का ठेकेदार, हिन्दुत्व का ब्राण्ड एम्बेसेडर बना हुआ है। कम से कम इतना तो बता दें कि हिन्दू शब्द किस वेद–शास्त्र में है?

वही हिन्दू राष्ट्र बनाएगा, जन्मना जाति का ब्राह्मणवाद वाला, जिसमें बिना वेद शास्त्रों को पढ़ें दुबे जी, चौबे जी, पांडे जी, छब्बे जी, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, अंतर्वेदी केवल ब्राह्मण माता–पिता के यहाँ जन्म लेने से बनेंगे। जिनका कोई आचरण–व्यवहार, कर्म, ज्ञान ब्राह्मण का नहीं होगा?

जिसमें महिलाओं और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं होगा और अगर महिला और शूद्रों के कान पर वेद वाक्य पड़ जाए तो गर्म पिघला हुआ शीशा डाल दिया जाएगा?

जहाँ ढोल, गंवार, शूद्र और नारी ताड़न के अधिकारी होंगे?

जहाँ एक सच्चिदानन्द स्वरूप,अजन्मा, निराकार, न्यायकारी, दयालु, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नित्य, पवित्र, अजर, अमर परमपिता परमेश्वर की मूर्ति बनाकर अपनी दुकानदारी चलाई जाएगी और स्वर्ग नरक कर्मों से नहीं धन–दौलत से प्राप्त किए जाएँगे?

जिसमें श्री कृष्ण जी जैसे योगी, ब्रह्मचारी, सच्चरित्र महापुरुषों को गोपियों और राधा से रासलीला करने वाला, माखन चुराने वाला, सार्वजनिक स्थान पर नग्न नहाती हुई महिलाओं के वस्त्र ले जाने वाला जैसे निकृष्ट, पतित कर्म करने वाला बताया जाएगा और उनके ऐसे निकृष्ट पतित कर्म के भजन बनाए जा कर जन–जन गाएँगे और उस पर नृत्य करेंगे।

जिसमें जातिवाद के नाम पर हमारे अपने बँधुओं को अछूत माना जाएगा, उनके शिक्षा–दीक्षा के समस्त द्वार बन्द कर उनका शोषण–उत्पीड़न किया जाएगा। मन्दिर आदि स्थानों पर उनका प्रवेश वर्जित होगा। उनकी सन्तान प्रतिभाशाली होने पर भी उनके शिक्षा–दीक्षा के द्वार बंद होंगे। उनसे बेगार करवाई जाएगी, उनका–शोषण उत्पीड़न किया जाएगा। उनका हमारे पास बैठना तो दूर उनकी परछाई भी हमें अपवित्र करेगी। हाँ, उनके विधर्मी मतों को स्वीकार कर लेने पर वह हमारे साथ सम्मानपूर्वक बैठकर भोजन करने के अधिकारी होंगे? ऐसे ही कुछ कारणों से विधर्मी मत–पंथ इस देश में फले–फूले हैं।

जिसमें उस मातृशक्ति जिसे शास्त्रों में पूज्या बताया जाकर जहाँ उसकी पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते हैं। जिसे माता कहा जाता है क्योंकि वह निर्माण करने वाली होती है। जो एक नहीं दो कुलों का उद्धार करती है।

उसी मातृशक्ति के साथ- अबोध बालिकाओं का विवाह किया जाएगा, विधवा विवाह अधर्म होगा और विधवा का मुँह देखना अन्य लोगो की तो छोड़ो पिता–भाई के लिए भी अपशकुन माना जाएगा इससे बचने हेतु उसे पति के मरने पर अफीम खिलाकर जीवित जला दिया जाएगा (सती प्रथा) या फिर उसे वृन्दावन आदि ऐसे स्थलों पर दो रोटी के लिए पण्डों–मुस्टण्डों के निर्भर छोड़ आया जाएगा, देवदासी प्रथा जैसे अनेक अधर्मकारी, अमानवीय अत्याचारों से पीड़ित किया जाएगा जो देव दयानन्द के अवतरण से पूर्व किए जाते थे। उसके शिक्षा–दीक्षा के समस्त द्वार बन्द कर उसे पाँव की जूती बना दिया जाएगा?

क्या–क्या गिनाऊँ मैं तुम्हें, जो इस विश्वगुरु पर चक्रवर्ती सम्राटों की धरा पर देव दयानन्द के अवतरण से पूर्व किया जाता था वह भी धर्म के नाम पर। क्योंकि यह गधा यह भी कहता है कि महिलाएँ गायत्री मन्त्र नहीं बोल सकती क्योंकि उन्हें यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार नहीं होता।

जब महिलाएँ गायत्री मन्त्र नहीं बोल सकती, जब महिलाएँ यज्ञोपवीत धारण नहीं कर सकती तो फिर वे अन्य वेद–शास्त्र भी कैसे पढ़ सकती है? जबकि इस देश में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, घोषा, आपाला जैसी अनेक मन्त्रद्रष्टा ऋषिकाएँ हुई हैं। एक बात और है कि गायत्री मन्त्र तो परमात्मा से सद्बुद्धि की प्रार्थना का मन्त्र है तो प्रश्न उठता है कि क्या महिलाओं को सद्बुद्धि की आवश्यकता नहीं है? क्या उन्हें मूर्ख ही रहना चाहिए और अगर वह मूर्ख होंगी तो अपनी सन्तान का निर्माण कैसे कर पायेंगी?

इस गधे की भी कोई माँ–बहन तो होगी और भविष्य में पत्नी, बेटी भी होगी। क्या यह दृष्टिकोण इसका उनके साथ भी यही होगा?

इस गधे का कहना है कि महिलाओं के गले में मंगल सूत्र और माँग के सिन्दूर से पता चल जाता है कि प्लाट की रजिस्ट्री हो चुकी है। माँग में सिन्दूर और गले में मंगलसूत्र न होने पर पता चल जाता है कि प्लाट खाली है।

ऐसी बातें करने वाले की परिपक्वता और ज्ञान का परिचय स्वत: प्राप्त हो जाता है। इस गधे को तनिक तो विचार करना चाहिए कि मातृशक्ति क्रय–विक्रय की वस्तु नहीं है। उसकी तुलना क्रय– विक्रय की वस्तु से कैसे की जा सकती है? कोई भी भू–खण्ड हो वह तो अनेक बार क्रय–विक्रय किया जाता है। उसका कोई एक स्थायी स्वामी प्रथम व अन्तिम तो होता नहीं। क्या मातृशक्ति के साथ भी ऐसा ही होता है? सामान्य बुद्धि का व्यक्ति भी इन बातों को अच्छे से जानता–समझता है और जिस प्रकार यह गधा कुछ का कुछ कहता रहता है, ऐसा तो सामान्य व्यक्ति भी नहीं बोलता। प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब इस तरह के गधे धर्माधिकारी होंगे तो उस धर्म की और उसके अनुयाइयों की दशा–दिशा क्या होगी? **(शेष भाग पृष्ठ ३३ पर)**

गायत्री समस्त मनुष्य (स्त्री-पुरुष) जाति के लिए

● आचार्य राहुल देव
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

ऋषिः – कण्वो घौरः, **देवता** – मरूतः, **छन्दः** – यवमध्याविराड्गायत्री, **स्वरः** – षड्जः।

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्यइव ततनः। गाय गायत्रमुक्थ्यम्।।

–ऋग्वेद १/३८/१४

पद पाठः – मिमीहि। श्लोकम्। आस्ये। पर्जन्यः इव। ततनः। गाय। गायत्रम्। उक्थ्यम्॥

अन्वयः – हे विद्वान् मनुष्य! त्वमास्ये श्लोकं मिमीहि तं च पर्जन्य इव ततनः। उक्थ्यं गायत्रं च गाय॥

पद्यार्थः – हे विद्वान् मनुष्य ! तू **आस्ये** = अपने मुख में **श्लोकम्** = वेद की शिक्षा से युक्त वाणी को **मिमीहि** = निर्माण कर और उस वाणी को **पर्जन्य इव** = जैसे मेघ वृष्टि करता है वैसे **ततनः** = फैला और **उक्थ्यम्** = कहने योग्य **गायत्रम्** = गायत्री छन्दवाले स्त्रोतरूप वैदिक सूक्तों को **गाय** = पढ़ तथा पढ़ा।

भावार्थः – इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वानों से विद्या पढ़े हुए मनुष्यों ! तुम लोगों को उचित है कि सब प्रकार प्रयत्न के साथ वेद विद्या से शिक्षा की हुई वेदवाणी से वाणी के वेत्ता के समान वक्ता होकर वायु आदि पदार्थों के गुणों की स्तुति तथा उपदेश किया करो।

मन्त्र की मुख्य बातें

१) अपने मुख से वेद मन्त्र का अभ्यास कर।
२) वेद का निरन्तर अध्ययन कर।
३) बादल के समान वेद विद्या की वृष्टि कर।
४) वेद विद्या को संसार भर में प्रसारित कर।
५) जो गायत्री आदि छन्द है उनका गान किया कर।
६) लोक कल्याण के लिये वेदामृत का उपदेश किया कर।

व्याख्याः – इस मन्त्र में वेद को पढ़ने–पढ़ाने अभ्यास करने–कराने गायत्र्यादि छन्दों का सस्वर पाठ गायन आदि करने का स्पष्ट उल्लेख है। मन्त्र में एक विशेषता है इसमें उपमालंकार के द्वारा यह बताया गया है कि जैसे बादल सर्वत्र वृष्टि करता है। वैसे ही मनुष्य भी वेदाध्ययन करके परिपक्व होकर मानवता के कल्याण के लिये वेदामृत की सर्वत्र वर्षा करे।

यह मन्त्र भी गायत्री छन्द वाला होने से इसके तीन पद है। समझाने की दृष्टि से यह इस प्रकार से तीन पदों में अन्वयीकृत होता है –

१) आस्ये श्लोकं मिमीहि
२) पर्जन्य इव ततनः
३) उक्थ्यम् गायत्रम् गाय

मन्त्र में प्रथम पद है –

आस्ये श्लोकं मिमीहि = हे मनुष्य (विद्यार्थी)! तू अपने मुख में वेद वाणी का निर्माण (उच्चारण) कर। अर्थात् वेद का पठन कर। पहले मन्त्रोच्चारण का अभ्यास कर। वेद के सस्वर पाठ को और उच्चारण के विभिन्न स्थानों को बताने के लिये ही यहाँ पर आस्ये शब्द का प्रयोग हुआ है। **तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्।** यह महर्षि पाणिनी के अष्टाध्यायी का सूत्र है जो मुख में प्रयत्न विशेष के द्वारा वर्णोंच्चारण के महत्व को बताता है। वेद की मन्त्र संहिताओं में उच्चारण, प्रयत्न, स्वर का बहुत विशेष महत्व है। क्योंकि उच्चारण, प्रयत्न और स्वर भेद से अर्थ भेद हो जाता है। **रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्** महर्षि पतञ्जलि ने व्याकरण क्यों पढ़ना चाहिए इसके कारणों में वेद की रक्षा के लिये व्याकरण पढ़ने को मुख्य प्रयोजन बताया है। वेदमन्त्र की ऋचाओं पर हमें विभिन्न अक्षरों पर खड़ी रेखा और नीचे सपाट रेखा दिखाई देती है। ये उच्चारण भेदों को दर्शाती है। व्याकरण में उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ये तीन काल के आधार पर स्वरों के उच्चारण के लिये प्रसिद्ध है। ऊँचा बोलने में उदात्त **(उच्चैरुदात्तः)** नीचा बोलने में अनुदात्त **(नीचैरनुदात्तः)** और सम बोलने मे स्वरित **(समाहारः स्वरितः)** है। इससे मन्त्र के अर्थ पर न केवल प्रभाव पड़ता है अपितु इसमें किसी प्रकार शब्द को घटाने और जोड़ने से भी रक्षा होती है।

मन्त्र में दूसरा पद है –

पर्जन्य इव ततनः = वृष्टि के समान चारों तरफ फैला, विस्तार कर। हे मनुष्य! तू वेद का पठन–पाठन और अभ्यास करके इसे मेघ (बादल) के समान सब तरफ इसकी वृष्टि कर अर्थात् वेद का उपदेश सबके लिये कर। जैसे मेघ वृष्टि करने में भेदभाव नहीं करता है सब ओर पेड़ पौधे, वृक्ष वनस्पति, सब्जी–फसलों–फलों के वृक्ष, हरी घास के मैदान, मरुभूमि, सुखीभूमि, तालाब, कुओं और समुद्र में सब तरफ बरसता है। वैसे ही वेद का उपदेश सब जगत् के मनुष्यों के लिये है इसमें स्त्री–पुरुष, वर्ण, जाति, देश, खण्ड, भू–भाग, काला–गोरा, ऊँचा–नीचा कोई भेद नहीं है। सबके लिये परमात्मा ने वेद प्रदान किये हैं। परस्पर गुरु–शिष्य की परम्परा के द्वारा, स्वाध्याय, मनन, कथा, यज्ञादि पूर्वक इसके पठन–पाठन–रक्षण और विस्तार के लिये इस मन्त्र में स्पष्ट रुप से उल्लेख किया गया है।

मन्त्र में तीसरा पद है –

उक्थ्यम् गायत्रम् गाय = कहने योग्य गायत्री आदि छन्दों को पढ़। यहाँ पर वेदमन्त्र में गायत्री आदि छन्दों को गायन करने की बात कही गई है। परन्तु इस मन्त्र को कई बार टटोलने के बाद भी यह नहीं लग रहा है कि इस मन्त्र में केवल पुरुषों या ब्राह्मणों को ही गायत्री आदि बोलने के लिये कहा गया हो। यहाँ पर तो स्त्री–पुरुष मनुष्य मात्र को ही कहा गया है कि हे मनुष्य! तू पहले क्रम से शिक्षा, व्याकरण आदि पढ़। फिर वेदों को इसी रीति से पढ़ और पढ़ा अर्थात् निरन्तर अभ्यास कर तत्पश्चात् इसका अन्य मनुष्यों के उपकार के लिये मेघ के समान सर्वत्र इसकी वृष्टि कर जिससे मनुष्यों का ज्ञानवर्धन हो। जिससे वह इस पढ़ने योग्य और कहने योग्य गायत्री आदि ऋचाओं को पढ़े और गाये। इस मन्त्र के प्रमाण से निर्विवाद रुप से यह

प्रमाणित हो जाता है कि वेद में गायत्री आदि छन्द में बने हुये सभी मन्त्रों को जैसे **ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं...** आदि मन्त्र है वह सबके द्वारा गाने, जपने, पढ़ने और मनन करने योग्य है। चारों वेदों में कहीं पर भी ऐसा नहीं लिखा है कि गायत्री मन्त्र स्त्री या महिला न पढ़े। अपितु अनेक मन्त्रों में स्पष्ट रुप से स्त्री को वेद मन्त्र पढ़ने-पढ़ाने, यज्ञोपवीत धारण करने-करवाने, यज्ञ करने-करवाने और यज्ञ में ब्रह्मा बनने का विधान अनेक स्थानों पर आया है। कतिपय प्रमाण यहाँ पर मन्त्र संख्या सहित दिये जा रहें हैं -

अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ॥

- ऋग्वेद ८/३३/१९

यथेमाँवाचङ्कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो...

- यजुर्वेद २६/२

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान्ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति॥

- अथर्ववेद ११/५/१८

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया ॥

-ऋग्वेद १०/१५९/२

इस लेख के द्वारा हमने समाज में फैली हुई उस घोर असामाजिक धारणा जो कि स्त्रियों को गायत्री मन्त्र पढ़ने वा जप करने का अधिकार से वंचित करने के सम्बन्ध में हैं। उसे पूरी तरीके से भ्रान्त मूर्खता और स्वार्थ से प्रेरित तथा अविद्यादि दोष के कारण प्रचारित मान्यता भर है, ऐसा जाना है। क्योंकि **वेद में और आर्ष ग्रन्थों में स्त्री को वेद पढ़ने, यज्ञ करने और विधिवत् सन्ध्योपासना और गायत्र्यादि जपने का विधान है।** मन्त्र, उच्चारण दोष से अशुद्ध होते हैं। स्त्री मन्त्रोच्चारण में पुरुष से भी शुद्ध और सुकण्ठा होती है। स्त्री स्वभाव से अपवित्र नहीं होती अपितु स्त्री-पुरुष दोनों ही व्यवहार से अपवित्र होते रहते हैं। स्त्रियों को स्वाभाविक रुप से सदा के लिये अपवित्र मानने पर उसके हाथ से बना भोजन, साफ किये हुये वस्त्र, उत्पन्न हुई सन्तान सब कुछ अपवित्र सिद्ध होंगे। फिर **पुरुष उसी स्त्री से उत्पन्न होकर पवित्र कैसे हुआ?** अतः स्त्री स्वभाव से अपवित्र या सदा के लिये अपवित्र या शापित नहीं है। स्त्री से ही विद्वान्, वीर, योगी, ऋषि-महर्षि उत्पन्न होते हैं। अतः माँ, बहिन, पुत्री, पत्नी, वधू, विधवा आदि विभिन्न स्त्री रुपों में उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार है। आशा है महिलाएँ अधिक मुखर होकर इस बात का प्रचार करेंगी और गायत्री मन्त्र बोलते हुये स्वयं का और बेटियों का वीडियो सोशियल मीडिया पर प्रचारित-प्रसारित करेंगी। ■

मीडिया भगवान विश्वकर्मा की क्यों अनदेखी कर रहा है?

विश्वकर्मा पूजन दिवस विशेष

● **डॉ. लक्ष्मी निधि**
'निधि विहार', १७२, न्यू बारादरी, ह्यूम पाइप रोड
नया कोर्ट रोड, पो. साकची, जमशेदपुर-१ (झारखंड)
चलभाष : ९९३४५२१९५४

१७ सितम्बर देश के बड़े भाग में विश्वकर्मा पूजन दिवस के रूप में मनाया जाता है। उस दिन बिहार-झारखण्ड तथा कुछ अन्य राज्यों में भी कल-कारखाने बन्द कर दिये जाते हैं। प्रिन्टिंग प्रेस भी बन्द कर दिये जाते हैं जिसके कारण १८ सितम्बर को अखबार बाजार में नहीं आते।

मगर हैरत की बात है, जिस विश्वकर्मा पूजा के नाम पर अखबार बन्द रहते हैं, उन अखबारों में विश्वकर्मा भगवान के ऊपर कोई लेख, कोई कविता या कोई सामग्री नहीं छपते।

विश्वकर्मा शिल्पकला, विज्ञान के देवता हैं। उन्होंने पंच पदार्थों को शिल्प कला तथा विज्ञान की बदौलत मानवीय आवश्यकतानुसार उपयोगी बनाया। लोहा, लकड़ी, सोना, पत्थर और ताम्बा ये मूल पदार्थ हैं जिनको भगवान विश्वकर्मा ने विकसित किया तथा पाषाण युग को आधुनिक युग में लाये। वनमानुष से आधुनिक मानव के रूप में मनुष्य को उन्नत बनाया।

मानव जाति की सभ्यता और संस्कृति के विकास में लोहा, लकड़ी, सोना, पत्थर तथा ताम्बा का कितना महत्व है, इसको जानने के लिए आज इन पदार्थों को समाज से हटाकर समाज की कल्पना करें तो यह सारा संसार बंजर और वीरान हो जाएगा। पृथ्वी पर जो कुछ दिखाई पड़ता है वह सब भगवान विश्वकर्मा की देन है। इसे सभी स्वीकार करते हैं। मगर, उस हिसाब से यदि विश्वकर्मा भगवान के बारे में विचार किया गया होता तो विश्वकर्मा पूजा या विश्वकर्मा जयन्ती के दिन भारत का बड़ा त्योहार होता। उस दिन सारे अखबार तथा मैगजीन विश्वकर्मा सम्बन्धी रचनाओं से भरे होते।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जिस कला-कौशल को राष्ट्रीय विकास तथा राष्ट्रीय स्वावलम्बन के लिए जोड़ा है, वह विश्वकर्मा कला-कौशल ही है। विश्वकर्मा कला-कौशल से अलग कोई कला-कौशल नहीं है। सुई से लेकर चन्द्रलोक तक जाने वाले चन्द्रयान तक सभी विश्वकर्मा कला-कौशल की देन है। इसीलिए सभी विश्वकर्मा संगठनों को चाहिए कि अपने समाज, संगठन तथा भगवान विश्वकर्मा के अनुसन्धानों तथा उपलब्धियों को विश्वकर्मा से जोड़ें ताकि भगवान विश्वकर्मा विश्व देव के रूप में पूजे जाएँ।

विश्वकर्मा के पौराणिक प्रामाणिक इतिहास उनके अनुसन्धान एवं उपलब्धियों के प्रामाणिक साहित्य सृजन तथा सरकार के समक्ष विश्वकर्मा भगवान के औद्योगिक, राजनीतिक एवं अस्त्र-शस्त्र और वायुयान के विश्वकर्मा तकनीक की खोज करने के लिए कोई शोध संस्थान बनाने के लिए आवाज उठाने वाला कोई विश्वकर्मा संगठन नहीं है। जिसके कारण विश्वकर्मा की महिमा देश और समाज पूर्णरूपेण परिचित नहीं हो सका। इस मुद्दे पर विश्वकर्मा संगठनों को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। ■

आर्य समाज की शिथिलता का दुष्परिणाम कलुषित अन्तःकरण वाले विषधर फूँफकार रहे

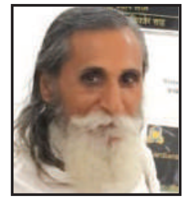

● आचार्य सुशीलकान्त
संस्थापक/संचालक : आर्ष गुरुकुल, दयानन्द वाणी जरैल प्रखण्ड बेनीपट्टी, जि. मधुबनी (बिहार)
चलभाष : ८८०९८५२१८७

आर्य समाज के नियमों के विरुद्ध आर्य समाज के विद्वानों का व्यवहार पाखंडियों को पाखण्ड फैलाने का अवसर प्रदान कर रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अत्यन्त विकट परिस्थितियों में भी सत्य को सामने रख कर धैर्यपूर्वक हमारे उत्थान के लिए काम किया। थियोसोफिकल सोसाइटी वालों के पाखण्ड का पता चलते ही उन्होंने उनसे सम्बंध विच्छेद कर लिया। उन्होंने गुरुकुल भी खोले परन्तु जैसे ही पता चला कि इन गुरुकुलों के शिक्षकों के द्वारा दी जा रही पाखण्डी शिक्षाओं से समाज का भला नहीं होने वाला है तो उन्होंने उन्हें तुरन्त बंद भी करवा दिया।

अपने ऋषि के उक्त तप के विरुद्ध पाखंडियों के पाखण्ड में शामिल होकर या उस पाखण्ड के समर्थन में लेख लिख कर हमारे विद्वानों ने उन पाखंडियों को इतना बल प्रदान कर दिया कि खुले मंच पर पाखंडी धीरेन्द्र शास्त्री महिलाओं को गायत्री मन्त्र जपने के अधिकार से वंचित करने का फरमान जारी करता है।

ऐ पाखंडी धीरेन्द्र शास्त्री! तुम्हें धिक्कार है। जिस माँ ने तुम्हारे जीवन का निर्माण किया तुम उसे ही परमात्मा के आदेश के पालन करने से मना कर रहे हो? परमात्मा ने जो कुछ भी बनाया है उसका प्रयोग सबके लिए बराबर है। जैसे, पानी, वायु, अग्नि, मिट्टी, आदि-आदि। फिर परमात्मा के बनाए वेद पर हमारी माताओं का अधिकार क्यों नहीं? **ऐ मूर्ख धीरेन्द्र! तुम्हारे जैसे पाखंडियों के कारण ही महात्मा गौतम बुद्ध नास्तिक बन गए।** तुम पाखंडियों ने कहा कि **'वैदिक हिंसा हिंसा न भवति'** तो बुद्ध ने कहा कि हम तुम्हारे इस वेद को नहीं मानते। जब तुम्हारे जैसे पाखंडियों ने यह कहा कि क्यों वेद को नहीं मानते यह तो परमात्मा की वाणी है? तो उन्होंने कहा **'मैं तुम्हारे उस नादान परमात्मा को भी नहीं मानता जिन्हें अपने ही बनाए जीवों पर कोई दया नहीं।'**

सबसे बड़ा दुर्भाग्य हमारे देश के उन कर्णधारों का है जिसके शासन में रहते हुए भी देश में जान बूझ कर बड़े-बड़े मंच लगाकर हिंदू, मुस्लिम ईसाई आदि ये सभी पाखंडी दिन रात पाखण्ड फैला रहे हैं और ये देश के सभी कर्णधार पाखण्ड को ही धर्म का जामा पहना कर पाखंडियों के विरुद्ध कुर्सी के लोभ में कुछ भी नहीं कह पा रहे हैं।

इन कर्णधारों को इतनी समझ भी नहीं है कि ईसाइयों की चंगाई सभा में जाने, मुसलमानों के मजार पर जाने और हिंदुओं के हनुमान आदि देवों की भक्ति करने से ही यदि बीमारी दूर हो जाती है, सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है तो फिर हम अस्पताल क्यों बनवाते हैं? अन्य व्यवस्था क्यों करते हैं? कुछ मत करो। छोड़ दो उन सभी को अपने हनुमान, ईसामसीह और मुहम्मद आदि के सामर्थ्य पर?

ये मीडिया वाले भी कितनी मूर्खता करते हैं? जब इनके पास इतने अच्छे-अच्छे एंकर हैं तो फिर पाखंडियों के पाखण्ड का पर्दाफाश ये क्यों नहीं कर सकते? लेकिन जब ये पर्दाफाश कर देंगे तो फिर इनको मसाला कहाँ से मिलेगा? यही सोचकर ये सभी मीडिया कर्मी अपनी- अपनी दुकान चला रहे हैं।

ऐ आर्य समाजियों! आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के शिष्य हैं। आपके ऋषि ने इसी पाखण्ड के विरोध में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पण कर दिया। उन्होंने आपको पाखण्ड से बाहर निकालने के हित सत्रह बार जहर पीया। क्या आप धीरेन्द्र शास्त्री जैसे पाखंडियों के पाखण्ड में सम्मिलित होकर महर्षि के बलिदान का कर्ज चुका रहे हैं?

आपसे निवेदन है कि आप सभी आर्य समाज के कर्णधार खड़े हो जाइए और महिला को वह सब अधिकार है जो पुरुषों को है इस हेतु उस पाखंडी को जबाव दीजिए। आप किसी भी प्रकार के लोभ में फंस कर किसी के भी पाखण्ड का समर्थन मत करिए। यही आपसे करबद्ध प्रार्थना है। ■

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

गतांक पृष्ठ २३ से आगे

● ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

२५. अनुभ्रमोच्छेदन (सन् १८८०)

'भ्रमोच्छेदन' के उत्तर में राजा शिवप्रसाद सितार हिन्द ने **'द्वितीय निवेदन'** नामक पुस्तक प्रकाशित की। इस द्वितीय निवेदन के उत्तर में स्वामी जी ने **'अनुभ्रमोच्छेदन ग्रन्थ'** लिखा। इसका हस्तलेख परोपकारी सभा अजमेर के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। उस पर अनेक स्थानों पर ऋषि दयानन्द के हाथ का संशोधन भी विद्यमान है। एक पत्र में ऋषि ने लिखा है- **''जो दूसरा निवेदन बाबू शिवप्रसाद ने छापा है। इसका उत्तर भी तैयार हो गया है, सो पं. ज्वालादत्त के नाम से जारी किया जाएगा।''** स्वामीजी के नाम का इस ग्रन्थ पर न होना भी कोई पहेली नहीं है। राजा शिव प्रसाद के संस्कृत से अनभिज्ञ और वैदिक विषयों में अधिक जानकारी न होने के कारण स्वामी विशुद्धानन्द अथवा पं. बाल शास्त्री के हस्ताक्षर करवाकर लायें। द्वितीय निवेदन पर क्योंकि इन महानुभावों के हस्ताक्षर नहीं थे, अतः स्वामीजी ने उत्तर तो दे दिया पर अपना नाम नहीं दिया। ■ **(क्रमशः)**

पाप से मुक्ति के नाम पर लूट

भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल

● **डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'**

चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

(गतांक पृष्ठ २४ से आगे)

'महाभारत' काल के बाद अब तक महर्षि दयानन्द से बड़ा सत्य का गवेषक कोई नहीं हुआ। ऋषि घोषणा करते हैं, **''जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।''** वही विज्ञान की भी यथार्थ परिभाषा है। विद्या के प्रति ऋषि का अनुराग उनकी पुस्तक **'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका'** में उनके इन शब्दों से परिलक्षित होता है, **''जितने ब्रह्माण्ड में उत्तम पदार्थ हैं, उनकी प्राप्ति से जितना सुख होता है सो सुख विद्या प्राप्ति से होने वाले सुख से हजारवें अंश के भी समतुल्य नहीं हो सकता।''** जहाँ ऐसे ऋषियों–महर्षियों की अवमानना की जाए तो उस स्थिति में परिणाम क्या निकलेगा, मनु महाराज ने अति संक्षेप में बतला दिया है :–

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पूज्यांच व्यतिक्रमः।
त्रीणिः तत्र भविष्यन्ति रोगं दुर्भिक्षं भयम्।।

अर्थात् जिस समाज में, जिस राष्ट्र में अपूज्यों (गुरुघंटालों) की पूजा होती हो तथा पूज्य व्यक्तियों (आध्यात्मिक, ब्रह्मचारी, सद्गुणी) का निरादर होता हो वहाँ रोग, अकाल तथा भय तीनों रोग फैलते हैं। देवभूमि भारत क्या इन रोगों से मुक्त हैं? यदि नहीं तो इसका कारण यही है कि सर्वत्र सत्ता और धन की पूजा होती है जो मठाधीशों के आधीन है। **अर्थस्य पुरुषो: दासो–** भीष्म ने ये शब्द तब कहे थे जब भरी सभा में रजस्वला द्रौपदी का चीरहरण भरे दरबार में आचार्य द्रोण और गुरु कृपाचार्य की उपस्थिति में हुआ था। मनुष्य जब अर्थ का अर्थात् धन व सत्ता का दास हो जाता है तो उसकी वीरता, विद्वत्ता, क्षमता सब पर ताला लग जाता है। मठाधीशों व गुरुघंटालों ने अपनी सेना इतनी बढ़ा ली है कि सरकार और प्रशासन उनके खुले अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार पर हाथ डालने से घबराता है। डेरा सच्चा सौदा के प्रमुख बाबा राम रहीम सिंह ने अनेक अबलाओं से बलात्कार किया, अनेक लोगों की हत्याएँ कराई, चेला–चेली मूँडने के लिए सिखों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह महाराज के रस्मो–रिवाज की नकल कर सिखों को आहत किया, यहाँ तक कि अपने ही डेरे के अनुयायियों (४०० युवाओं) को नपुंसक बनाने का भी इस पर आरोप है लेकिन आज तक उसे सजा नहीं हुई, (सजा से पूर्व लिखा गया लेख है। सजा होने के उपरान्त भी जब–तब पैरोल पर बाहर आने के समाचार प्राप्त होते हैं। –सम्पादक) उसका बाल बाँका भी नहीं हुआ। कारण, वह अपने भक्तों की कड़ी सुरक्षा में है जिसे न पुलिस, न सीबीआई भेद सकती है। राजनीतिज्ञों का इसके सिर पर हाथ है। अत: पुलिस और प्रशासन का इसे डर कैसे हो सकता है? जब–जब किसी गुरुघंटाल के विरोध में किसी ने भी आवाज उठानी चाही, तब–तब इन गुरुघंटालों ने अपने लाखों अनुयाइयों को सड़कों पर उतारकर उनसे सरकार व प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करा दिया और वोट बैंक के सौदागर सकपका कर रह गए। अत: सरकार व प्रशासन तब ही इनके विरोध में सक्रिय कार्यवाही कर सकती है जब जनता का उन्हें समर्थन भरपूर मात्रा में मिले इसलिए जनता जनार्दन को अपने देश व देश के भविष्य छोटे–छोटे नौनिहालों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा, तभी सरकार व प्रशासन इन सद्गुरुओं का रूप धरे काले कारनामों को अंजाम देने वाले बाजीगरों को उनके सही अंजाम तक पहुँचा सकेगी।

वर्तमान में इन ढोंगी बाबाओं या सद्गुरुओं की संख्या व उनके मत और सम्प्रदाय यदि टिड्डी दल की भाँति इसी प्रकार बढ़ते रहे या जिस तेजी से बढ़ रहे हैं उससे तो देश की सामाजिक, धार्मिक व राष्ट्रीय एकता तीनों पर बहुत बड़ा खतरा मँडरा रहा है। इस खतरे को दूर करने के लिए हमें जनजागृति पैदा करनी होगी और यही काम आर्य समाज वर्षों से करता चला आ रहा है। लेकिन जब आर्य समाज के द्वारा इनके मतों का खण्डन किया जाता है तो बहुत से नासमझ लोग ये कहते हैं कि सभी को अपनी आस्था चुनने का अधिकार है, सबको अपने विचारों का प्रचार–प्रसार करने की स्वतन्त्रता है। तो जरा विचार करके बताइये कि क्या आर्यों को अपने विचार रखने का अधिकार नहीं है? वह भी तो इनके मतों के द्वारा किये जा रहे अनर्गल विचारों के त्याग करने–कराने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है ताकि समाज की कोई हानि न हो। इसलिए वैदिक विचारधारा को आप तक पहुँचाने की ही कोशिश में लगा है। क्या गलत बातों से सावधान करना, दुष्कृत्यों के विरोध में आवाज उठाना विचार नहीं है? जरा बताओ तो सही कि यदि मनुष्य जीवन पाकर भी हम गलत और सही का भेद ही नहीं कर पाएँ तो हममें और पशुओं में अन्तर ही क्या रह जाता है? और यदि रामपाल दास के दुष्कृत्यों के विरोध में आर्य समाज ने आवाज बुलन्द न की होती, आन्दोलन न किया होता तो शायद आज भी कबीरपन्थी रामपाल दास की लूट व सामाजिक शोषण को बढ़ावा मिलता ही रहता एवं भारतीय संस्कृति का चीरहरण यूँ ही होता रहता। आर्य समाज किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाने का काम नहीं करता बल्कि गलत मान्यताओं का ही खण्डन करता है। **अतः सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग तभी हो सकता है जब किसी भी विषय को निष्पक्ष भाव से हम ठीक–ठीक जान लेंगे।** जिसके लिए सत्य–सनातन वैदिक विचारधारा को हृदय से अंगीकार करना ही पड़ेगा क्योंकि ज्ञान के अभाव में मनुष्य वास्तविकता का उसी प्रकार आभास नहीं कर पाता जिस प्रकार दिन में सूर्य निकलने पर चहुँओर प्रकाश होते हुए भी उल्लू व अन्धे को दिखाई नहीं देता। अज्ञानता के कारण मनुष्य उपहास का ही पात्र बनता है। इसलिए यदि हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को इन सद्गुरुओं के प्रकोप से बचाना है तो इनके विषय में सम्पूर्ण जानकारी हमें रखनी होगी और जानना होगा कि सच्चे गुरु के लक्षण क्या हैं? या सच्चा गुरु कैसा होता है? ■ **(क्रमशः आगामी अंक में)**

योगेश्वर श्रीकृष्ण अद्वितीय महापुरुष

● मनमोहनकुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखण्ड
चलभाष : ९४१२९८५१२१

मनुष्य का जन्म आत्मा की उन्नति के लिए होता है। आत्मा की उन्नति में गौण रूप से शारीरिक उन्नति भी सम्मिलित है। यदि शरीर पुष्ट और बलवान न हो तो आत्मा की उन्नति नहीं हो सकती। आत्मा के अन्त:करण में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार यह चार अवयव व उपकरण होते हैं। इनकी उन्नति भी आत्मा की उन्नति के लिए आवश्यक है। समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि वेदज्ञान से मनुष्य ईश्वर, आत्मा व सांसारिक ज्ञान को प्राप्त होकर तथा तदनुकूल आचरण करने से उसकी शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होती है। श्रीकृष्ण जी सच्चे वेदानुयायी एवं ईश्वरभक्त थे। वे सर्वव्यापक एवं सर्वज्ञ नहीं थे अपितु माता–पिता से जन्म होने तथा शरीर छोड़ने के कारण वेद सिद्धान्तों के अनुसार उनका श्रेष्ठ मनुष्य व ऋषियों के समान जीवात्मा होना ही निश्चित होता है। श्रीकृष्ण जी का जीवन संसार के सभी लोगों के लिए प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। उनके जीवन, कार्यों एवं शिक्षाओं का अध्ययन करने एवं उनके अनुरूप स्वयं को बनाने से मनुष्य जीवन सहित देश व समाज की रक्षा, उन्नति व उत्कर्ष हो सकता है। महाभारत के बाद श्रीकृष्ण जी से मिलते–जुलते गुणों वाले कुछ अन्य महापुरुष भी हुए हैं जिनमें हम आचार्य शंकर, आचार्य चाणक्य एवं ऋषि दयानन्द को सम्मिलित कर सकते हैं। ये तीनों महापुरुष भी ईश्वरभक्त, वेदभक्त, योगी तथा आदर्श देशभक्ति व उसके लिए बलिदान की भावना से सराबोर थे। योगेश्वर श्रीकृष्ण जी ने अपने काल में अधर्म, अन्याय तथा अविद्या के विरुद्ध आन्दोलन किया था। आचार्य शंकर ने अपने समय में नास्तिकता को समाप्त करने सहित उसके प्रसार को रोककर वेद व वेदान्त की शिक्षाओं को कुछ वेद विपरीत मान्यताओं सहित स्थापित किया था। आचार्य चाणक्य एवं ऋषि दयानन्द जी ने भी अपने–अपने समय में देश व धर्म रक्षा के महत्वपूर्ण कार्यों को किया। वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा व संवर्धन तभी हो सकता है कि जब हम इन सभी महापुरुषों सहित मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा अपने समस्त ऋषियों–मुनियों व वेद एवं धर्मप्रेमी सत्पुरुषों की बताई शिक्षाओं एवं सद्गुणों का अनुकरण करें। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमें वेदानुकूल को ग्रहण करना है और वेद विरुद्ध मान्यताओं का तिरस्कार करना है। भले ही वह किसी महापुरुष या ऋषि तुल्य किसी व्यक्ति ने ही कही हो अथवा उनके नाम से कही जा रही हो।

योगेश्वर श्री कृष्णजी का बड़ी विषम पारिवारिक एवं देश की राजनीतिक परिस्थितियों में जन्म हुआ था। उनके मामा कंस ने उनके माता–पिता देवकी और वसुदेव को अकारण ही जेल में डाल दिया था। आर्य विद्वान् पं. चमूपति जी इस घटना को महाभारत के विपरीत पाते हैं और अनुमान करते हैं कि यह पुराणकालीन काल्पनिक घटना है। अपनी माता व पिता से उनका लालन व पालन भी न होकर मथुरा से ढाई मील दूर यमुना के दूसरी पार के गाँव गोकुल में भाई बलराम एवं बहिन सुभद्रा के साथ हुआ। उनकी शिक्षा वैदिक गुरुकुलीय पद्धति से हुई थी। निर्धन सुदामा आपके सहपाठी एवं मित्र थे। आपकी मित्रता भी इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है। कृष्णजी द्वारिका के राजा बने थे। उन्होंने अधर्मी राजाओं का विरोध किया था तथा अपने मामा कंस सहित अनेक दुष्ट अधर्मी राजाओं को अपने बुद्धिबल, शक्ति एवं नीति–निमित्ता के आधार पर अपने मित्रों व सहयोगियों के द्वारा समाप्त किया। महाभारत से पूर्व आर्यावर्त राज्य के उत्तराधिकारी पाण्डव पुत्रों के राज्य में अनेक प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न की गईं। राज्य के लोभ से छलपूर्वक पाण्डवों को द्यूत क्रीड़ा के लिए प्रेरित किया गया था और कौरव पक्ष के धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने उनके समस्त राज्य सहित युधिष्ठिर की पत्नी द्रौपदी पर भी अधिकार कर उसका भरी सभा में अपमान किया था। यदि कृष्णजी द्यूत क्रीड़ा व द्रौपदी अपमान के अवसर पर आसपास होते तो निश्चय ही वहाँ पहुँचकर इन कार्यों को कदापि न होने देते। बाद में पता चलने पर वह पाण्डवों से मिले और उन्हें धर्म पालन तथा राज्य की पुनर्प्राप्ति के लिए धर्मपूर्वक प्रयत्न करने में सहयोग किया और प्रतिपक्ष द्वारा धर्म, कर्तव्य व उनके वचनों का पालन न करने पर महाभारत युद्ध की योजना भी पाण्डव पक्ष के साथ मिलकर तैयार की थी। इस युद्ध में अनेक राज्यों के राजा व उनकी सेनाओं ने भाग लिया था। दोनों ओर बड़े–बड़े वीर योद्धा थे। कृष्ण और पाँच पाण्डवों को छोड़कर अधिकांश योद्धा इस महायुद्ध के काल के गाल में समा गए थे। पाण्डव, उनके मित्र व अर्जुन के सारथी कृष्ण का पक्ष सत्य व धर्म पर आधारित था जिसकी अन्त में विजय हुई। पाण्डवों की इस विजय में श्रीकृष्ण जी का प्रमुख योगदान था। यदि वह न होते तो न युद्ध होता, न ही धर्म की जय होती। ऐसी स्थिति में इतिहास कुछ और होता जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अधर्म का विरोध और धर्म के पक्ष में सहयोग करने की शिक्षा हमें श्रीकृष्ण जी की महाभारत में भूमिका से मिलती है। हमें भी जीवन में अधर्म छोड़कर धर्म पर ही अडिग व अकम्पायमान रहना चाहिए। ऐसा होने पर ही वर्तमान एवं भविष्य में वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हो सकती है।

श्रीकृष्णजी ईश्वरभक्त, वेदभक्त, योगी एवं ब्रह्मचर्य व्रत के आदर्श

पालक थे। श्रीकृष्ण जी ने विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी जी से पूर्ण युवावस्था में विवाह किया था। विवाह के बाद दोनों पति-पत्नी में संवाद हुआ कि विवाह का अर्थ क्या है? विवाह सन्तान के लिए किया जाता है। इस पर सहमति होने पर श्रीकृष्ण जी ने रुक्मिणी जी से पूछा कि तुम कैसी सन्तान चाहती हो? इसका उत्तर मिला कि श्रीकृष्ण जी जैसी सन्तान चाहिए। इस पर श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी जी को उनके साथ रहकर तपश्चर्या एवं ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी जिस पर दोनों सहमत हुए। इसके बाद श्रीकृष्ण एवं माता रुक्मिणी जी ने उत्तराखण्ड के वनों व पर्वतों में १२ वर्ष रहकर ब्रह्मचर्यपूर्वक जीवन व्यतीत किया। अवधि पूरी होने पर उन्होंने प्रद्युम्न नाम के पुत्र को प्राप्त किया। महाभारत में लिखा है कि जब प्रद्युम्न सायं अपने पिता कृष्ण जी के साथ अपने राजमहल में आते थे तो रुक्मिणी जी कृष्ण व प्रद्युम्न दोनों की एक समान आकृति व गुणों की समानता को देखकर कौन उनका पति और कौन पुत्र है, इसे पहचानने में कठिनाई अनुभव करती थी। ब्रह्मचर्य की यह महिमा श्री कृष्णजी और माता रुक्मिणी ने अपने जीवन में स्थापित की थी। यह ब्रह्मचर्य व्रत भी आर्यों व वैदिक धर्मियों के लिए शिक्षा व प्रेरणा ग्रहण करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह भी बता दें कि महाभारत युद्ध के समय कृष्ण व अर्जुन लगभग १२० वर्ष की आयु के थे। यह बात महाभारत में लिखी है। आज पूरे विश्व में इस आयु का व्यक्ति मिलना असम्भव है। यह वैदिक धर्म एवं संस्कृति की विशेषता है। इसे श्रीकृष्ण जी के जीवन की विशेषता भी कह सकते हैं। श्रीकृष्ण जी का यदि हम अनुकरण करेंगे तो हममें भी ब्रह्मचर्य के सेवन एवं दीर्घायु प्राप्त होने की सम्भावना बनती है।

कौरव सेना में प्रमुख योद्धाओं में भीष्म पितामह, राजा कर्ण, आचार्य द्रोणाचार्य और दुर्योधन आदि प्रमुख बलवान योद्धा थे। किसी शत्रु द्वारा इन पर विजय पाना कठिन व असम्भव था। यदि कृष्ण जी द्वारा राजनीति व युद्धनीति का आश्रय न लिया जाता तो यह कार्य असम्भवप्राय: था। अत: देश एवं धर्म की रक्षा के हित में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने पाण्डवों व अर्जुन को उचित व आवश्यक सुझाव दिये और उनसे इनका पालन कराया जिसका परिणाम था कि अविजेय योद्धा भीष्म, द्रोणाचार्य, दुर्योधन और कर्ण आदि पराजित किये जा सके। इस प्रकार से महाभारत युद्ध की विजय का अधिकांश श्रेय श्रीकृष्ण जी को जाता है। युद्ध में विजय प्राप्ति धर्म के साथ नीतिमत्ता का पालन करने से होती है। यह शिक्षा श्रीकृष्ण जी के जीवन से ज्ञात होती है।

महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद श्रीकृष्ण जी की प्रेरणा से पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया। इस यज्ञ में श्री युधिष्ठिर जी को चक्रवर्ती सम्राट् बनाया गया था। इस राजसूय यज्ञ में सम्पूर्ण संसार के राजा आए थे और उन्होंने महाराज युधिष्ठिर को वस्तुएँ व स्वर्ण आदि के रूप में योग्य भेंटें दीं थी। इतिहास में ऐसा राजसूय यज्ञ इसके बाद पूरे विश्व में कहीं देखने को नहीं मिला। वर्तमान में हमारा एक पड़ोसी देश हमारे कुछ अन्य शत्रुओं के साथ मिलकर विश्व विजयी बनने सहित अपने देश की सीमाओं का विस्तार करने की बातें कर रहा है। हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने उस पड़ोसी देश को ऐसा करारा उत्तर दिया है जो उससे पूर्व के किसी प्रधानमन्त्री द्वारा नहीं दिया गया। योग्य नेता के नेतृत्व में ही देश उन्नति करता, सशक्त होता व अखण्डित रहता है। यह बात आज हम प्रधानमन्त्रीजी के नेतृत्व को देखकर कह रहे हैं। ईश्वर करे कि हमारा देश श्री राम व श्री कृष्ण सहित वेद, आचार्य चाणक्य तथा ऋषि दयानन्द जी की शिक्षाओं के आधार पर आगे बढ़े। इसी में वैदिक धर्म एवं देश का गौरव एवं रक्षा सम्भव है।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्रीकृष्ण जी के गुणों व चरित्र की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। श्रीकृष्ण जी के महाभारत में उपलब्ध सत्य इतिहास पर आधारित अनेक आर्य विद्वानों के लिखे जीवन चरित्र मिलते हैं, जिनमें पं. चमूपति, डॉ. भवानीलाल भारतीय, लाला लाजपतराय आदि प्रमुख हैं। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित महाभारत एवं पं. सन्तराम जी द्वारा प्रणीत संक्षिप्त महाभारत भी अत्यन्त सराहनीय एवं पठनीय ग्रन्थ है। अन्य अनेक विद्वानों के ग्रन्थ भी पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। इससे सभी पाठकों को लाभ उठाना चाहिए। ओ३म् शम्। ■

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ ३४ से आगे

संकलन एवं सम्पादन
● चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

व्यंजन वर्ण : (३२) 'क्ष'

छप्पय: **क्षत्रिय क्षण क्षण क्षण क्षत्रापन क्षेत्र न क्षीरीहं छोड़ै।**
क्षार क्षार उड़ि जाय क्षमा से मुख न मोड़ै।।
क्षई क्षीणता छाँड़ि क्षोभ की क्षोभ बढ़ाबै।
क्षीर नीर कौ न्याय क्षुद्र क्षत्रप मधि छावै।।
क्षण क्षुधित हो कि अनक्षुधित हो क्षोभी क्षोमहिं क्षोभई।
दरबारीलाल क्षिति क्षषत्र में क्षमता क्षीरिण छोड़ई।।

अर्थ : 'क्ष' हिन्दी वर्णमाला का एक संयुक्त वर्ण है। सभी क्षत्रीय लोग सदैव अपने क्षत्रीय धर्म का पालन करते हैं। वे युद्ध क्षेत्र को कभी नहीं छोड़ते हैं। धर्म लड़ाई लड़ने से कभी मुँह नहीं मोड़ते। धर्म रक्षण करने में उनके शरीर की बोटी-बोटी कट जाने की चिन्ता नहीं करते और न सहनशीलता का त्याग करते हैं। धीरे-धीरे उत्पन्न होने वाली निर्बलता को छोड़ना श्रेष्ठ समझते हैं पर अपनी व्याकुलता की घबराहट को सदैव जीवित रखते हैं। दूध-जल की पृथकता का न्याय नीच प्रवृत्ति व्यक्ति और उच्च प्रवृत्ति व्यक्ति के बीच सदैव बना रहता है। दूध-जल की पृथकता विरले विवेकशील व्यक्ति कर पाते हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति का कार्य नहीं। यह क्षुद्र और क्षत्रीय के बीच की लड़ाई है। क्षण भर के लिए कोई व्यक्ति भूखा या अखाया तो रह सकता है लेकिन व्याकुल व्यक्ति की व्याकुलता सदैव बनी रहती है। उसका अन्त नहीं होता। दरबारीलाल कविरत्न का कथन है कि रणभूमि में क्षमाशीलता का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। क्षमाशीलता सदैव जीवित रहने से सामाजिक कल्याण भी सदा जीवित बना रहता है। ■

कुछ क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय

● **खुशहालचन्द्र आर्य**
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

(...मोम्बासा पहुँचे। गतांक पृष्ठ १४ से आगे)

वहाँ अपने ओजस्वी भाषणों से धार्मिक व राष्ट्रीयता का खूब प्रचार किया। फिर वे जोहन्सबर्ग पहुँचे। वहाँ उनके स्वागत के लिए गाँधीजी भी आए। उन दिनों लाला लाजपत राय लन्दन में स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रचार कर रहे थे। उन्होंने भाईजी को लन्दन बुला लिया। वहाँ इण्डिया हाऊस में रहते हुए लाला हरदयाल, वीर सावरकर आदि से भी मिलना हुआ।

सन् १९०७ में १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के पचास वर्ष पूरे होने से विद्रोह की आशंका से तथा पंजाब के किसानों में क्रान्ति की भावना पैदा करने के आरोप में लाला लाजपत राय और अजीतसिंह को गिरफ्तार करके माण्डले जेल भेज दिया गया। इन दोनों के कारण सरकार का दमनचक्र चालू हो गया जिसके विरोध में लन्दन में एक सभा हुई जिसमें भाईजी ने दमन चक्र के विरोध में बहुत बड़ा भाषण दिया जिससे सरकार की कड़ी नजर हर समय रहने से भाईजी १९०७ में भारत आ गए। यहाँ भी सदा कड़ी नजर रहने लगी। इनके घर की तलाशी ली गई और बाद में इनको १० मार्च १९१० में गिरफ्तार कर लिया गया मगर जल्दी ही पंद्रह हजार रुपए की जमानत पर छोड़ दिया गया। भाईजी औषधि विज्ञान का अध्ययन करने के लिए अमेरिका चले गए। वहाँ उनकी भेंट अपने मित्र लाला हरदयाल एम.ए. से हुई जो **'पोर्ट दि फ्रांस'** नामक द्वीप में व्यक्तिगत कठोर साधना कर रहे थे। भाईजी ने उन्हें साधना छोड़कर पुनः देश सेवा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। अपने इसी प्रवास में उन्होंने करतारसिंह सराभा को भी प्रेरणा दी। औषधि निर्माण का कोर्स पूरा करके वे दिसम्बर १९१३ को मुम्बई पहुँच गए। अगस्त १९१४ में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। भाई परमानन्दजी तथा गदर पार्टी के क्रान्तिकारियों द्वारा एक बैठक बुलाई गई। इस बैठक में करतारसिंह सराभा, भाई परमानन्द, रासबिहारी बोस, शचिन्द्रनाथ सांन्याल तथा गणेश पिंगले आदि क्रान्तिकारियों ने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए सन् १८५७ जैसी योजना बनाई। तय हुआ कि २१ फरवरी १९१५ को विभिन्न स्थानों पर एक साथ विद्रोह करके देश को स्वतन्त्र करा लिया जाए। सेना में बगावत करने के लिए इन क्रान्तिकारियों का आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, लाहौर और फिरोजपुर आदि छावनियों से सम्पर्क हो चुका था। इधर क्रान्तिकारियों ने बगावत की पूरी तैयारी कर ली थी। शस्त्र आदि का प्रबन्ध हो गया था। क्रान्तिकारियों में अपार उत्साह था। मगर क्रान्ति का बिगुल बजने से पहले ही पार्टी के एक गद्दार कृपालसिंह ने लालच में आकर पुलिस को खबर देकर सारी योजना का भण्डाफोड़ कर दिया। पुलिस का दमन चक्र चला तथा खोज-खोजकर क्रान्तिकारियों को पकड़ा जाने लगा। इस षड्यंत्र में कुल ६१ अभियुक्तों को शामिल किया गया और इस षड्यंत्र के नेता करतारसिंह सराभा, भाई परमानन्द, विष्णु गणेश पिंगले, जगतसिंह, हरनामसिंह आदि मुख्य थे। न्याय का नाटक चला और भाई परमानन्द सहित चौबीस लोगों को फाँसी की सजा सुनाई गई। बाद में १५ नवम्बर १९१५ को भाईजी सहित चौबीस में सतरह व्यक्तियों को फाँसी न देकर आजीवन कारावास कालापानी के रूप में बदल दी गई। कालापानी कारावास का जीवन भाईजी के लिए बड़ा कष्टदायक था। पर उन्होंने बड़े साहस और धैर्य से इस जीवन को काटा। अन्ततः उनको २० अप्रैल १९२० को रिहा कर दिया गया। रिहा होकर वे लाहौर आए और कुछ समय के लिए अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहे।

भाईजी की रिहाई से पूरे भारत वर्ष में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। इन्हीं दिनों लाहौर में **'नेशनल कॉलेज'** की स्थापना हुई। भाईजी उसके उपकुलपति के रूप में कार्य करने लगे। इधर अगस्त १९२० में जब बाल गंगाधर तिलक का देहान्त हो गया तो कांग्रेस की बागडोर गाँधीजी के हाथ में आ गई। उन्होंने मुसलमानों के तुष्टीकरण का रास्ता अपनाया जिससे हिन्दुओं की अवहेलना होने लगी। भाईजी इस तुष्टीकरण के परिणाम को भाँप रहे थे, इसलिए इस नीति से खुश नहीं थे। इसीलिए उन्होंने हिन्दुओं का कोई संगठन बनाने की दिशा में विचार किया। अन्ततः डॉ. बी.एस. मुंजे, मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द व भाई परमानन्द आदि नेताओं ने हिन्दू महासभा का गठन किया। गाँधीजी की मुसलमान तुष्टिकरण की नीति के कुपरिणाम सामने आने आरम्भ हो गए परन्तु फिर भी कांग्रेस का प्रभाव बढ़ता गया। सन् १९३४ में भाईजी अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष चुने गए। उन्होंने पूरे देश में हिन्दुओं को जागृत करने का अथक प्रयास किया मगर जब १९३५ में चुनाव हुए तो हिन्दुओं ने पुनः कांग्रेस को ही समर्थन दिया। भाईजी हिन्दुओं के इस आत्मघाती निर्णय से भौंचक्के रह गए। वीर सावरकरजी को जब रत्नागिरी से मुक्त किया गया तो १९३७ में उन्हें हिन्दू महासभा का अध्यक्ष बनाया गया। उन्होंने भाईजी की विचारधारा का प्रबल समर्थन किया तथा देशभर में इसका प्रचार-प्रसार किया। तुष्टिकरण की नीति से मुसलमान भाईयों का उत्साह इतना बढ़ गया कि दिसम्बर १९३० में लखनऊ में मुस्लिम लीग के सम्मेलन में मोहम्मद इकबाल ने साफ शब्दों में मुसलमानों के लिए एक अलग पाकिस्तान की माँग कर दी। जिसको गाँधीजी के न चाहने पर भी १५ अगस्त १९४७ को देना पड़ा। भाई परमानन्द ने पाकिस्तान न बनने के लिए भारी प्रयास किया बाकी हिन्दुओं की कमजोर नीति ने पाकिस्तान को बनने दिया। पाकिस्तान बनने का भाई परमानन्द को भारी दु:ख हुआ और ८ दिसम्बर १९४७ को सदा-सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कर इस संसार से विदा हो गए।

लेख को बड़ा न होने देने के लिए मैं लेख को यहीं समाप्त करता हूँ और आगे भी समय-समय पर इसी प्रकार ४-५ बलिदानी क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त जीवन परिचय बराबर लिखता रहूँगा। ताकि देश के युवा वर्ग को क्रान्तिकारियों का परिचय मिलता रहे और वे भी देश को स्वतन्त्र रखने के लिए तथा देश की उन्नति व समृद्धि को बढ़ाने के लिए अपना सहयोग देते रहें। इसी आशा के साथ इस लेख को यहीं विराम देते हैं। ■

आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवस की बेला पर१४८ महान् आर्य विभूतियों का पावन स्मरण

(गतांक पृष्ठ १५ से आगे)

● आचार्य राहुल देव
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

२४) आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री : दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के आचार्य रहे। सिद्धान्त शिरोमणि थे। स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अन्वेषण कर ग्रन्थ लिखा।

२५) महात्मा प्रेम भिक्षु : पूर्वनाम - ईश्वरी नारायण था। आप बहुत अच्छे कर्मकांड के विद्वान् थे। एक अच्छे लेखक के साथ-साथ बहुत सुन्दर तरीके से उपदेश भी किया करते थे। अनेक वर्षों तक **'तपोभूमि'** पत्रिका का प्रकाशन और सम्पादन किया।

२६) महात्मा वेद भिक्षु : पूर्वनाम भारतेन्द्र नाथ था। दयानन्द संस्थान और आर्यपत्रिका **'जनज्ञान'** के संस्थापक थे। महात्मा वेदभिक्षु ने ८० के दशक में हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की, ७० के दशक में चारों वेद के हिन्दी भाष्य के प्रथम प्रकाशक २ वर्ष तक अन्न, नमक, मीठे का परित्याग किया। क्योंकि प्रण था की जब तक वेद भाष्य प्रकाशित नहीं कर लूँगा, अन्न, नमक, मीठा ग्रहण नहीं करूँगा।

२७) श्री प्रकाशवीर शास्त्री : जन्म -३० दिसम्बर १९२३ रहरा ग्राम उत्तर प्रदेश। निर्वाण - २३ नवम्बर १९७७। भारतीय संसद के सदस्य तथा आर्यसमाज के नेता थे। उनका मूल नाम 'ओमप्रकाश त्यागी' था। वे एक प्रखर वक्ता थे, उनके भाषणों में तर्क बहुत शक्तिशाली होते थे। उनके विरोधी भी उनके प्रशंसक बन जाते थे। १९५७ में आर्य समाज द्वारा संचालित हिंदी आंदोलन में उनके भाषणों ने जबर्दस्त जान फूँक दी थी।

२८) डॉ सत्यकेतु विद्यालंकार : जन्म - १९०३ भारतीय इतिहासकार एवं लेखक थे। गुरुकुल कांगड़ी के छात्र रहे जहाँ से उन्होने स्नातक किया। वे इतिहास के प्राध्यापक, उपकुलपति (१९७४), कुलाधिपति भी रहे। उन्होने सात खण्डों में **'आर्यसमाज का इतिहास'** लिखा है। वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य भी रहे। १६ मार्च १९८९ को कार दुर्घटना में उनका देहान्त हो गया।

२९) पं सत्यदेव विद्यालंकार : गुरुकुल कांगड़ी से सन् १९२१ में स्नातक बने थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी को उन्होंने निकटता से देखा था। पं. सत्यदेव ने पत्रकारिता को अपना लक्ष्य बनाकर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में **'सद्धर्म प्रचारक'** और **'श्रद्धा'** का सम्पादन किया, अनेक राष्ट्रीय पत्रों में सम्पादक के रूप में कार्य किया तथा दर्जनों मौलिक कृतियों का सृजन किया।

३०) डॉ. भवानीलाल भारतीय : जन्म - १ मई १९२८ को नागौर, राजस्थान। निर्वाण ११ सितम्बर को ९० वर्ष की अवस्था में हुआ। एक हजार से अधिक शोधपूर्ण लेख और एक लाख पृष्ठ से अधिक पुस्तक सामग्री लिखी है। आर्यसमाज के अन्यतम इतिहासकार थे।

३१) पं सत्यानन्द वेदवागीश : निर्वाण - २३ दिसम्बर २०१९ वेद, व्याकरण तलस्पर्शी विद्वान् थे। कर्मकाण्ड के विशेषज्ञ थे। परम स्वाध्यायशील, निरभिमानी, सिद्धान्तनिष्ठ थे।

३२) आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति : आप गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रहे। वेदों के विद्वान् थे। वेद मन्त्र व्याख्यान पर अनेक ग्रन्थ लिखें है।

३३) अभयदेव विद्यालंकार : आप गुरुकुल के आचार्य रहे, **'वैदिक विनय'**, **'ब्रह्मचर्य गीत'** सदृश ग्रन्थ लिखे।

३४) रामप्रसाद वेदालंकार : आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के आचार्य, उपकुलपति, कुलपति पद को सुशोभित किया गुरुकुल के आचार्य पद पर रहते हुए लगभग ६५ पुस्तकें लिखी **'देवी पुष्पांजलि'**, **'वैदिक प्रार्थना'**, **'सौरभ वैदिक'**, **'योगामृत'**, **'वैदिक रश्मियाँ'** आदि प्रसिद्ध हैं।

३५) देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय : महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को संग्रहीत करने के लिये आपने अपना जीवन लगा दिया। आप जैसा दयानन्द भक्त और दूसरा कहाँ मिलेगा। महर्षि दयानन्द जहाँ भी गये वहाँ-वहाँ जाकर एक- एक बातों की खोजकर बहुत कष्ट सहा जिस विषय को लेकर आर्यसमाजी भी उदासीन थे। ऐसे महान् कार्यो को करके आप अमर हो गये।

३६) डॉ सत्यदेव आर्य : जन्म - दिसम्बर १९१२ को जोधपुर। स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सक पद से १९७१ में सेवानिवृत्त हुए। **'वेदों में विज्ञान'** विषय पर आपके अनेक व्याख्यान हुए हैं। स्वास्थ्य विषयों पर भी महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे हैं। आपके द्वारा लिखित पुस्तकों में **'उपासना रहस्य'**, **'वैदिक संध्या मीमांसा'**, **'स्वास्थ्य विज्ञान'**, **'आहार एवं पोषाहार'** आदि प्रसिद्ध है।

३७) प्रो. उमाकान्त उपाध्याय : महर्षि दयानंद के मिशन के लिए सर्वात्मना समर्पित कोलकाता के सुप्रसिद्ध जयपुरिया कॉलेज में चार दशकों तक अर्थशास्त्र के वरिष्ठ प्राध्यापक रहे आर्यसमाज कलकता के मासिक मुखपत्र **'आर्य संसार'** का ४२ वर्षों तक संपादन किया। दुर्लभ ग्रंथों का संपादन किया अनेकों आर्य समाजों का इतिहास लिखा ५० से अधिक पुस्तकें लिखी।

३८) सुदर्शन देवाचार्य : व्याकरण के विशिष्ट विद्वान् थे। अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति पर भाष्य लिखा।

३९) डा. धर्मवीर : परोपकारिणी सभा के मन्त्री रहे और प्रधान पद को भी सुशोभित किया। परोपकारी मासिक पत्रिका के सम्पादक रहे। समसामयिक विषयों पर आपका सम्पादकीय लेख प्रशंसनीय होता था। आप अच्छे विद्वान् और लेखक थे।

४०) आचार्य ज्ञानेश्वर : आपने परास्नातक करके स्वामी सत्यपति जी से अध्ययन करके वैदिक दर्शन शास्त्रों पर आसाधारण अधिकार प्राप्त किया था। रोजड़ में वानप्रस्थ साधक आश्रम की स्थापना की। देश-विदेश में आर्यसमाज का प्रचार करते थे। बहुत कम समय में आर्यसमाज ने आप जैसी प्रतिभा को खो दिया।

४१) डॉ कपिलदेव द्विवेदी : संस्कृत के पठन-पाठन और सीखने के लिये आप द्वारा किये गये प्रयास के लिये आप सदैव प्रशंसनीय रहोगे। रचनानुवाद कौमुदी, जैसे कार्य शाला ग्रन्थ लिखा, वैदिक साहित्य और वेद पर आपकी अच्छी पकड़ थी। ■ **(शेष भाग आगामी अंक में)**

अपने संस्थापक की जन्मतिथि को लेकर भ्रम का शिकार आर्य समाज

● इं. आदित्यमुनि वानप्रस्थ
एच-१२८, राजहर्ष कॉलोनी, अकबरपुर
कोलार रोड, भोपाल-४६२०४२ (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५६०५८२३

हाल ही में एक आर्यपत्र के सम्पादक ने अपने पत्र के सम्पादकीय लेख में लिखा है कि 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म १२ फरवरी, १९२४ को टंकारा गुजरात में हुआ था।' उसका यह कथन सर्वथा भ्रामक है, क्योंकि हमारे पास उपलब्ध २०० वर्षीय (१८०० से लेकर १९९९ तक के) पुस्तकाकार पञ्चाङ्ग के अनुसार १२ फरवरी, १८२४ को माघ शुक्ल १२-१३ की तिथि थी और उस दिन पुनर्वसु नक्षत्र तथा संवत् १८८० विद्यमान था जो स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित रूप से बताए गए अपने जन्म संवत् १८८१ के ही विरूद्ध है।

ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले ४ अगस्त, १८७५ को पूना में पहुँचकर अपने पूर्वचरित्र के सम्बन्ध में वहाँ यह कहा था कि **'इस समय मेरी अवस्था ५० वर्ष की होगी।'** चूँकि ४ अगस्त, १८७५ (श्रावण शुक्ल ३ बुधवार) को सन् १८७५, चैत्री संवत् १९३२ और कार्तिकी (गुजराती) संवत् १९३१ वर्तमान था इसलिए इन वर्षों में से ऋषि की अवस्था के ५० वर्ष घटाने से ऋषि दयानन्द का जन्म सन् १८२५, चैत्री संवत् १८८२ और कार्तिकी (गुजराती) संवत् १८८१ विक्रमी में ही हुआ होना समझा जाना चाहिए था, परन्तु ऋषि के जीवनी लेखकों- पं. लेखराम आर्यपथिक और बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय से संवत् १८८१ को चैत्री संवत् समझ लेने की और उसमें तथा ईस्वी सन् के प्रारम्भ में जो ५७ वर्षों का अन्तर रहता है उसे घटाकर १८८१-५७- १८२४ में उनका जन्म होने की जो भूल आरम्भ में ही कर दी गई थी उसके शिकार होकर आर्यजन अभी भी उससे बाहर नहीं निकल पाए हैं। बाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १९६७ में सन् १८२५ के लिए ऋषि का जो जन्म दिनांक १२ फरवरी (फाल्गुन कृष्ण १०, शनिवार) निर्धारित कर दिया था, उसकी कलम कुछ नामसझ आर्यों ने इससे एक वर्ष पूर्व के सन् १९२४ में लगाकर एक सर्वथा ही काल्पनिक जन्मतिथि १२ फरवरी, १८२४ भी प्रचलित कर दी जिसका शिकार पूर्वोक्त आर्यपत्र तथा उससे सम्बद्ध सभा के अधिकारी और आर्यजन तक भी हो गए हैं जिन्होंने १९९ वर्षों के बाद पड़ने वाली इसी १२ फरवरी, २०२३ की तिथि पर देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी तक को बुलाकर ऋषि दयानन्द की २००वीं जन्म जयन्ती का दिल्ली में एक भव्य समारोह कर डाला और आगे एक वर्ष तक २०० वर्षीय १८२४-२०२४ के आधार पर) चलने वाले विभिन्न आयोजनों की श्रृंखला का शुभारम्भ कर दिया जिससे सारा आर्यजगत् भी भेड़चाल का शिकार होकर आजकल यही सब कुछ करने में प्रवृत्त है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल आल्काट और मैडम ब्लेवस्टस्की के अनुरोध पर उनके मासिक पत्र **'द थियोसोफिस्ट'** के लिए अपनी जो प्रारम्भिक **आत्मकथा** आर्यभाषा में छः पृष्ठों में अपने लेखक से अपने जन्मदिन (भाद्रपद शुक्ल ९) पर ही लिखाकर बरेली से २७ अगस्त, १८७९ को अपने वेदभाष्य के मैनेजर मुंशी समर्थदान के माध्यम से मुम्बई प्रकाशनार्थ भेजी थी, उसका नामकरण उन्होंने किसी बालक का जन्म होने पर लिखाए जाने वाली जन्मपत्री के आधार पर जन्मचरित्र किया था। इसमें उन्होंने लिखा था कि **''संवत् १८८१ के वर्ष में मेरा जन्म दक्षिण गुजरात प्रान्त, देश काठियावाड़ का मजोकठा देश, मोरवी का राज्य, औदीच्य ब्राह्मण के घर में हुआ था।''** यही बात स्वामी दयानन्द के शिष्य पं. ज्वालादत्त शर्मा द्वारा रचित निम्न श्लोक में भी कुछ इस प्रकार कही गई है—

क्षेणीभाहीन्दुभिरहुते वैक्रमे संवत्सरे यः
प्रादुर्भूतो द्विजवरकुले दक्षिणे देशवर्ये।
मूलनासौ जननविषये शंकरेणापरेणः ख्यातिं
प्रापत् प्रथमवयसि प्रीतिदां सज्जनानाम्।।

स्व. पं. युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा पूना से ही १८७५ में प्रकाशित मूल मराठी लेखों को प्राप्त कर आर्यभाषा में जो अनुवाद किया जाकर संवत् २०३९ वि. में प्रकाशित किया गया है उसमें पूना-प्रवचनों (उपदेश मञ्जरी) का ऋषि प्रोक्त उक्त वाक्य कुछ इस प्रकार छपा हुआ मिलता है कि **'इस समय मेरा वय ४९/५० वर्ष का होगा।'** जिससे ४ अगस्त, १८७५ में से क्रमशः ५० और ४९ वर्ष घटाने पर ऋषि जन्म ४ अगस्त, १९२५ से लेकर ४ अगस्त १८२६ की मध्यवर्ती किसी दिनाङ्क का ही हो सकता है। अतः ऐसे एक दिनाङ्क २० सितम्बर, १८२५ को ऋषि दयानन्द के उत्तराधिकारी परिवारजनों से उनकी जन्मपत्री के रूप में आर्यसमाज टंकारा के भूतपूर्व मंत्री पं. श्रीकृष्ण शर्मा ने प्राप्त कर संवत् २०२० (सन् १९६४) के अपने एक प्रकाशन में प्रकाशित की थी जिसके अनुसार बालक मूलशङ्कर का जन्म भाद्रपद शुक्ल ९वीं कार्तिकी संवत् १८८१ को मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और धनुराशि में २० सितम्बर, १८२५ को ब्राह्ममुहूर्त में ३.३० बजे हुआ था। इस कारण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चैत्री संवत् १८८१ मानकर मान्य की गई ऋषि की जन्मतिथि फाल्गुन कृष्ण १० (१२ फरवरी, १८२५, शनिवार) स्वतः ही गलत हो गई, क्योंकि यह जन्मतिथि के लिए मान्य पूर्वोक्त दोनों छोरों (४ अगस्त, १८२५ और १८२६) के बाहर की है और उसको मानने से ऋषि का वय ४ अगस्त, १८७५ को ५० वर्ष ५ माह और २३ दिन का हो जाता है जो ऋषि के पूना-प्रवचनों में कथित अपनी वय सम्बन्धी

कथन का ही अतिक्रमण करती है।

इन सबसे पूर्व स्वामी दयानन्द ने कलकत्ता (अब कोलकाता) में जाकर २२ मार्च से लेकर ३१ मार्च, १८७३ के मध्य अपनी जो **आत्मजीवनी** वहाँ संस्कृत में बोलकर बंगला भाषा में लेखकों को लिखाई थी उसमें उन्होंने २२ मार्च १८७३ को कहा था कि **'मेरी अवस्था इस समय प्रायः ४८ वर्ष की है।'** क्योंकि सितम्बर, १८२५ से लेकर २२ मार्च, १८७३ तक ४७ वर्ष ६ मास और २ दिन ही होते हैं। यदि ऋषि का जन्म सार्वदेशिक सभा के निर्णयानुसार १२ फरवरी, १८२५ को वस्तुत: हुआ होता तब तो वे यह कहते कि **'मैं इस समय ४८ वर्ष का हो चुका हूँ।'**

इसलिए ऋषि की प्राप्त जन्मकुण्डली के अनुसार जो दो ज्योतिषियों से प्रमाणित है आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती की वास्तविक जन्म तिथि भाद्रपद शुक्ल ९ कार्तिकी (गुजराती) संवत् १८८१ तद्नुसार २० सितम्बर, १८२५ मंगलवार ही है जैसी कि मैंने अपने **'दयानन्द दिवाकर'** ग्रन्थ में लिखी हुई है।

ऋषि दयानन्द के मानस में उनकी यह जन्मतिथि सदैव अङ्कित रही है, इसीलिए उन्होंने दो प्रमुख सैद्धान्तिक ग्रन्थों– **सत्यार्थप्रकाश** और **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** की भूमिकाओं में भी अपने जन्मपक्ष के रूप में इसे इस प्रकार स्मरण किया है–

सत्यार्थप्रकाश–

स्थान– महाराणाजी का उदयपुर (स्वामी) दयानन्द सरस्वती
भाद्रपद शुक्लपक्ष संवत् १९३९

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका–

कालरामाङ्कचन्द्रेदिनाऽब्दे भाद्रमासे सिते दले।
प्रतिपाद्यादित्यवारे भाष्यारम्भः कृतो मया।।

अर्थात् विक्रम के संवत् १९३३ के भाद्रपदमास की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, रविवार के दिन इस वेदभाष्य का आरम्भ मैंने किया है। (सब सज्जन लोगों को विदित हो कि जिनका नाम स्वामी दयानन्द सरस्वती है उन्होंने इस वेदभाष्य को रचा है।)

मेरा निवेदन है कि आर्यसमाज पिछले १४८ वर्षों से ऋषि दयानन्द की जन्मतिथि को लेकर की जा रही इस भूल का अब परिमार्जन करके उनकी २००वीं जन्म जयन्ती आगे २० सितम्बर, १८२४ को मनाए और चैत्र शुक्ल पञ्चमी संवत् २०८२ को आर्यसमाज स्थापना के १५० वर्ष पूर्ण होने पर समारोह तथा ऋषि की द्वितीय जन्मशताब्दी और आगे भाद्रपद शुक्ल ९ कार्तिकी संवत् २०८१ (सितम्बर, २०२५) में आयोजित करें। ■

ब्रह्माण्ड एक है या अनेक?

● **ओमप्रकाश आर्य**
आर्य समाज, रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)
चलभाष : ९४६२३१३७९७

यह एक महत्वपूर्ण विषय है। इसका सम्बन्ध प्रलय और मोक्ष से जुड़ा हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में– **''वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता... सब लोक–लोकान्तरों में घूमता है।''** प्रश्न यह है कि यदि ब्रह्माण्ड एक है और उसका प्रलय हो गया तो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक वह मुक्त जीव स्वच्छन्द कहाँ घूमेगा और शुद्ध ज्ञान से कौन सी सृष्टि देखेगा? इतने काल तक वह कौन से लोक–लोकान्तर में घूमेगा? आगे ऋषि लिखते हैं— **''वह सब पदार्थों को... देखता है।''** प्रलयावस्था में वह कौन सा पदार्थ देखेगा? ये सारे प्रश्न उठते हैं एक ब्रह्माण्ड को लेकर। अभी तक आधुनिक वैज्ञानिकों की दृष्टि में भी सृष्टि का कहीं अन्त नहीं दिखा है। प्रकाश वर्ष का पैमाना भी बिलियन वर्षों में जाकर कल्पना से परे हो जाता है। यदि हम एक ब्रह्माण्ड मानकर चलते हैं तो मोक्ष–विषयक सारा उद्देश्य निरर्थक सिद्ध हो जाएगा। कारण यह है कि प्रलयावस्था में मुक्त जीव की स्थिति क्या होगी? यदि कोई आत्मा सृष्टि–प्रलय के पूर्व मोक्ष प्राप्त करता है तो वह कौन से लोक–लोकान्तर में घूमेगा? मोक्ष–विषयक अवधारणा ही ध्वस्त हो जाएगी।

ब्रह्माण्ड एक है या अनेक? इसका उत्तर हम सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में स्पष्टत: देख सकते हैं। महर्षि दयानन्द के शब्दों में **''एक–एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य प्रकाशक और दूसरे सब लोक–लोकान्तर प्रकाश्य हैं।''** वे सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं— **''जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है।''** यहाँ **'ब्रह्माण्डों'** शब्द बहुवचन में है एकवचन में नहीं। ऋग्वेद ७/७६/१ एवं ७/९९/१ में– **''परमात्मा सब ब्रह्माण्डों में ओतप्रोत हो रहा है'', ''सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों का ज्ञाता परमात्मा है।''** मन्त्र– **परो मात्रमा तन्वा वृधान.** और **उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं.** देखें– महर्षि दयानन्द कृत भाष्य। इन उदाहरणों के आधार पर सिद्ध हो रहा है कि ब्रह्माण्ड अनेक हैं। महर्षि दयानन्द के अनुसार एक–एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य प्रकाशक और दूसरे लोक–लोकान्तर प्रकाश्य हैं। तात्पर्य यह निकला कि हमारा अपना सौरमण्डल एक ब्रह्माण्ड है। ऐसे न जाने कितने सौरमण्डल होंगे जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा होता है कि सारे ब्रह्माण्डों का प्रलय एक साथ होता है अथवा अलग–अलग। ज्योतिर्विदों के अनुसार हमारी आकाशगंगा में एक अरब नक्षत्र हैं। नक्षत्र अर्थात् तारा। तारा अर्थात् सूर्य। हमारा सूर्य भी एक तारा है। सृष्टि में असंख्य आकाशगंगाएँ हैं। उनमें भी ऐसे ही नक्षत्र होंगे। उन नक्षत्रों के अपने सौरपरिवार होंगे। यह सोचकर ही मष्तिष्क चकरा जाएगा। क्या ये सब एक साथ प्रलय को प्राप्त होते हैं और एक साथ उनकी उत्पत्ति होती है? महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की जो व्याख्या की है, वह अपने ही सौरमण्डल के लिए है अथवा असंख्य सौरमण्डलों के लिए है? इसका उल्लेख कहीं किया नहीं। वैसे भी अपना

ही सौरमण्डल क्या कम विस्तृत है? अपने ही सौरमण्डल से दिमाग चकरा जाए। फिर अपनी आकाशगंगा में कितने सौरमण्डल होंगे? उन सबका अपना सौरपरिवार होगा। चिन्तन के धरातल पर पहुँचकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महर्षि ने अपने ही सौरमण्डल के प्रलय, उत्पत्ति और स्थिति का वर्णन किया है। वर्षा के दिनों में काले बादलों के छा जाने से धरती पर अंधेरा-सा छा जाता है। लगता ही नहीं कि सूर्य नाम की कोई चीज आसमान में है। जो सृष्टि की बात है वह चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष का अपना सौरमण्डल वाला ब्रह्माण्ड है। क्या यही आयु सभी ब्रह्माण्डों की होगी? यह चिन्तनयोग्य विषय है। सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास में महर्षि दयानन्द सरस्वती उल्लेख करते हैं—

प्रश्न– जिन वेदों का इस लोक में प्रकाश है। उन्हीं का उन लोकों में प्रकाश है वा नहीं?

उत्तर– **'उन्हीं का है। जैसे एक राजा की राज्य व्यवस्था नीति सब देशों में समान होती है। उसी प्रकार परमात्मा राजराजेश्वर की वेदोक्त नीति अपने सृष्टि रूप सब राज्य में एक सी है।'** अतएव असंख्य ब्रह्माण्डों में सर्वत्र यही वेदज्ञान है। मोक्ष विषयक अवधारणा भी यही होगी। प्रलय अवस्था में जीव महर्षि के शब्दों में **'प्रलय में निकम्मे जैसे सुषुप्ति में पड़े रहते हैं वैसे रहते हैं।'** यह स्थिति अन्य जीवों की है। मुक्ति को प्राप्त हुए जीव सुषुप्ति को प्राप्त नहीं होते क्योंकि वे ब्रह्म के आनन्द का भोग कर रहे होते हैं। यदि प्रलय इस ब्रह्माण्ड का हुआ है तो वे दूसरे असंख्य ब्रह्माण्डों में मुक्त विचरण करते होंगे। बद्ध आत्माओं के समान उनकी स्थिति नहीं होगी। चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष का प्रलय काल होता है। इतने काल तक अन्य आत्माएँ सुषुप्ति अवस्था में पड़ी रहती हैं। इसी मुक्ति का आनन्द सर्वोत्कृष्ट आनन्द माना गया है।

प्रश्न है— यदि सभी ब्रह्माण्डों का प्रलय एक साथ हो जाएगा तो कहीं भी सृष्टि नाम की कोई चीज नहीं रहेगी, फिर मुक्त जीव का विचरण कहाँ होगा? वह परमात्मा के किस विज्ञान को देखकर आनन्द से आप्लावित होगा? इसलिए यही मानना समीचीन लगता है कि अलग-अलग सौरमण्डलों का प्रलय होता है। यह विज्ञान की मान्यता है कि कोई भी वस्तु न एक साथ बनती है और न एक साथ बिगड़ती है। यह लेख मैं इसलिए लिख रहा हूँ कि सृष्टि का सम्बन्ध आत्मा, परमात्मा और मोक्ष तीनों से है। सृष्टि को देखकर आत्मा को परमात्मा के अस्तित्व का प्रमाण मिलता है और इस विज्ञान से युक्त सृष्टि में नियम का पता चलता है। मुक्त जीव उस विज्ञान को शुद्ध ज्ञान से देखकर आनन्दमग्न होता है। वैसे तो मुक्त जीव आनन्दस्वरूप परमात्मा में ही मग्न रहता है। सृष्टि और परमात्मा एक ही सिक्के के दो पहलू समझिए। विचित्रताओं से भरी सृष्टि परमात्मा की निशानी है।

इस आधार पर एक प्रश्न और उभरकर सामने आता है। मान लीजिए कि प्रलयकाल चल रहा है। मुक्त आत्माओं को छोड़कर अन्य समस्त आत्माएँ सुषुप्त-सी प्रकृति अवस्था में पड़ी हुई है। पुन: जब प्रलयकाल समाप्त होगा, तब वे सृष्टि बनने पर परमात्मा की व्यवस्था व कर्मानुसार उनको शरीर की प्राप्ति होगी। फिर चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक आवागमन का चक्र चल पड़ेगा। मुक्त जीवों को प्रलय से कोई फर्क नहीं पड़ता। उनके लिए अन्य ब्रह्माण्ड स्वच्छन्द विचरण के लिए हैं। एक ब्रह्माण्ड के जीव का जन्म-मरण उसी ब्रह्माण्ड में होगा जहाँ वह कर्म किया है। दूसरे ब्रह्माण्ड का जीव इस पृथ्वी पर आकर जन्म-मृत्यु प्राप्त करते आज तक नहीं देखा गया। सम्भवत: परमात्मा की सर्वज्ञता, न्याय व्यवस्था कितनी विज्ञान सम्मत है कि आज तक एलियन की चर्चा केवल सुनी जाती है। अनुमान लगाया जाता है पर प्रत्यक्षत: यहाँ देखा नहीं गया है। वैज्ञानिक पता भी नहीं लगा सकते। यही कारण है कि अपने सौरमण्डल से इतर ग्रहों पर जीवन की सम्भावना व्यक्त तो की जाती है, पर उनका अन्य ग्रहों पर पहुँचकर गृहस्थ जीवनधारियों को देखना या साक्षात्कार करना सम्भव नहीं है। यह परमेश्वर की व्यवस्था है। इसी से जीवनयुक्त ग्रहों को इस पृथ्वी से कल्पनातीत दूरी पर बसाया गया है ताकि विज्ञान कितनी ही उन्नति कर ले जाए पर वहाँ तक न पहुँच सके, नहीं तो कर्मानुसार जीवों के शरीर धारण की व्यवस्था बिगड़ जाएगी। इसी से प्रलयकाल में उक्त ग्रह का जीव उसी प्रकृति में सुषुप्त पड़ा रहता है।

एक बहुत रोचक बात उभरकर सामने आती है कि जिस ब्रह्माण्ड का प्रलय हुआ, उसी ब्रह्माण्ड के परमाणुओं से परमात्मा सृष्टि-रचना करता है। प्रलय क्या है? परमाणु-परमाणु का अलग-अलग हो जाना। रज, सत्, तम के परमाणु साम्यावस्था में हो जाते हैं। जहाँ परमाणु पृथक्-पृथक् हुए हैं उन्हीं परमाणुओं से ही तो परमात्मा सृष्टि की रचना करेगा और उन्हीं परमाणुओं के बीच सामान्य जीव सुषुप्त पड़े रहते हैं। पुन: सृष्टि रचना के बाद परमात्मा उनके कर्मानुसार शरीर प्रदान करता है। इसी कारण मुक्ति के सुख को सर्वोत्कृष्ट सुख माना गया है और मानव का जीवन भी उसी सुख को प्राप्त करने के लिए मिला है। अनेक ब्रह्माण्ड मानने पर ही यह सिद्धान्त खरा उतर सकता है। एक ब्रह्माण्ड मानने पर तो यह मोक्ष-सिद्धान्त ही ध्वस्त हो जाएगा।

जैसे वेद शब्द एक है पर विभाग चार किया जाता है। वैसे ही ब्रह्माण्ड शब्द एक है, पर विभाग असंख्य ही होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो एक ब्रह्माण्ड के लिए एक सूर्य लिखा है। उससे यह स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि ब्रह्माण्ड असंख्य है जिनको आधुनिक भाषा में सौरमण्डल कहा जा सकता है।

ब्रह्माण्ड- ब्रह्म-अण्ड अर्थात् ब्रह्म का अण्डा। मुर्गी सारे अण्डे एक साथ नहीं देती। सब कुछ एक साथ नहीं होता। क्रमशः ही होता है। प्रलय और उत्पत्ति के साथ भी ऐसा ही भाव है। ■

मनुष्य तन

मनुष्य तन पा के क्या किये,
प्रभु का नाम तक न लिया।
तू आया था यहाँ करने जो,
किया तूने न कुछ भी वह।
गँवाया रात दिन श्वासों में,
न प्याला प्रेम का पीया।
विषय तुझे लगे प्यारे,
तू भोगे भोग भी सारे।
हो तू मस्त धन के बीच,
खाना-पीना दे तन के बीच।
न सोचो मन में कुछ,
उमर सारी देवे बिताय।
तू समझा जिसको है मेरी,
भोले वह न तेरी।
लगा दो शुभ कर्मों की ढेरी,
न चोला धर्म का सी तू।
मनुष्य तन पा के क्या किया,
जबकि प्रभु का नाम न लिया।

● **देवकुमार प्रसाद आर्य**
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

श्राद्ध पक्ष विशेष

वेदों में श्राद्ध एवं पितृ तर्पण

● शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा (राज.)
दूरभाष : ०७४४–२५०१७८५

वेदों में आश्रम व्यवस्था का वर्णन हुआ है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चार आश्रम हैं। मनुष्य की आयु को १०० वर्ष की मानकर उसके चार समान भाग करके प्रत्येक आश्रम का २५ वर्ष का काल माना गया है। पहला ब्रह्मचर्य आश्रम शरीर के गठन और विद्या प्राप्ति से सम्बन्ध रखता है। बालक को ३ वर्ष की आयु तक माता, ८ वर्ष की आयु तक पिता सामान्य ज्ञान देकर गुरुकुल में प्रवेश करा देते हैं। गुरुकुल में बालक कम से कम २४ वर्ष की आयु तक विद्या प्राप्त करता है। किसी विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए वह चाहे तो ४४ अथवा ४८ वर्ष की आयु तक गुरुकल में रह सकता है। फिर समावर्तन संस्कार के बाद वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर अपने समान गुण, कर्म, स्वभाव की कन्या से विवाह कर लेता है। गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों का राजा माना जाता है। गृहस्थ ही शेष तीनों आश्रमों के व्यक्तियों की जीविका की व्यवस्था करता है। देश की सामाजिक– राजनैतिक व्यवस्था का संचालन भी गृहस्थ ही करता है। व्यापार, कृषि, कारखानों, पशुपालन, स्वास्थ्य, राष्ट्र रक्षा आदि सभी विषय गृहस्थाश्रम के द्वारा ही संचालित होते हैं। गृहस्थ का जीवन सर्वाधिक तपस्या और त्याग का होता है। ५० वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर अथवा बड़े पुत्र के भी पुत्र हो जाने पर व्यक्ति गृहस्थाश्रम को त्याग कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करता है। उसकी पत्नी चाहे तो वानप्रस्थ में प्रवेश करे या अपने पुत्रों के साथ रहे इसकी उसे स्वतन्त्रता होती है। अब पति–पत्नी के मध्य शारीरिक सम्बन्ध नहीं रहता है। इस आश्रम में प्रवेश कर व्यक्ति पुन: शास्त्राध्ययन करता है। नियमित पवित्र जीवन व्यतीत करता हुआ समाज की सेवा में व्यस्त रहता है। देशाटन करता हुआ धर्म का प्रचार भी करता है। अब उसका काम समाज को धर्म का ज्ञान देकर राष्ट्र को शान्ति के पथ पर अग्रेसित करना होता है। अब गृहस्थ का कार्य वानप्रस्थ और संन्यासी की भोजन और वस्त्रों की उचित व्यवस्था करना भी हो जाता है। अपनी सेवा से वह उन्हें तृप्त करता रहता है। वास्तव में इसे ही श्राद्ध और तर्पण कहा जाता है। अब हम वेद के आधार पर इस विषय पर चर्चा करते हैं। यजुर्वेद में पितृ तर्पण और पितृ श्राद्ध के विषय में पर्याप्त वर्णन है।

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।
अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत।। यजु. २.३.१

भावार्थ– ईश्वर आज्ञा देता है कि मनुष्य लोग माता–पिता आदि धार्मिक सज्जन, विद्वानों को समीप आए हुए देखकर उसकी सेवा करें। प्रार्थनापूर्वक कहे कि हे पितृगण! आपका आना हमारे उत्तम भाग्य से होता है इसलिए आओ और जो अपने व्यवहार में यथायोग्य और आसन आदि हम देते हैं उनको स्वीकार कर सुख का अनुभव करो। जो–जो आपके प्रिय पदार्थ हमारे लाने योग्य हों उसकी आज्ञा दीजिए। फिर हमें सूक्ष्म विद्या और धर्म के उपदेश से लाभान्वित कीजिए।

नमो व: पितरो रसाय नमो: व पितर: शोषाय नमो व: पितरो जीवाय नमो व: पितर: पितरो स्वधायै नमो व: पितरो घोराय नमो व: पितरो मन्यवै नमो व: पितर: पितरो नमो वो गृहान्न: पितरो दत्त सतो व: पितरो दैष्मेतद्व: पितरो वास:।।यजु. २.३२

इस मन्त्र में अनेक बार नम: शब्द आया है। वह पितृजनों के उनके विभिन्न अवदान के लिए है। जैसे **(रसाय:)** विज्ञान रूपी आनन्द की प्राप्ति के लिए **(शोषाय)** दु:ख और शत्रुओं की निवृत्ति के लिए **(जीवाय)** जीविका के लिए **(स्वधायै)** अन्न, समूह से निवृत्ति के लिए **(मन्यवे)** दुष्टाचरण वाले लोगों से बचाने के लिए नमन किया गया है। साथ ही उन्हें घर पर निमन्त्रित भी किया गया है।

अग्नऽआयूंषि पवसऽआ सुवोर्जमिषं च न:।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।यजु. १९.३८

अर्थ– हे **(अग्ने)** पिता, पितामह, प्रपितामह! जो आप **(न:)** हमारे **(आयूंषि)** आयु को **(पवसे)** पवित्र करें सो आप **(ऊर्जम्)** पराक्रम **(च)** और **(इषम्)** इच्छा शक्ति को **(आ सुव)** चारों ओर से सिद्ध करिये और दूर और निकट बसने वाले **(दुच्छुनाम्)** दुष्ट कुत्तों के समान मनुष्यों के संग को **(बाधस्व)** छुड़ा दीजिए।

भावार्थ– माता–पिता आदि लोग अपने सन्तानों को दीर्घ आयु, पराक्रम और शुभेच्छा धारण करा कर, दुष्टों के संग से रोक और श्रेष्ठों के संग में प्रवृत्त करा उन्हें धार्मिक चिरंजीवी करें जिससे वे वृद्धावस्था में भी अप्रियाचरण कभी न करें।

पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:।
प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वध्वा नम:।
अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽती तृपन्त पितर:
पितर: शुन्धध्वम्।। यजु. १९.३६

अर्थ– हम पुत्रादि मनुष्य **(स्वधायिभ्य:)** जिस स्वधा अन्न और जल को प्राप्त होने के स्वभाव वाले **(पितृभ्य:)** पितृजनों को **(स्वधा)** अन्न देते और **(नम:)** सत्कार करते **(स्वधायिभ्य:)** बहुत अन्न को चाहने वाले **(पिता महेभ्य:)** पितामह को **(स्वधा:)** सुन्दर अन्न देते और उनका **(नम:)** सत्कार करते हैं और **(स्वधायिभ्य:)** उत्तम अन्न को चाहने वाले **(प्रपितामहेभ्य:)** प्रपितामह को **(स्वधा)** अन्न देते और उनका **(नम:)** सत्कार करते हैं। वे हे **(पितर:)** पितृजन! आप लोग हमसे अच्छे प्रकार बनाए हुए अन्नादि का **(अक्षत्)** भोजन कीजिए। हे **(पितर:)** पितृजन! आप आनन्दित होकर हमको **(अमीमदन्त)** आनन्द युक्त कीजिए। हे **(पितर:)** पितृजन! आप तृप्त होकर हमको **(अतीतृपन्त)** तृप्त कीजिए। हे **(पितर:)** विद्वानों! आप लोग शुद्ध होकर हमको **(शुन्धध्वम्)** शुद्ध कीजिए।

पुनन्तु मा पितामहा पुनन्तु प्रपितामहा।
पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।। यजु. १९.३७

अर्थ– **(सौम्यास:)** ऐश्वर्य से युक्त अथवा चन्द्रमा के तुल्य शान्त **(पितर:)** ज्ञानदाता पितृजन **(पवित्रेण)** शुद्ध **(शतायुषा)** सौ वर्ष की आयु

से **(मा)** मुझको **(पुनन्तु)** पवित्र करें। **(पितामहाः)** पितामह अतिशुद्ध सौ वर्ष की आयु से **(मा)** मुझको **(पुनन्तु)** पवित्र करें। शान्त स्वभाव **(पितामहाः)** पितामह **(पवित्रेण)** अति शुद्ध आनन्द युक्त **(शतायुषा)** सौ वर्ष पर्यन्त आयु से मुझे **(पुनन्तु)** पवित्र करें। **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(आयुः)** आयु को मैं **(व्यश्नवै)** प्राप्त होऊँ।

ये समानाः समनसः तिरो यमराज्ये।
तेषांल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।। यजु. १९.४५

अर्थ– **(ये)** जो **(समानाः)** समान **(समनसः)** तुल्य विज्ञान युक्त **(पितरः)** प्रजा के रक्षक लोग **(यमराज्ये)** यथावत् न्यायकारी राजा के राज्य में हैं **(तेषाम्)** उनका **(लोकः)** सभा का दर्शन **(स्वधा)** अन्न **(नमः)** सत्कार और **(यज्ञः)** प्राप्त होने न्याय **(देवेषु)** विद्वानों में **(कल्पताम्)** समर्थ होवे।

ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहि रेसोमपीथं वसिष्ठः।
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नशद्ध प्रतिकाममत्तु।। यजु. १९.५१

अर्थ– (ये) जो **(नः)** हमारे **(सोम्यासः)** शान्तयादि गुणों के योग से योग्य **(वसिष्ठः)** अत्यन्त धनी **(पूर्वे)** पूर्वज **(पितरः)** पालन करने वाले पिता आदि **(सोमपीथम्)** सोम पान को **(अनूहिरे)** प्राप्त होते और प्राप्त कराते हैं **(तेभिः)** उन **(उशद्धिः)** हमारे पालन की कामना करने वाले पितरों के साथ **(हवींषि)** लेने-देने योग्य पदार्थो की **(उशन्)** कामना करने वाला **(संरराणः)** अच्छे प्रकार सुखों का दाता **(यमः)** न्याय और योग युक्त संतान **(प्रतिकामम्)** प्रत्येक काम को **(अत्तु)** भोगे।

इस अध्याय में अंगीरस, सौम्य, बर्हिषद्, अग्निष्वाता आदि पितृजनों का वर्णन हुआ है। पितृजन जब भी घर पर आवें उनका भोजन, वस्त्राभूषण से सत्कार करें।

आज्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नोयद्व आगः पुरुषता कराम।। यजु. १९.६२

अर्थ– हे **(विश्वे)** सब **(पितरः)** पितृ लोगों! आप **(केन, चित्)** किसी हेतु से **(नः)** हमारी **(पुरुषता)** पुरुषार्थता है उसको **(मा हिंसिष्ट)** नष्ट मत करो। जिससे हम लोग सुख को **(कराम)** प्राप्त करें **(यत्)** जो **(वः)** आपका **(आगः)** अपराध है उसको हम छुड़ावें। आप लोग **(इमम्)** इस **(यज्ञम्)** सत्कार क्रिया रूप व्यवहार को **(अभी गृणित)** हमारे सम्मुख प्रदर्शित करो। हम **(जानु)** जान, अवयव को **(आच्य)** नीचे टेक कर **(दक्षिणतः)** आपके दक्षिण भाग में **(निषद्य)** बैठकर आपका निरन्तर सत्कार करें।

ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म याँउच प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व।। यजु. १९.६७

अर्थ– हे **(जातवेदः)** नवीन तीक्ष्ण बुद्धि वाले विद्वान्! **(ये)** जो **(इह)** जहाँ **(च)** ही **(पितरः)** पितृजन हैं **(च)** और **(ये)** जो **(इह)** वहाँ **(न)** नहीं हैं **(च)** और हम **(यान्)** जिनको **(विद्म)** जानते **(च)** और **(यान्)** जिनको **(न प्रविद्म)** नहीं जानते हैं उन **(यति)** पितरो को **(त्वम्)** आप **(वेत्थ)** जानते हैं **(उ)** और **(ते)** वे भी आपको जानते हैं उनकी सेवा रूप **(सुकृतम्)** पुण्य जनक **(यज्ञम्)** सत्कार रूप व्यवहार को **(स्वधाभिः)** अन्नादि से **(जुषस्व)** सेवा करो।

भावार्थ– हे मनुष्यो! जो प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष पितृजन हैं उन सबको बुलाकर अन्नादि से सदा सत्कार किया करो।

अथर्ववेद काण्ड १८, सूक्त २ और ३ में पितृ श्राद्ध और तर्पण पर विस्तार से वर्णन हुआ है। यहाँ इस काण्ड से कुछ मन्त्र लिखते हैं।

ये नः पितुः पितरो ये पितामहा ये अवि विशुरूर्वंन्तरिक्षम्।
य आक्षि यन्तिं पृत्रिवीमुत द्यां तेभ्यः पितृभ्यो नमसा विधेम।।
अथर्व. १८.२.४९

अर्थ– (ये) जो पुरुष **(नः)** हमारे लिए **(पितुः)** पिता के **(पितरः)** पिता समान हैं और **(य)** उनके **(पितामहः)** दादा के समान हैं और **(ये)** जो **(उस)** चौड़े **(अन्तरिक्षम्)** आकाश में (विमानादि द्वारा) **(आविविशुः)** प्रविष्ट हुए हैं **(तेभ्यः)** उन **(पितृभ्यः)** पितरों की **(नमसा)** अन्न से **(विधेम)** हम सेवा करें।

भावार्थ– जो हमारे पिता, पितामह, प्रपितामह के समान हैं जो विस्तृत आकाश में विमान द्वारा प्रविष्ट हुए हैं हम उनकी अन्न के द्वारा सेवा करें।

वर्चसा मां पितरः सोम्यासो अञ्जन्तु देवा मधुना घृतेन।
चक्षुषे मा प्रतरं तारयन्तो जरसे मा जरदिष्टं वर्धन्तु।।
अथर्व. १८.३.१०

अर्थ– (सोम्यासः) ऐश्वर्य सम्पन्न **(देवाः)** विद्वान् **(पितरः)** पितृजन **(मत्म्)** मुझे **(वर्चसा)** तेज से **(मधुना)** विज्ञान से और **(घृतेम)** प्रकाश से **(अञ्जन्तु)** प्रसिद्ध करें। **(चक्षुषे)** सूक्ष्म दृष्टि के लिए **(मा)** मुझे **(प्रतरम्)** आगे को **(तारयन्तः)** पार कराते हुए (वे लोग) **(जरदिष्टम्)** स्तुति के साथ प्रवृत्ति वाले **(मा)** मुझको **(जरसे)** प्रस्तुति के लिए **(वर्धन्तु)** बढ़ावें।

भावार्थ– इस मन्त्र में सौम्यास पितृजन से प्रार्थना की गई है कि वे हमें विज्ञान और सत्य के प्रकाश का ज्ञान देकर प्रसिद्धि दिलाएँ।

निम्न मन्त्र में पितृजनों से प्रार्थना की गई है कि वे हमें अपने श्रेष्ठ गुणों से प्रेरित करें।

यद् वो मुद्रं पितरः सोम्यं च तेनो सचध्वं स्वयशसो हि भूत।
ते अर्वाणः कवय आ श्रृणोत सुविरत्रा विदथे हूयमानाः।।
अथर्व. १८.३.१९

अर्थ– (पितरः) हे पितृगण! **(यत्)** जो कुछ कर्म **(वः)** आपका **(मुद्रम्)** हर्षदायक **(च)** और **(सोम्यम)** उत्तम गुण युक्त है **(तेनो)** उससे ही हमें **(सचध्वम्)** आप सींचो **(हि)** अवश्य **(स्वयशसः)** अपने आप यशस्वी **(भूत)** होओ। **(अर्वाणः)** शीघ्रगामी **(कवयः)** बुद्धिमान् **(सुविदत्राः)** बड़े धनी और **(विदथे)** विद्वानों में **(हूयमानः)** पुकारे गए **(ते)** वे आप **(आ)** आकर **(श्रृणोत)** सुनो।

भावार्थ– हमें पितृगणों की उत्तम अन्न वस्त्राभूषण के द्वारा सेवा करनी चाहिए। पितृगणों के भोजन कर लेने के बाद हमें भी वही अन्न ग्रहण करना चाहिए।

अग्निष्वातः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्तो हवींषि प्रयतानि बर्हिषि रयिं च नः सर्ववीरं दधात्।।
अथर्व. १८.३.४४

अर्थ– (अग्निष्वाताः) हे अग्नि विद्या के ग्रहण करने वाले **(पितरः)** पितर! **(इह)** यहाँ **(आ गच्छत)** चल कर आओ। **(सुप्रणीतयः)** उत्तमः नीति वेत्ता आप **(सदः सदः)** सभा-सभा में **(सदत)** बैठो। और **(बार्हिषि)** वृद्धिकारक व्यवहार के बीच **(प्रयतानि)** शुद्ध **(हवींषि)** खाने योग्य अन्न को **(अत्तो)** खाओ। **(च)** और **(नः)** हमारे लिए **(सर्व वीरम्)** सब वीर पुरुषों को प्राप्त कराने वाले **(रयिम्)** धन को **(धत्त)** धारण करो।

उपहूता नः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।
अथर्व. १८.३.४५

अर्थ– हे **(सोम्यासः)** ऐश्वर्यवान् **(पितरः)** पितृगणों! **(नः)** हमारे **(बहिष्येषु)** वृद्धि योग्य **(प्रियेषु)** प्रिय **(निधिषु)** कोषों के निमित्त **(उपहूताः)** बुलाए गए हैं **(ते)** वे **(आ गमन्तु)** आवें। **(ते)** वे **(इह)** यहाँ **(श्रवन्तु)** सुनें **(ते)** वे **(अधि)** अधिकारपूर्वक **(ब्रुवन्तु)** उपदेश करें और **(अस्मान्)** हमारी **(अवन्तु)** रक्षा करें।

ये नः पितुः पितरो ये पितामहाः अनूजहिरे सोमपीयं वसिष्ठः।
तेभिर्यमः संरराणो वहींष्युशन्नु शद्भिः प्रतिकाममत्तु।।
अथर्व. १३.३.४६

अर्थ– **(ये)** जिन **(नः)** हमारे **(पितुः)** पिता आदि ने और जिन **(पितामहाः)** पितामह आदि ने **(वसिष्ठः)** अत्यन्त श्रेष्ठ बनकर **(सोमपीयम्)** ऐश्वर्य की रक्षा को **(अनुजहिरे)** निरन्तर स्वीकार किया है। **(संरराणः)** अच्छे प्रकार दान करने वाला **(उशन्)** कामना करने वाला **(यमः)** संयमी संतान **(तेभिः)** उन **(उशद्भिः)** कामना करने वालों के साथ **(हवींषि)** देने–लेने योग्य भोजन को **(प्रतिकामम्)** प्रत्येक कामना में **(अत्तु)** खावें।

भावार्थ– जैसे हमारे पूर्वज वृद्धों ने धार्मिक आचरणों से ऐश्वर्यवान् होकर संतानों से स्नेह किया है वैसे ही सब सन्तान जितेन्द्रिय होकर उत्तम व्यवहारों से उनकी सेवा करती रहे।

आ यात पितरः सोम्यासो गम्भीरैः पथिभिः पितृयाणैः।
आयुरम्मभ्यं वधतः प्रजां च रायश्च पोषरभि नः सचध्वम्।।
अथर्व. १८.४.६२

अर्थ– हे पितरो! प्रियदर्शन आप गम्भीर पितरों के चलने योग्य मार्गों से आओ। हमको जीवन और प्रजा प्रदान करते हुए धन की वृद्धि करते हुए हमको सब ओर से सींचो अर्थात् बढ़ाओ।

यदि विद्वान् पिता, पितामह आदि के अंगों में थकान से कुछ हानि हो रही हो तो गृहस्थ उसका प्रतिकार करके उन्हें प्रसन्न करें।

शुम्भन्तो लोका पितृषदनाः पितृषदने त्वा।
लोक आ सादयामि।। अथर्व. १८.४.६७

अर्थ– **(पितृषदनाः)** पिता की बैठक वाले **(लोकाः)** समाज **(शुम्भन्ताम्)** शोभायमान होवे। **(पितृषदने)** पिता की बैठक वाले **(लोके)** समाज में **(त्वा)** तुझे **(आसादयामि)** मैं बिठाता हूँ।

हम पिता, पितामह की ही सेवा न करें वरन् उनके साथ जो अन्य पुरुष होवें उनकी भी वैसी ही सेवा करें।

एतत् ते प्रपितामह स्वधा ये च त्वामनु। अथर्व. १८.४.७५
एतत् ते पितामह स्वधाये च त्वामनु।। अथर्व. १८.४.७६
एतत् ते तत स्वधा।। अथर्व. १८.४.७७

अर्थ– **(प्रपितामह)** हे दादाजी! **(एतम्)** यहाँ **(ते)** आपके लिए **(स्वधा)** अन्न होवे **(च)** और **(य)** जो **(त्वामनु)** आपके साथ हैं उनके लिए भी अन्न होवें। **(च)** और उनके लिए भी अन्न होवे **(ये)** जो **(त्वामनु)** आपके साथ हैं। **(तत्)** हे पिता! **(एतत)** यहाँ **(ते)** आपके लिए **(स्वधा)** अन्न होवे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद में जीवित माता–पिता, दादा–दादी आदि की अन्न और वस्त्राभूषण से सेवा करने को कहा गया है। **इतिशम्।** ■

कैसे ढूँढ़ूँ कैसे पाऊँ

कैसे ढूँढ़ूँ कैसे पाऊँ, पता बता दे तू मुझे अपना।
अनन्त योनियों में भटका, मिलना रहा सदा इक सपना।।
मैंने सुना है, भीतर में छिप–छिप कर तू बैठा है।
निश्चेष्ट भाव में रहता, हम सबको निहारा करता है।।
तेजस ईश्वर नाम तुम्हारा, किरणों में बिखरा रहता है।
ओजस नाम भी प्रभुवर तेरा, वाणी में समाया रहता है।।
वर्चस नाम अलौकिक है, जग में वर्चस्वी बन छाया है।
कोटि–कोटि प्रभु नाम है तेरे, निज नाम ओ३म् वेद ने गाया है।।
ओ३म् नाम को जपते–जपते हृदय गुहा तक पहुँच गया।
अन्तस में टंकार उठी, मेरे द्वार कोई आया है।।
प्रभुवर अपना हाथ बढ़ाओ, अपनी गोद में मुझे बिठाओ।
मैं अज्ञानी मूढ़ प्रभु, अंगुली पकड़ चलना सिखलाओ।।
मुझमें तुझमें कोई भेद नहीं, दोनों ही प्रभु चेतन है।
आत्म तत्व को जाना जिसने, सत्य चैतन्य को पाया है।।
वेद ऋचाओं के अध्ययन से अन्तस में प्रकाश आया है।
ऋचाओं में रहता हूँ मैं, उसने अपना पता बताया।।
जीवन में ही ऋचाओं को, ऋषि–मुनियों ने आदर्श बनाया।
इसी राह पे चलते–चलते,
जीवन में प्रभु तुझको पाया।।

● **सुश्री आदर्श आर्या**
निकट आर्य समाज साकेत, मेरठ (उ.प्र.)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

वधू चाहिए

सत्यम आर्य

- उम्र – २७
- कद – ५'१०''
- रंग – गेहुआ
- वजन – ७२ किलो
- शिक्षा – MCA, कंप्यूटर साइंस
- व्यवसाय– मेसर्स सत्यम सेल्स एजेंसी
- वर्ण– वैश्य, उपजाती–दोसर वैश्य
- माता– प्रीति कुमारी, बी.ए., सरकारी शिक्षिका
- बहन– सुन्दरम आर्या, २५, एम.एस–सी., पीएच.डी. (अध्ययनरत), योग साइंस, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
- पिता– नन्दलाल गुप्तार्य बी.ए., समाजसेवी,प्रधान– आर्य समाज, संतघाट (बेतिया)
- ताऊ– १ डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, रिटायर्ड प्रोफेसर, MJK कॉलेज,बेतिया
- ताऊ– २–स्व जयप्रकाश गुप्ता, सीनियर मैनेजर, राज्य खाद्य निगम
- ताऊ– ३–गोविन्द कुमार गुप्ता, बी.ई., डायरेक्टर लाइट हाऊस, सेंट्रल गवर्नमेंट
- पता– गंज नं–२, वार्ड नं–१४, बेतिया, जिला–प. चंपारण (बिहार)
- चलभाष नंबर– ९४३०२६२९३५
- **सभी वैश्य व आर्य स्वीकार्य**

वेद का परमचक्षु- ज्योतिष

● गजेन्द्रसिंह आर्य
पूर्व प्राचार्य, वैदिक प्रवक्ता
जलालपुर, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
चलभाष : ९७८३८९७५११,

सूर्य पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रि पाराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिरा।।
लोमशः पौलिषश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिः शास्त्र प्रवर्तकाः।।
(ज्योतिष शास्त्र के १८ प्रवर्तक)
शिक्षाघ्राणं तु वेदस्य, हस्तौकल्पौऽथ पठ्यते, मुख?
व्याकरणं स्मृतं, निरुक्तं श्रौतं मुच्यते।
छन्द पादो तु वेदस्य, ज्योतिषामयनं चक्षु,
तस्मास्त सांगमधि त्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।
वेदाहि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदंकालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।

काल के दो रूप हैं। एक तो प्राणियों का अन्त करने वाला काल और दूसरा है कलनात्मक अर्थात् गणित किया जाने वाला काल यानि समय। सूर्य (कालेश्वर) इस काल का उत्पादक या निर्माता है। ज्योतिष स्वयं उस काल का विधायक शास्त्र है यानि कालगणना ही ज्योतिष का मुख्य प्रतिपादन है। इसी से **वेदाङ्गत्वंज्योतिषस्योक्तमस्मात्** अर्थात् ज्योतिष वेद का अङ्ग सिद्ध होता है। वेदों के स्वरूप की रक्षा हेतु वेदाङ्गों अर्थात् १-शिक्षा, २-कल्प, ३-निरूक्त, ४-व्याकरण, ५-छन्द और ६-ज्योतिष की उत्पत्ति हुयी है। इन ६ वेदाङ्गों के बिना वैदिक मन्त्रों के ऋषिद्रष्ट अर्थ की रक्षा सम्भव नहीं हो सकती है और न यज्ञार्थ कालबोध की पहचान ही। अतः पञ्चाङ्ग ज्योतिष रूपी कालविधायक शास्त्र का एकमात्र उपकरण है। दैनिक व्यवहार में आने वाले क्षण, मुहूर्त, लग्न, प्रहर (याम), तिथिमान, दिनमान, रात्रिमान, दिवसमान, सप्ताह, मास, ऋतु, अयन, वर्ष (संवत्सर) और उनके अन्तर्गत के किसी उत्सव यथा पूर्णिमा, अमावस्या एवं सङ्क्रान्ति आदि का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र से ही होता है।

युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस पुत्र वेदांग (वेदाङ्ग) ज्योतिष मर्मज्ञ आचार्य श्री दार्शनेय लोकेश ने महर्षि दयानंद की अभिलाषा पर केंद्रित वैदिक तिथि पत्रक (श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्) के रूप में प्रकाशित कर भारतवर्ष के पंचाङ्ग जनित ज्योतिर्विदों के मध्य एक हलचल पैदा कर समस्त पंचाङ्गों को रेखांकित कर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। महर्षि दयानन्द के कालखण्ड एवं उपरांत बड़े-बड़े धुरंधर मानस पुत्रों ने महर्षि के मानस पुत्रों के रूप में भारत भूमण्डल के सुदूर भी वेद की बात को बोधगम्य शैली में पहुँचा कर राष्ट्र पर बहुत उपकार किया है। ऐसे एक नहीं, दो नहीं अपितु अनगिनत मातृभूमि के नमनीय विद्वानों ने राष्ट्र पर बहुत बड़ा उपकार किया है यथा चाहे समाज सुधार का कार्य हो, नारी शिक्षा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, पुनर्विवाह, सती प्रथा, दलितोद्धार, अस्पृश्यता, ऊँच-नीच, भेदभाव, भाषा, क्षेत्रवाद, जातिवाद इत्यादि समस्त बुराईयों-कुरीतियों को मिटाने का बेजोड़ कार्य किया है। यहाँ तक कि राष्ट्र को स्वतंत्र कराने में ८५% से अधिक क्रांतिकारी चाहे वह गरम दल से हो या नरम दल से, सभी के सभी महर्षि के विचारों से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में प्रभावित भी थे और प्रकाशित भी।

स्वाधीनता सेनानी दादा भाई नौरोजी, बाल गंगाधर लोकमान्य तिलक, हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, पंडित श्यामजी कृष्ण वर्मा, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, आजाद चंद्रशेखर, बलिदानी शिरोमणि भगत सिंह ऐसे अनेकानेक सपूत सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े और स्वीकार किया कि यदि हम सत्यार्थ प्रकाश ना पढ़ते तो हमें स्वराज्य का कोई बोध नहीं होता। राष्ट्र आज उनके सुकृत्य को नमन कर हृदयाञ्जलि देकर गौरवान्वित है। परंतु वेदांग ज्योतिष पर आज तक महर्षि के बाद किसी का ध्यान नहीं गया। ख्यात् ज्योतिष जो कि वेद का चक्षु है उसे उन्होंने वहीं तक सीमित कर दिया कि जन्मपत्री-शोकपत्री है। महर्षि के अग्रिम विचार की निम्न पंक्ति को नहीं पढ़ा। जहाँ महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेख किया है कि **हाँ, ज्योतिष के गणित पक्ष को जानना आवश्यक है जिसमें अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित एवं सूर्य सिद्धांत जैसे प्रमाणिक, आधारित ज्योतिष ग्रन्थ ही अनुकरणीय हैं।** महर्षि ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए भी लिखा है कि **गणित ज्योतिर्विद का सदैव सम्मान भी होना चाहिए और ऐसे ज्योतिर्विद सत्करणीय भी हैं।**

अतः महर्षि के विचारों को आत्मसात् करते हुए आचार्य श्री दार्शनेय लोकेश ने तिथिपत्रक के रूप में वेद मंत्रों को उद्धृत करते हुए कालगणना से लेकर त्यौहार, पर्व कब और किस तिथि में मनाने से वैज्ञानिक लाभ मिलता है क्रान्तदर्शी ज्योतिर्विद के रूप में कार्य किया है और कर रहे हैं। आज संकल्प पाठ में कहीं एक अरब सत्तानवें करोड़ और कहीं एक अरब छियानवें करोड़ बोला जा रहा है जबकि महर्षि रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऋषिकृत एक हजार चतुर्युगी का वर्णन के आधार पर एक अरब सत्तानवें करोड़ सृष्टि संवत् बनता है। अभी-अभी ८ जून से १६ जून २०२३ तक के ज्योतिष शिविर, गुजरात (रोजड़) से पूर्व परोपकारिणी सभा संग्रहालय में ८७ वर्ष पूर्व शिलालेख पर एक अरब सत्तानवें करोड़ उन्तीस लाख उनपचास हजार उनतालीस, विक्रमाब्दे उन्नीस सौ पिच्चानवें, दयानन्द जन्माब्दे एक सौ चौदह लिखा है। जिसका छायाचित्र भी लेख के साथ संलग्न किया गया है।

श्री ब्रह्मगुप्ताचार्य विरचित ब्राह्मस्फुट सिद्धांत मध्यमाधिकार श्लोक २६ व २७ में गतिकालि ३१७९ के लिए निम्नानुसार सृष्टि संवत् संख्या दी हुई है।

कल्प परार्धे मनवः षटकस्य गताश्चतुर्युगत्रिधराः
त्रीणी कृतादीनी कलेर्गोडगैकगुणः ।।३१७९
(शकान्तेऽब्दाः ॥ २६ ॥)
नवनगशशिमुनिकृत नवयमनगवन्देन्छ्वः १९७२९४७१७९ शकनृपान्ते।
सार्धमतीतमनुनां सन्धिभिराद्यन्तरान्त गतैः ।।२७।।

श्री भास्कराचार्य कृत सिद्धांत शिरोमणि में भी उक्त सृष्टि संवत यथावत् लिखते हैं।

इतिहासकार अलबेरूनी भी एक अरब सत्तानवें लिखता है। ११ वीं शताब्दी में अलबेरूनी (९७३-१०४८) अपनी किताब उल-हिंद में शक् ९५३, विक्रम संवत् १०८८ के लिए सृष्टि संवत् १९७२९४८१३२ लिखता है। उस कालखण्ड का अलबेरूनी भी तारा विज्ञान (खगोल शास्त्री), भूगोल और संस्कृत का उद्‌भट विद्वान था । वैदिक संपत्ति के वर्तमान चिरपरिचित लेखक पं. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा ने कलियुग गताब्द ५०३० में सृष्टि संवत् १९७२९४९०३० लिखा है। ऐसा ही अनेकानेक विदेशी विद्वानों ने भी स्वीकार किया है।

अतः अब आवश्यकता इस बात की है कि महर्षि के विश्वशांति के १० नियमों में २ नियम यह भी हैं कि **'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। साथ ही अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'** महर्षि दयानन्द एक आर्ष तिथि पत्रक निकालना चाहते थे। उन्हें पौराणिक तिथि पत्रकों (पंञ्चांग) पर कुछ संदेह दृष्टिगोचर होने लगा था। इसलिए वे एक विशेष आर्ष पंञ्चांग निकालना चाहते थे । इस कारण वे सुयोग्य संपादक की खोज में भी लग चुके थे। इस संबंध में १८ अगस्त १८८३ को तत्कालीन पत्र **'भारत मित्र'** के संपादक श्री कृष्ण खत्री ने अपने नाम को प्रस्तावित करते हुए स्वामी जी को उनके जोधपुर के पते से पत्र लिखा। तभी कुछ दिनोपरान्त २९ सितम्बर १८८३ को महर्षि को विष दे दिया गया और महर्षि अजमेर भी आ गए थे। इस विष की घटना के कारण अग्रिम कार्य पर विराम लग गया और बात वहीं की वहीं रह गई। यहाँ महर्षि के एक अंतिम अपूर्ण प्रयास पर विराम लग गया। परंतु देर से सही फिर भी उचित समय पर आचार्य श्री दार्शनेय लोकेश ने महर्षि के वेदांग में ज्योतिष के पक्ष को गणित एवं वैज्ञानिक आधार पर कदम उठाकर महर्षि के एक कालगणना खगोलीय पक्ष को वेदानुकूल रखकर महर्षि को नमन करते हुए उनके किए कार्यों को आगे बढ़ाने का कार्य श्लाघनीय एवं वंदनीय है। अतः हम सब माँ भारती के सपूत संस्कृत, संस्कृति के संवर्धन हितार्थ श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् को स्वयं अपनाकर समाज एवं राष्ट्र पर सत्यार्थ का पुरुषार्थ के साथ संकल्प लेकर ज्योतिष के गणितीय पक्ष को सशक्त कर ऋषियों की परंपरा के संवाहक बनें।

हम सभी श्री मोहन कृत आर्ष पत्रकम् को सत्य एवं असत्य के आधार पर अपनाकर अपने समस्त पर्व और शुभ कार्यों को गणित ज्योतिष के आधार पर ही मनाने का प्रयास करें। जिससे हमें सत्यासत्य का ठीक बोध हो सके। हमारे बीच से ही आर्य तिथि पत्रक के रूप में आचार्य श्री दार्शनेय जी ने जो अनुपम और अद्भुत कार्य किया है और कर रहे हैं। उनको सभी लोगों के साथ-साथ आर्य समाज से जुड़े हुए महानुभाव इस ओर विशेष ध्यान देंगे। जिससे गणित ज्योतिष का मंतव्य अपने वैदिक गंतव्य तक पहुंचे।

श्वासों का उद्देश्य कर्म है, थक कर क्यों मर जाएँ।
और मरने से पहले कुछ कर लें, याद सभी को आएँ।। ■

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

भारत के सभी शिक्षक भाई-बहनों को सादर कोटिशः प्रणाम।
आप सभी के भागीरथी प्रयासों से, भावी पीढ़ी सुख पाती आठों याम।।
आप विद्यार्थी को मित्र सन्तान समझ, शिक्षा देते सुबह-शाम।
ईश्वर आप सभी को सदा सुखी बनाए, यश छाये चारों धाम।।
आप सभी निरोग वैभव सुख समृद्धि, सहित हो आयुष्मान।
छात्र-छात्राओं के भविष्य निर्माता हो, विद्यादान है महादान।।
भारतीय संस्कृति का सदा, करो समुचित विकास उत्थान।
आपके श्रम साहस लक्ष्य, सबके मनोरथ पूर्ण करे भगवान।।
आप सभी आदर्श युग ऋषि, गुणी मानवता के पुजारी हो।
सन्त शहीद समाज सुधारकों के, सपने सदा साकार हो।।
आपके करकमलों से, भारत माँ का अहल शृंगार हो।
भावी पीढ़ी बने सन्त सूरमा दानी कर्मठ, सभी राष्ट्र निर्माणी हो।।
सबके हिय में भर दो देशप्रेम, एकता अखण्डता स्वदेशी सम्मान।
शिक्षक ही शिक्षा दीक्षामय देकर दे सकता है आत्मज्ञान।।
वैदिक गुरुकुल प्रणाली सुसंस्कारित शिक्षा, हरती है अज्ञान।
सभी को शिक्षक दिवस की भाव भरी शुभकामनाएँ,
बढ़ाओ हिन्द की शान।।

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९१२६७६११४३

सर्व हितकारी आर्य समाज के १० नियम का काव्यानुवाद

सत्य विद्या से जाना जाए
आदि मूल वह दाता है।
अनन्त दयालु अजर व नित्य
सर्वेश्वर कहलाता है।
करें उपासना उसकी हरदम
उससे न कोई ऊपर है।
रखें मन में सदा उसी को
जीना फिर कहाँ दूभर है।
सत्य विद्या की एक ही पुस्तक
चार वेद कहलाते हैं।
परम धर्म यह सब आर्यों का
पढ़ते और सुनाते हैं।
हमको उद्यत रहना होगा
असत्य को बिसराने में।
फिर होगा उद्धार सत्य से
तुझसे लगन लगाने में।

एक उद्देश्य आर्य समाज का
दुनिया का उपकार करें।
चहुँ दिशा में होगी प्रगति
फिर न कोई पाप करे
करें हमेशा धर्म का पालन
प्रीति पूर्वक व्यवहार करें।
सदा होगी विद्या की वृद्धि
अविद्या पर प्रहार करें।
नहीं बनें हम इतने स्वार्थी
बस अपनी उन्नति चाहें।
जिम्मेदारी की खातिर हम
फैलाएँ अपनी बाहें।
तेरे सम्मुख हाथ जोड़ते
नियम पालें परतंत्र रहें।
हर हितकारी नियम निबाहें
फिर स्वयं को स्वतंत्र कहें।

● **पुष्पा शर्मा**
मोदी नगर, जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलभाष : ९०४५४४३१४१

एक शताब्दी पूर्व मोपला काण्ड में बलि होने वाले धर्मवीरों की स्मृति में

शताब्दी पूर्व का विस्मृत एक नृशंस हिन्दू नरसंहार

(गतांक पृष्ठ ३० से आगे)

● **जगदीशप्रसाद आर्य**
गिरदौड़ा (नीमच) (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९६१५३४२

केन्द्रीय धारा सभा में एक प्रश्न के उत्तर में सर विलियम ने बताया था कि **''मद्रास सरकार ने (तब केरल मद्रास प्रान्त का ही भाग था) रिपोर्ट दी है कि जबरन धर्म परिवर्तन के शायद हजारों मामले हुए हैं, परन्तु जैसा कि स्पष्ट है, बिलकुल सही अन्दाजा लगाना कभी सम्भव नहीं होगा।''** (डिबेट्स १६ जनवरी १९२२) परन्तु कांग्रेस कार्य समिति ने मोपला काण्ड पर अति सावधानी बरतते हुए अपने प्रस्ताव में धर्मान्तरण के केवल तीन मामले माने। उन पर दु:ख प्रकट किया, उकसावे पर न जाने का अनुरोध किया, सरकारी रिपोर्ट के एकतरफा होने का और मोपलों की गलतियों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताने का दोष लगाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली।

अत्याचारों को अनदेखा कर महात्माजी किस प्रकार मोपलों का बचाव कर रहे थे? जानने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के साप्ताहिक पत्र लिबरेटर का जुलाई १९२६ का लेख देखिए- **''एक और महत्वपूर्ण तथ्य की ओर मैं गाँधीजी का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। एक रात हम दोनों इकट्ठे नागपुर की खिलाफत कॉन्फ्रेंस में गए। उस मौके पर मौलानाओं ने कुरान की आयतें पढ़ीं जिनमें बार-बार जिहाद और काफिरों को मारने का आदेश था। जब मैंने उनका ध्यान खिलाफत आन्दोलन के इस पहलू की ओर दिलाया तो महात्माजी मुस्कुराए और कहने लगे कि वे ब्रिटिश नौकरशाही की ओर इशारा कर रहे हैं। उत्तर में मैंने कहा– यह सब तो अहिंसा के विचार का विनाश करने जैसा है और जब मुस्लिम मौलानाओं के मन में उल्टी भावनाएँ आ ही गई हैं तो उन्हें इन आयतों का इस्तेमाल हिन्दुओं के विरुद्ध करने से कोई नहीं रोक सकेगा।''**

अब राष्ट्रवादी मुस्लिमों के रवैये पर भी एक नजर डालिये। स्वामी श्रद्धानन्द ने लिबरेटर के २६ अगस्त के अंक में लिखा– ''विषप समिति द्वारा हिन्दुओं पर मोपलाओं के अत्याचारों की निन्दा करने का प्रश्न आने पर पहली बार चेतावनी दी गई थी। मूल प्रस्ताव में हिन्दुओं की हत्याओं, हिन्दू घरों को जलाने और हिन्दुओं का जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन करने के लिए सारे मोपला लोगों की निन्दा की गई थी। हिन्दू सदस्यों ने स्वयं ही इसमें इतने संशोधन प्रस्तुत किये कि अन्तत: इन अपराधों के लिए कुछ थोड़े से व्यक्तियों की निन्दा की जा सकी। परन्तु कुछ मुस्लिम नेताओं से इतना भी सहन नहीं हुआ। मौलाना फकीर और कुछ अन्य मौलानाओं ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और इससे मुझे कोई आश्चर्य भी नहीं हुआ। पर मुझे तो आश्चर्य तब हुआ जब मौलाना हसरत मोहानी जैसे पूरे राष्ट्रवादी नेता ने भी इस आधार पर प्रस्ताव का विरोध किया कि 'मोपला इलाका अब दारूल अमन नहीं रहा बल्कि दारूल हरब बन चुका है और उन्हें हिन्दुओं पर इस बात का शक था कि मोपलों के दुश्मन अंग्रेजों से मिले हुए हैं। इसलिए मोपलों ने यह ठीक ही किया कि हिन्दुओं के सामने कुरान या तलवार का विकल्प रखा। इसलिए यदि हिन्दू अपने आप को मौत से बचाने के लिए मुसलमान बन गए तो इसे स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कहा जाएगा न कि जबरन धर्म परिवर्तन। और इतना सरल प्रस्ताव भी जिसमें केवल कुछ मोपलाओं की निन्दा की गई थी, सर्वसम्मति से पास नहीं हो सका बल्कि बहुमत से पास हुआ।''

इस्लाम की अछूतों पर गिद्ध दृष्टि

उपर्युक्त उद्धरणों से परिस्थिति की भयानकता का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। वहाँ अत्याचारों के शिकार सवर्ण हिन्दू ही नहीं हुए अपितु बिना भेद अछूत और सवर्ण सभी समान रूप से हुए। अस्पृश्यता समस्या पर स्वामी श्रद्धानन्द ने ३० नवम्बर १९२६ के लिबरेटर में लिखा– **''अस्पृश्यता उन्मूलन के विषय में कई बार अधिकृत रूप से बताया जा चुका है कि हिन्दुओं का कर्तव्य है कि वे अपने पिछले पापों का प्रायश्चित करें और गैर हिन्दुओं का इससे कुछ लेना–देना नहीं होना चाहिये, परन्तु मुस्लिम और ईसाई कांग्रेसियों ने बेकौम और कई अन्य स्थानों में इस बारे में गाँधीजी के आदेश का खुला उल्लंघन किया है। याकूब हसन जैसे निष्पक्ष नेताओं ने भी मद्रास में मुझे मानपत्र देने के लिए बुलाई गई सभा की अध्यक्षता करते हुए खुलेआम मुसलमानों का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें सारे अछूतों का धर्म परिवर्तन करके इस्लाम में शामिल कर लेना चाहिए।''**

आर्य समाज को यह गौरव प्राप्त है कि अपने स्थापना काल से ही राष्ट्र की हर एक विपत्ति में सेवा के लिए आगे आता रहा। मालाबार में भी ज्ञात होते ही महात्मा हंसराज के साहस से यथाशीघ्र सेवा केन्द्र खोलकर हर सम्भव सहायता पहुँचाई गई। इस सेवा से प्रत्यक्ष जुड़े शास्त्रार्थ महारथी पं. देवप्रकाश जी अमृतसरी, जो उस कठिन समय में नित्य जुलूस निकालते और धन संग्रह कर मालाबार भेजते रहे, उन्होंने **'आर्य समाज के सेवाकार्य'** नामी ट्रेक्ट में मोपला काण्ड का भी उल्लेख किया है और सेवा कार्यों का विवरण दिया। उसके चयनित अंश पण्डितजी के शब्दों में ही देते हैं–

''कांग्रेस की तरफ से कड़ी पाबन्दी थी कि मालाबार के फिसाद, लूटमार आदि की कोई खबर किसी समाचार पत्र में न छप सके। कांग्रेस का बड़ा सेंसर था। लूटमार और कत्ल होते कई दिन गुजर गए, किसी को पता न लग सका कि मालाबार में हिन्दुओं का विनाश किया गया

है। सन् १९२२ के अन्तिम दिन थे कि महात्मा हंसराज जी को एक लम्बा तार (टेलीग्राम) बम्बई से आया कि आपको पता नहीं, मालाबार के हिन्दुओं का विनाश मुसलमानों ने कर दिया है। तार के शब्द बड़े दर्दनाक थे। महात्मा हंसराज जी ने तार पढ़ा। लिखा है– महात्माजी को रात भर नींद नहीं आई। प्रात:काल उठकर सबसे पहले महात्माजी ने पण्डित ऋषिराम और पण्डित मस्तानचन्द को मालाबार रवाना कर दिया और कुछ स्वयं सेवक भी भेजे। लाला खुशहालचन्द जी (म. आनन्द स्वामी) बाहर थे। उनको वहाँ ही तार दे दिया कि वह लाहौर न आकर सीधे मालाबार चले जाएँ। फिर प्रोफेसर ज्ञानचन्द मेहता और सावनमल दत्त और उनके साथ और भी सेवक भेजे, जिन्होंने जाकर देखा कि मालाबार वीरान पड़ा है। इन सेवकों ने जाकर कुछ सहायता केन्द्र खोले। जो हिन्दू जंगलों में भाग गए थे, सबसे पहले उनकी तलाश शुरू की। उनमें से कुछ तो मर भी गए थे। जो जीवित थे उनको केन्द्रों में रखा और जहाँ भी पता लगा कि भागकर हिन्दू छिपे हैं उन सबको लाया गया। फिर उन लोगों की तलाश शुरू की जिनको बलात मुसलमान बनाया गया था। उनको बड़ी मुश्किल से लाया गया। वे इतने भयभीत थे कि आने को तैयार नहीं होते थे। उनको अच्छी तरह विश्वास दिलाया गया कि अब मुसलमान तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते। जहाँ तक सम्भव था उन सबको जमा किया। एक बात तो लिखना अत्यन्त आवश्यक है कि इस अवसर पर श्री पूज्य मदनमोहन मालवीयजी ने आर्य समाज की बड़ी सहायता की। बड़े–बड़े पण्डितों से व्यवस्थाएँ लिखवाकर भेजी कि जिन हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाया गया है वे पुन: शुद्ध होकर हिन्दू बन सकते हैं। जिनका बहुत बड़ा प्रभाव हिन्दुओं पर पड़ा और शुद्ध हुए हिन्दुओं को हिन्दू मानने के लिए तैयार हो गए। आर्य समाज ने कई सहायता केन्द्र खोले थे। एक केन्द्र में ४५०० स्त्रियाँ और बच्चे थे। ऐसे और भी केन्द्र थे। वहाँ दो कुएँ हिन्दुओं के सिरों से भरे देखे। पता लगा कि मुसलमान उन कुओं पर हिन्दुओं का लाकर खड़ा कर देते और पूछते– मुसलमान होता है या नहीं? उसने इनकार किया 'नहीं', तो तलवार से सिर काटकर गर्दन कुएँ में डाल देते। अर्थात् इस प्रकार खड़ा करते कि तलवार मारने से उसकी गर्दन कुएँ में जा पड़े।

ठेठ उत्तर भारत पंजाब के स्वयं सेवकों को धुर दक्षिण मलयालम भाषी केरल जैसे अनजान क्षेत्र में भाषा की समस्या से जूझते हुए सेवा कार्य करना भी असाधारण काम था। खैर! अंग्रेज सेना ने तब तो विप्लव दबाकर अंग्रेजी राज को स्थिरता प्रदान कर दी पर पच्चीस वर्ष पश्चात् अंग्रेजों ने जैसे ही भारत से बोरिया–बिस्तर बाँधना तय किया, लगाम ढीली छोड़ दी और मोपला काण्ड के चौथाई शताब्दी पर इस्लामिक स्टेट (दारूल इस्लाम) का स्वर साकार होकर पाकिस्तान का उदय हो गया। पर उनकी पूरी साध तो सारी दुनिया को दारूल इस्लाम बनाना है और इसके लिए वे अनेक मोर्चों पर अनवरत लगे हुए हैं। इसलिए तो–

भल चाहो तो चेत हू, आय लगी है नाव।
बार–बार पछताहुगे, बहुरि न ऐसो दाँव।। –कबीर

इस लेख की मुख्य सहायक सामग्री बाबा भीमराव अम्बेडकर की पुस्तक **'पाकिस्तान ऑफ पार्टिशन'** के हिन्दी संस्करण **'पाकिस्तान अथवा भारत विभाजन'** से संकलित की है। बाबा का आभार। ■

पुस्तक परिचय

संस्कृत में नवाचार

लेखक : डॉ. आशुतोष पारीक
प्रकाशक : साहित्यागार, धामाजी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
मूल्य : २०० रु. , **पृष्ठ संख्या :** ९५

हमारी प्राचीन आर्य भाषा संस्कृत थी। आज भी उसी अनुरूप चल रही है। समय परिवर्तनशील है। अनेक भाषाओं का प्रादुर्भाव हुआ। संस्कृत को गौरव मिलना था वह आज के युग में नहीं मिल पाया। संस्कृत भाषा से हमारी आत्मीयता व स्वाभिमान होना परम आवश्यक है। संस्कृत को वही स्थान मिले इसके लिए अथक प्रयास हों। आज संस्कृत में नवाचार की आवश्यकता है। इसके आधार पर संस्कृत के प्रति रुचि एवं भाषा का महत्व भी स्थापित होगा। नवाचार के कारण बालकों में, सभी में एक नए संचार की स्थापना होगी। बच्चे आत्मनिर्भर होंगे। देश में नहीं अपितु विश्व में संस्कृत भाषा के प्रयोग और शिक्षण के लिए नए आयामों की आवश्यकता है। भाषाविज्ञ इस पर चर्चा व चिन्तन–मनन करने में लीन हैं। आज नवाचारों ने संस्कृत को एक नई दिशा एवं ऊर्जा प्रदान की है।

लेखक का भी चिन्तन है कि संस्कृत भाषा का विकास हो। नवाचारों, कार्य प्रणाली को महत्व देकर आज की परिस्थिति अनुकूल उत्तम बनाई जाए और जनमानस में आत्मीयता भाषा के प्रति उत्कंठा, आकर्षण बढ़े। इसके लिए अलग–अलग संकेत दिये हैं। प्रथम अध्याय में **'नया युग : नई संस्कृत'** में संस्कृत भाषा की सभी कालों में महत्ता है। साथ ही अभिनव प्रयोग किस प्रकार किये जाएँ। द्वितीय अध्याय में **आज के युग में संस्कृत की स्थिति क्या है?** इस पर मंथन किया गया है। सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय में संस्कृत भाषा में शिक्षण हेतु वैज्ञानिक विधियों पर, नवाचार पर विश्लेषण कर समालोचना का प्रारूप प्रस्तुत किया है। चतुर्थ अध्याय में नवाचार में संस्कृत भाषा दक्षता संवर्धन है। इस समय नवाचारों का विश्लेषणात्मक समालोचना को स्पष्ट किया गया है। वर्तमान में नवाचारों का क्या प्रभाव व उपादेयता किस प्रकार सम्भव है, प्रभावी रूप से अपने स्तर से समझाया है। पाँचवें अध्याय में संस्कृत भाषा की दक्षता हेतु ठोस कदमों पर चर्चा की गई है। इससे आने वाले युग में संस्कृत प्रचार–प्रसार किन–किन प्रयत्नों के साथ प्रेरक मार्ग किस प्रकार सम्भव है, भली प्रकार सरल, सहज रूप में समझाने का प्रयत्न किया गया है। अन्त में संस्कृत सम्भाषण, शिविर, दस दिवसीय पाठ्यक्रम, अनेक नवाचारों की सूची भी प्रस्तुत की है। इसके साथ–साथ लेखन, सहायक ग्रन्थों की सूची भी दी गई है। लेखक का प्रयास उत्तम है। अत: संस्कृत की रुचि रखने वाले सभी गणमान्य पुस्तक आद्योपान्त अध्ययन करें और लाभ उठावें। लेखक का साधुवाद।

–देवमुनि
परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर
चलभाष : ७७४२२२१३२७

राजनैतिक विश्लेषण

अल्पसंख्यक तुष्टिकरण नीति से राष्ट्रीय अस्मिता व संस्कृति को खतरा!

● **डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'**
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

कांग्रेस व देशभर के सभी विपक्षी राजनैतिक दलों द्वारा दो समुदाय को अल्पसंख्यक तुष्टिकरण व अन्य को जातिवाद, सम्प्रदायवाद, बहुसंख्यकवाद के रूप में बाँट दिया गया है तथा इस विष को और अधिक फैलाया जा रहा है और भारतीयता के परिप्रेक्ष्य में देश की संस्कृति को बदनाम करने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। जबकि अल्पसंख्यक कौन है, क्या है, किसलिए यह हो रहा है? इसके मूल में भी जाने व जानने की आवश्यकता है, वास्तविकता यह है कि लोकतन्त्र में अल्पसंख्यक न कोई है और न ही इसकी कोई जरूरत थी, अल्पसंख्यक को ढाल बना कर राजनैतिक रोटियाँ सेंकने का षड्यन्त्र देश की स्वतन्त्रता के पूर्व तथा बाद में विगत अनेक वर्षों से चलाया-बढ़ाया जा रहा है, उनको अल्पसंख्यक कह-कहकर बहुसंख्यक बना दिया गया और बौद्ध, जैन, सिक्ख, पारसी वास्तव में जो अल्पसंख्यक थे वे वहीं के वहीं दिख रहें हैं। यही कारण है कि अल्पसंख्यक कहे जाने वाले लोग कुछ प्रान्तों में बहुसंख्यक होकर भी अल्पसंख्यक का लाभ उठा रहे हैं इसमें वे लोग भी हैं जो बांग्लादेश,अफगानिस्तान,पाकिस्तान से आकर घुसपैठियों के रूप में इस देश में नागरिकता प्राप्त कर चुके हैं अथवा प्राप्त करने हेतु प्रयासरत हैं, इस खेल में इस देश के बहुसंख्यक समाज को जातिवाद, सम्प्रदायवाद के विष में डुबोकर अल्पसंख्यक की श्रेणी में बनाया जा रहा है। अल्पसंख्यक कौन है? क्या संवैधानिक स्थिति है? आज़ादी के ७५ वें अमृत महोत्सव के बाद भी अल्पसंख्यक कौन हैं? इसको न तो संविधान में परिभाषित किया गया और न ही किसी अन्य कानून में। संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार- 'Any group of community which is economically, politically non-dominant and inferior in population.' अर्थात् ऐसा समुदाय जिसका सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से कोई प्रभाव न हो और जिसकी आबादी नगण्य हो, उसे अल्पसंख्यक कहा जाएगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद २९, ३०, ३५०-ए तथा ३५०-बी में 'अल्पसंख्यक' शब्द का प्रयोग किया गया है लेकिन इसकी परिभाषा कहीं नहीं दी गई है।

१९९२ के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम की धारा २ (सी) के तहत २३ अक्टूबर १९९३ को सरकार द्वारा जारी अधिसूचना में पाँच समुदायों मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी तथा बौद्ध को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में मान्यता दी गई। २०१४ में जैन समुदाय को भी अल्पसंख्यक की श्रेणी में शामिल किया गया, लेकिन जिनको अल्पसंख्यक कहा जा रहा है उनमें मिज़ोरम, मेघालय और नागालैंड ईसाई बहुसंख्यक राज्य हैं और अरुणाचल, गोवा, केरल, मणिपुर, तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल व कश्मीर में मुस्लिम आबादी बहुसंख्यक में है फिर भी उन्हें अल्पसंख्यक माना जाता है।इसी तरह पंजाब में सिख बहुसंख्यक हैं तथा दिल्ली, चण्डीगढ़ और हरियाणा में इनकी पर्याप्त आबादी है फिर भी इन्हें अल्पसंख्यक माना जाता है। १९४७ में देश के विभाजन के दौरान मुस्लिम समुदाय के अधिकांश लोग पाकिस्तान चले गए थे और भारत में इनकी संख्या बहुत कम रह गई। यह भी षड्यन्त्र रचते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने यह कहा कि ऐसा न हो कि हिन्दुओं की बहुसंख्यक आबादी के कारण यहाँ केवल हिन्दुओं की ही सरकार बने और वह अल्पसंख्यकों के त्योहारों या उनके रीति-रिवाज़ का पालन करने पर कोई रोक लगा दे, जिसके बाद अनुच्छेद २९ और ३० में कहा गया कि भारत में जो अल्पसंख्यक हैं उनको अपने रीति-रिवाज़ तथा धर्म का पालन करने का अधिकार होगा, जबकि लोकतन्त्र में इसकी जरूरत ही नहीं थी। देखा जा सकता है कि देश के लक्षद्वीप में ९६.२०% और जम्मू-कश्मीर में ६८.३०% मुसलमान हैं, जबकि असम ३४.२०%, पश्चिम बंगाल २७.५%, केरल २६.६०%, उत्तर प्रदेश १९.३०% और बिहार १८% में बहुसंख्यक समुदाय के रूप में जनसंख्या है फिर भी इन्हें अल्पसंख्यक की मान्यता व लाभ मिले हुए है, दूसरी ओर बौद्ध, जैन, पारसी, सिख आदि जो वास्तविक रूप से अल्पसंख्यक हैं, राज्य स्तर पर अल्पसंख्यक का दर्जा प्राप्त न होने के कारण लाभ से वंचित हैं। लक्षद्वीप में मात्र २% हिन्दू हैं लेकिन वे वहाँ अल्पसंख्यक न होकर बहुसंख्यक हैं और ९६% प्रतिशत आबादी वाले मुसलमान अल्पसंख्यक हैं और अल्पसंख्यक कल्याणकारी सुविधाएँ प्राप्त कर रहें है।

और देखिए इन अल्पसंख्यकों के कल्याण और विकास के लिये नीतियाँ तैयार करने के लिए अल्पसंख्यक आयोग का निर्माण भी किया गया है, अल्पसंख्यक वर्ग के व्यक्तियों को अधिकाधिक लाभ पहुँचाने की दृष्टि से विभिन्न शैक्षणिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास के कार्यक्रम तैयार करना आयोग का कार्य निर्धारण है, इसके अलावा अल्पसंख्यक कल्याण वर्ग के लोगो को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में प्रभावी उपाय करना, अल्पसंख्यकों के शैक्षणिक, सामाजिक तथा आर्थिक उत्थान के लिये विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन, आत्मविश्वास बढ़ाने के लिये स्वैच्छिक नवोत्थान की योजना का क्रियान्वयन, जाति प्रमाण पत्र प्राप्त करने की प्रक्रिया का सरलीकरण, परम्परागत तकनीकी एवं औद्योगिक क्षेत्र में शिक्षा हेतु डिप्लोमा, डिग्री का प्रावधान कर इन उपाधियों को हर क्षेत्र में मान्यता देना, अल्पसंख्यकों के सामाजिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिये प्रत्येक क्षेत्र में विशेष प्राथमिकता प्रदान करना, अल्पसंख्यक रुप से कमजोर लोगो की

कन्याओं के लिये जिला स्तर पर छात्रावास का निर्माण तथा उच्च शिक्षा के लिये विद्यार्थियों को शिक्षण सुविधायें एवं छात्रवृत्ति प्रदान करना, मस्जिद, दरगाहों, वक्फ बोर्ड के अधीन सम्पत्तियाँ एवं गुरुद्वारे, चर्च इत्यादि भूमि/भवनों का सर्वेक्षण कर अवैध कब्जों को हटाना, वक्फ संपत्तियों का उपयोग अल्पसंख्यकों के हित में करना, उर्दू भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिये उचित प्रयास करना तथा प्रदेश के अल्पसंख्यक साहित्यकारों को सम्मानित करना, इसके अतिरिक्त अनेक योजनाएँ विशेष अल्पसंख्यकों के लिए चलाई जा रही है।

देश में अल्पसंख्यक के नाम से जो किया जा रहा है वह जगजाहिर है। पूरी दुनिया में देखें तो ये अल्पसंख्यक नहीं है क्योंकि विश्व में मुस्लिम आबादी लगभग १.६ बिलियन है, जो वैश्विक आबादी का लगभग २३% है और भारत में २०.५४ करोड़ व घुसपैठीये शरणागत अलग है। ईसाईयों के बाद मुसलमान दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समूह है। अधिकांश मुसलमान एशिया और मध्य पूर्व में रहते हैं, इंडोनेशिया में दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी है। इसी प्रकार इस देश में ईसाई अल्पसंख्यक हैं जिनके विश्व में लगभग २.४ अरब अनुयायी हैं, जो कि लगभग ७.२ अरब लोगों में से हैं। दुनिया की लगभग एक-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करते है और विश्व में सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें कैथोलिक चर्च, प्रोटेस्टेंटिज़्म और पूर्वी रूढ़िवादी चर्च होने वाले ईसाई में तीन सबसे बड़े समूह हैं। विश्व की कुल जनसंख्या में लगभग १५-१६% हिन्दू धर्म के अनुयायीजन हैं। कुल जनसंख्या के प्रतिशत के नेपाल में सर्वाधिक ८२% हिन्दू हैं, उसके बाद भारत ८०.३% तथा मॉरिशस ४८.५% में सर्वाधिक हिन्दू हैं। दुनिया में कुल हिन्दू अनुयायी १.२ अरब हैं जिनमें से १.१० करोड़ हिन्दू अकेले भारत में रहते हैं।

यह आंकड़े सचेत करते हैं कि अल्पसंख्यकों के नाम से देश में जनसंख्या वृद्धि करते हुए बहुसंख्यक बनाने का युद्ध स्तर पर षड्यन्त्र रचा जा रहा है और जहाँ-जहाँ कांग्रेस की सरकारें हैं वहाँ-वहाँ अल्पसंख्यक तुष्टिकरण से उनको प्रोत्साहित किया जा रहा है साथ में धार्मिक भावनाओं से यहाँ की संस्कृति को लुप्त करने की योजनाएँ बनाने में भी कामयाब हो रहे हैं। इसलिए राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि अल्पसंख्यक के नाम पर केवल दो समुदायों को मिलने वाली सुविधाएं व अल्पसंख्यक आयोग को बन्द कर देना चाहिए साथ में भारतीय संविधान के अनुच्छेद २९, ३०, ३५०ए तथा ३५०बी में 'अल्पसंख्यक' शब्द को हटा देना चाहिए, समान नागरिक संहिता, जनसंख्या नियन्त्रण कानून, देशद्रोह कानून, सी ए ए, एन आर सी ए को तत्काल लागू किया जाना चाहिए, तभी पश्चिम बंगाल के दंगे-हिंसा और बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान से आने वाले घुसपैठियों को रोकने तथा मिज़ोरम, मेघालय और नागालैंड में एक ही समुदाय के अल्पसंख्यक नाम के बहुसंख्यक राज्य और अरुणाचल, गोवा, केरल, मणिपुर, तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल, कश्मीर में अल्पसंख्यक के नाम पर बढ़ती आबादी की विभीषिका और पंजाब में खालिस्तानियों को रोकने में सफल हो सकते हैं व देश को सुरक्षित कर पायेंगे, नहीं तो आने वाला कल फ्रांस ताण्डव से भी भयंकर हो सकता है और यही अल्पसंख्यक भविष्य में देश के विभाजन की मांग करेंगे। ■

स्वाध्याय साधना तृतीय शिविर का सफल आयोजन सम्पन्न
दिनांक : ५ से ९ जुलाई २०२३

पूज्य स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी की अध्यक्षता में दर्शन योग महाविद्यालय 'महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया' सुन्दरपुर, रोहतक द्वारा स्वाध्याय साधना शिविर का आयोजन किया गया , जिसमें पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी के साथ-साथ पूज्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी, आचार्य योगेश वैदिक जी, आचार्य प्रबुद्धदेव जी के द्वारा उत्तम रीति से अध्यापन कराया गया। इस शिविर में गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, हरियाणा आदि अनेक राज्यों से लगभग ६० शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविराध्यक्ष जी के द्वारा योग दर्शन और न्याय दर्शन का अध्यापन एवं शंका समाधान की कक्षा ली गई। गुरुकुल के आचार्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी के द्वारा प्रात:काल शिविरार्थियों को ध्यान प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें ईश्वर के ध्यान और आत्मा, प्रकृति के चिंतन को भी क्रियात्मक रूप से सिखाया-बताया गया है, वेद प्रवचन और सांख्य दर्शन का परिचय भी कराया गया।

आचार्य योगेश वैदिक जी द्वारा प्रतिदिन यज्ञ प्रशिक्षण कराया गया एवं मानव संविधान मनुस्मृति के आधार पर गृहस्थों को पंच महायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्व देवयज्ञ और अतिथि यज्ञ) के विषय में विस्तार से बताया गया है, हमने कितनी उन्नति की हम कौन हैं? कहाँ से आए हैं? क्या करना है? इन विषयों पर आत्मनिरीक्षण कराया गया। आचार्य प्रबुद्ध जी के द्वारा शिविरार्थियों को वर्णोच्चारण शिक्षा का पाठ कराया गया एवं शिविर में साधकों से श्रमदान व दिनचर्या पालन के संस्कार बनाने का कार्य भी किया गया। इस शिविर में सभी साधकों ने अपनी वैदिक दिनचर्या का पालन किया, दिनचर्या में ज्ञान, कर्म और उपासना का आदर्श समन्वय किया गया।

८ जुलाई २०२३ को शिविरार्थियों ने अपने शिविर के अनुभव साझा किए। सबने बहुत अच्छा अनुभव किया। जिसमें मुख्य बिन्दु इस प्रकार से है।

१. सभी अध्यापकों ने बहुत ही सरल स्पष्ट शैली से अध्यात्म के गूढ़ विषयों को समझाया।
२. योग का क्रियात्मक स्वरूप समझाया।
३. जीवन से सम्बन्धित अनेक शंकाओं-समस्याओं का समाधान प्राप्त हुआ।
४. स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी से बहुत से तनाव को शान्त कर देने वाला सूत्र **'कोई बात नहीं'** और **'ईश्वर न्याय करेगा'** प्राप्त हुआ।
५. स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी से ईश्वर की ओर तीव्रता से बढ़ाने में सहायक सूत्र **'हे ईश्वर! मैं यह कार्य आपको प्राप्त करने और कराने के लिए करने जा रहा हूँ। इस कर्म को और इसके कर्मफल को भी आपको अर्पित करता हूँ।'**
६. आवासीय व्यवस्था अति उत्तम की गई।
७. भोजन शुद्ध सात्विक पौष्टिक दिया गया है।
८. आयोजकों का हमारे (शिविरार्थियों) के प्रति विशेष स्नेह आत्मीयता के भाव ने हमको प्रेरित किया है।
९. ब्रह्मचारियों के पुरुषार्थ और सेवा भाव से हम प्रभावित हुए हैं।
१०. आगे भी इस प्रकार के शिविरों में आते रहेंगे और अन्यों को भी प्रेरित करेंगे।

दिनांक ९ जुलाई २०२३ को इस शिविर का समापन समारोह हुआ। इस पूर्णाहुति कार्यक्रम में अनेक आर्य सज्जन सपरिवार, इष्ट मित्र बन्धुओं के साथ कार्यक्रम में पहुँचे एवं कार्यक्रम का लाभ उठाया।

सूचना प्रसारक - ब्रह्मचारी प्रविन्द्र आर्य

इस्लाम मुक्त भारत-ISLAM FREE INDIA (IFI)

● राधाकिशन रावत
१००६, जीवाभाई टॉवर,बोकड़देव, अहमदाबाद (गुजरात)
चलभाष : ९४२८५९४०५७

हम क्या थे? क्या हो गए?? और क्या होते जा रहे हैं??? मेरा आपश्री से विनम्र निवेदन है कि थोड़ा समय निकालकर इन प्रश्नों पर कृपा कर गंभीरता से विचार करें। यह हमारे–आपके अस्तित्व का प्रश्न है।

इस लेख का मुख्य उद्देश्य निकट भविष्य में इस्लाम रूपी राक्षस द्वारा रचित भयंकर साजिश के विरुद्ध चेतावनी देना है। इस लेख का लक्ष्य समस्त देशप्रेमी, समाज–प्रेमी, गैर–मुस्लिम (आर्य, हिन्दू, सिख, बौद्ध, पारसी आदि) को जागरूक करना है कि कैसे उनका अस्तित्व अत्यन्त संकट में है और क्या सम्भव उपाय किये जाएँ? अत: कृपया लेख का गम्भीरता से अध्ययन करें, समझें, विचारें और खतरे के निवारण हेतु तैयारी में जुट जाएँ।

भूतकाल का स्मरण कर, वेदों के उत्कृष्ट ज्ञान–विज्ञान से सज्जित हम अपने आपको आर्य (सर्वश्रेष्ठ), उच्च सभ्यता संस्कृति से सर्वोत्तम, आर्थिक समृद्धि से सोने की चिड़िया, आदर्श सामाजिक व्यवस्था से राम राज्यीय, सर्वे भवन्तु सुखिन:, अजेय होने से विश्वगुरु की उपाधि से सुशोभित करते थे, आदि। पर वर्तमान अधोगति के कष्टपूर्ण चित्र से हम सब भलीभाँति परिचित हैं। दीनता, हीनता, गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, ऊँच–नीच, जात–पात, निष्क्रियता, भाग्यवादी, सामाजिक असमानता भ्रष्टाचार आदि ही हमारा परिचय रह गया है। विदेशी आतताइयों के अनगिनत आक्रमण, लूटपाट, धर्म परिवर्तन, महिलाओं का शोषण, बलात्कार, अपमान, लम्बी गुलामी, देश का अनेक बार विभाजन आदि ही हमारी आत्मग्लानि के लिए कम नहीं है।

तथाकथित आजादी के बाद भी चारों ओर व्याप्त कुशासन, भ्रष्टाचार, आतंक, अन्याय, अत्याचार, संवैधानिक त्रुटियाँ, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक वैमनस्य, देश विरोधी तथा धर्म विरोधी तत्वों के कारण हमारी हालत बद से बदतर होती जा रही है। ऐसे में अनेक विदेशी कट्टर धार्मिक शक्तियाँ अपने सुनियोजित अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रों से हमें पुन: गुलाम बनाने में सक्रिय हैं। हमारा अस्तित्व मिटाने के लिए कृत संकल्पित हैं। हमारे अनेक शत्रु हैं पर प्रमुखता से इस्लाम और उनके अनुयायी मुस्लिम इस लेख के मुख्य विषय हैं। निम्नलिखित अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों, परम्पराओं, मान्यताओं, मिथ्या धारणाओं आदि का संक्षेप में अध्ययन आवश्यक है।

इस्लाम का प्रारम्भ एवं विस्तार

छठी सदी में अरब देशों के अनपढ़, कबीलों की आपसी लड़ाई के कारण जन्में इस्लाम धर्म (इसे मत या सम्प्रदाय कहना उचित है, यह धर्म नहीं अधर्म है) ने थोड़े ही काल में तलवार की नोंक पर देखते–देखते विश्व के अनेक छोटे–बड़े ५६–५७ देशों को सम्पूर्णतया अपनी गिरफ्त में कर लिया है। इनमें अनेक सनातनी, आर्य, हिन्दू बाहुल्य देश (इराक, ईरान, सिन्ध, पंजाब, अफगानिस्तान, इंडोनेशिया आदि) शामिल हैं। विभाजन (भारत–पाकिस्तान–बांग्लादेश) के बाद शेष भारत को पूर्ण इस्लामी देश बनाने की साजिश बहुत अग्रता से कार्यान्वित की जा रही है, जो स्पष्टता से कश्मीर, केरल, आसाम, बंगाल, बिहार आदि में नजर आ रही है। **हरियाणा–राजस्थान के मेवात क्षेत्र के १२५–१५० गाँव पूर्णतया हिन्दू विहीन हो गए हैं। नूँह गाँव में ९५ प्रतिशत आबादी मुस्लिम है। वैसे तो भारत के हर राज्य/शहर में मिनी पाकिस्तान देखने को मिलते हैं जहाँ पुलिस या प्रशासन की पहुँच मुश्किल है। कश्मीर में हिन्दू पण्डितों की दुर्दशा तो सर्वविदित है कि कैसे रातोंरात चार लाख पण्डितों को घर से बेघर कर दिया जो आज तक भी विस्थापितों का अधोजीवन जी रहे हैं। वह भी जब भारत में कहने को अपनी सरकार थी (कांग्रेस)।**

इससे विपरीत पाकिस्तान में क्या हो रहा है। विभाजन के समय वहाँ हिन्दू जनसंख्या १५ प्रतिशत से अधिक थी किन्तु आज वे २ प्रतिशत से भी कम हो गए हैं। दोनों ही जगह हिन्दुओं का मरण हो रहा है, यह कैसी विडम्बना है?

इस्लाम के फैलाव का तरीका

१. हिंसा और आतंक : अब तक मानव इतिहास में हिंसा व आतंक के जोर पर इस्लाम का विस्तार करने में मुस्लिम सबसे क्रूरतम, निर्दयी, असहिष्णु तथा हिंसक साबित हुए हैं। इतना ही नहीं, ये घोर अत्याचारी, दुराचारी, व्यभिचारी और बलात्कारी भी सिद्ध हुए हैं। ये स्त्रियों के निकृष्ट शोषक भी हैं। महिलाएँ इनके लिए केवल भोग सामग्री और पाँव की जूती के समान हैं। धोखा देना, झूठी कसमें खाना, लूटपाट करना, असामाजिक कृत्यों में व्यस्त रहना इनकी फितरत है। आतंक फैलाना इनका मुख्य हथियार है। उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्दजी ने अपने विवेचनों में कहा था कि मुस्लिमों ने इस्लाम के नाम पर इतना खून बहाया कि उसमें सारी मस्जिदें डूब जाएँ।

२. लोभ–लालच : वर्तमान में अनेक मुस्लिम देश पेट्रोल की कमाई से बेतहाशा अमीर हो गए हैं। अब ये लोग लालच रिश्वत देकर गरीबों का धर्मान्तिरण करवा रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आईओसी संस्था हर प्रकार की सहायता मुहैया करवाती है।

३. जनसंख्या वृद्धि : कुछ काल पूर्व इनका नारा था **'हम पाँच हमारे पच्चीस'** (मियाँ–४ बीवी, हर औरत के ५ बच्चे)। अब इनका नारा है **'हम पाँच हमारे चालीस'** (मियाँ–४ बीवी, हर औरत से १० बच्चे)। भारत जैसे देश में जहाँ लोकतन्त्र व्यवस्था है वोट बढ़ने से सरकार बननी निश्चित है, बिना लड़े–भिड़े या हथियार उठाए। 'आउट नंबर हिन्दूज' आजादी के समय ये ८–१० करोड़ थे, अब ४० करोड़ हो गए हैं। देश के ८० से भी अधिक जिले अभी मुस्लिम बहुल हैं। विशेषज्ञों के अनुमान से अगले ३० वर्ष में ये हिन्दुओं से अधिक हो जाएँगे। इनकी अपेक्षा हम हिन्दुओं का नारा पहले **'हम दो हमारे दो'** था, अब तो **'हम दो हमारा**

एक' की नीति पर चल रहे हैं। आधुनिक हिन्दू अब या तो बड़ी उम्र तक शादी ही नहीं करते या पूर्णरूपेण अविवाहित रहते हैं। अत: परिणाम क्या होगा बिल्कुल स्पष्ट है।

४. स्वार्थी तत्वों पर दबाव : देश की कुछ राजनीतिक पार्टियाँ, स्वार्थी नेता (विशेषकर कांग्रेस, वामपंथी, अखिलेश यादव, ममता, मायावती, लालू यादव, केजरीवाल) अपने आप को सत्ता में टिकाए रखने के लिए मुस्लिमों को केवल वोट बैंक की भाँति उपयोग कर रहे हैं। इन अवसरवादियों की इस कमजोरी का फायदा उठाते हुए मुस्लिमों ने अनेक अवांछित सुविधाएँ प्राप्त कर ली हैं- जैसे हज सब्सीडी, मुल्ला मौलवियों के मासिक वेतन, मदरसों को आर्थिक सहायता, अल्पसंख्यक मंत्रालय और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का गठन आदि। स्मरण रहे सन् २०११ में तो कांग्रेस ने एक ऐसा बहुचर्चित बिल पेश कर दिया था जिससे देश की सम्पत्ति पर प्रथम अधिकार मुस्लिमों को देने का प्रावधान था, हर कौमी फसाद के लिए जिम्मेदार हिन्दुओं को ही ठहराया जाना था आदि। भारी विरोध के कारण बिल पारित नहीं हो सका। याद रहे शाहबानो तलाक केस में तो कांग्रेस ने संविधान में ही परिवर्तन कर दिया था।

५. लव जेहाद : हिन्दू नामधारी बनकर, हिन्दू लड़कियों को नकली प्रेमजाल में फँसाकर अन्तत: उन्हें मुस्लिम बनाने का षड्यन्त्र बहुत समय से जारी है।

६. फिल्मों का इस्लामीकरण : आतंक और पैसों के बल पर केवल उन्हीं अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की फिल्में चलवाना जो इस्लाम समर्थक हों, उन्हीं को फाइनल करना जो इस्लाम प्रशंसक हों और हिन्दू धर्म रीति-रिवाज परम्पराओं की मजाक उड़ाते हों। इस्लाम विरोधियों को फिल्म से बाहर करना आदि।

७. नकली हिन्दू धर्माचार्यों को फँसाना : पैसे और प्रसिद्धि की लालच देकर ईश्वर-अल्लाह एक का प्रचार करवाने की योजना बखूबी चल रही है। हिन्दुओं को बेवकूफ बना रहे हैं। हाल में मुरारी बापू, आनन्दमयी गुरु माँ आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

८. बड़े पैमाने पर घुसपैठ : विशेषकर बांग्लादेश से बांग्लादेशी मुस्लिमों की और बर्मा से रोहिंग्या मुस्लिमों की भारत में घुसपैठ बहुत समय से कार्यान्वित है। उनको भारतीय नागरिक प्रमाणित करने हेतु नकली राशन कार्ड, चुनाव कार्ड, आधार कार्ड आदि व्यापक मात्रा में बनाए जा रहे हैं।

९. असामाजिक तत्व, स्मगलर्स, ड्रग्स का उपयोग : हिन्दुओं में आतंक पैदा करने हेतु ऐसे तत्वों का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है। मारपीट, जमीन-जायदाद पर जबर्दस्ती कब्जा, हिन्दू बहन-बेटियों से दुर्व्यवहार, बलात्कार आम बात हो गई है। असंगठित हिन्दू अपना गाँव छोड़कर पलायन करने के लिए मजबूर किये जा रहे हैं या फिर धर्मान्तरण का विकल्प।

९. नकली शरणार्थी : नकली शरणार्थी मुस्लिमों को अनेक देशों से निकाला जा रहा है। ये सब भारत तथा ईसाई देशों में शरण ले रहे हैं। दुनिया के ५६ मुस्लिम देशों में इनको शरण क्यों नहीं मिल रही है? यह वास्तव में एक सुनियोजित षड्यन्त्र है।

इस्लामिक दृष्टिकोण (काफिर की परिभाषा)

जो भी व्यक्ति अल्लाह, कुरान या शरीयत में ईमान अर्थात् विश्वास नहीं लाता वह 'काफिर' है। (अर्थात् सभी गैर मुस्लिम काफिर) और काफिरों के साथ कैसा व्यवहार करे कुरान में स्पष्ट आदेश है (सूरा-९ आयत-५) कि उन्हें हर तरफ से तड़पा-तड़पा के मारें, विशेषकर रजमान महीने के बाद मारने के साथ-साथ उनकी धन-सम्पत्ति लूटे, गुलाम बनाएँ, उनकी औरतों पर बलात्कार करें, नंगी कर बाजार में उनकी दासी की भाँति नीलामी करें यदि वे इस्लाम कबूल नहीं करते। साथ ही मुस्लिमों को छूट देता है कि मौका परस्ती (अवसरवादिता) से काफिरों के साथ धोखा-फरेब कर सकते हैं, झूठी कसमें खा सकता है, अल्लाह उन्हें माफ करेगा। ये सब काम मुस्लिमों के लिए बहुत बड़े शबाव (पुण्य) का कार्य होगा और इसके लिए अल्लाह उन्हें जन्नत (स्वर्ग) भेजेगा। हूरें (अप्सराएँ) और शराब इनायत करेगा। गुरु गोविन्द सिंहजी ने अपने अनुभव से कहा कि अपना हाथ तेल में डुबाएँ, फिर उसे तिल की बोरी में डालें। जितने तिल हाथ पर चिपकें, उतनी बार भी मुस्लिम कसम खाएँ तो भी भरोसा मत करो।

हिन्दू शब्द का अर्थ

हिन्दू शब्द अरबी भाषा का शब्द है, जिसका डिक्शनरी अर्थ है 'झूठा, बेईमान, डरपोक, अविश्वासी, दीन-हीन, गौ मल-मूत्र पीने वाला, दुत्कारने योग्य' आदि। इस परिभाषा में हम सब (हिन्दू आर्य, सिख, जैन, बौद्ध आदि) हिन्दू हैं और काफिर भी। अत: किसी को भी किसी प्रकार का शक, सन्देह नहीं रहना चाहिए कि मुस्लिम हमसे कैसा व्यवहार करेंगे?

हिन्दुओं का कत्लेआम

इतिहास गवाह है कि किस प्रकार नादीर शाह, अहमद शाह अब्दाली, औरंगजेब, अलाउद्दीन खिलजी, तैमूर लंग, टीपू सुल्तान, मोहम्मद गजनवी, मोहम्मद बिन कासिम (कुछ ही नाम) मुस्लिम लुटेरे तथा हमलाखोरों ने भारत में कत्लेआम किया, खून की नदियाँ बहाई, लूटपाट की, हिन्दू औरतों को अरब के बाजारों में नंगा घुमाया, मंदिरों को लूटा (सोमनाथ १७ बार), मंदिर तोड़कर मस्जिदें बनाई, धर्मग्रन्थों को जलाया, हिन्दुओं पर जजिया कर (टैक्स) लगाया, अकूत माल असबाब लूटकर अरब ले गए आदि। मुस्लिमों ने हमारे विश्वविख्यात उच्च शिक्षा संस्थानों का सम्पूर्ण विनाश किया। नालन्दा, तक्षशिला इसके प्रमुख उदाहरण हैं। वहाँ की पुस्तकें, पाण्डुलिपियाँ, धर्म-विज्ञान के ग्रन्थों को जलाया जिसकी अग्नि ज्वाला महीनों तक धधकती रही। उर्दू पढ़ना अनिवार्य किया, चाटुकार इतिहासकारों से आतंकियों, आततायियों का महिमा मण्डन करवाया (अकबर द ग्रेट) आदि-आदि। ये सब 'पवित्र कुरान' के आदेश पर हुआ। असहिष्णुता की पराकाष्ठा? तड़पा-तड़पा कर मारने के कुछ उदाहरण :-

- पृथ्वीराज चौहान को पहले अन्धा किया फिर मारा।
- गुरु अर्जुनदेवजी को गर्म तवे पर बिठाया फिर मारा।
- भाई मतिदास को आरे से चिरवाया।
- भाई यतिदास को खौलते तेल की कढ़ाई से तला।
- भाई दयाल जी को रुई में लपेटकर जलाया।
- बन्दा बहादुर की खाल नोची, उनके बच्चे का दिल मुँह में ठूंसा।
- गुरु गोविन्दसिंहजी के बच्चों को जिन्दा दीवार में चुनवाया।
- हाल ही में स्क्वाड्रन लीडर सौरभ कालिया और अजय आहुजा की आँखें निकाली, अंकित शर्मा को १०० से अधिक चाकू मारे (दिल्ली झगड़े मार्च २०२०)
- अभी उदयपुर, राजस्थान के कन्हैयालाल दर्जी की गला काटकर हत्या कर दी गई और वीडियो बनाया (२०२२) नूपुर शर्मा के साधारण से कथन को बहाना बनाकर **'सर तन से जुदा'** करने की धमकियाँ देनी शुरू कर दी गई। ■ **(क्रमशः आगामी अंक में)**

हे मानव! तू मानव बन

● **महाशय कर्मपाल 'वैदिक'** *(सिद्धान्त शास्त्री)*
प्लाट नं. ८३, ग्रीन सिटी, सिरसी, जयपुर (राज.)
चलभाष : ७७३३८८०६०१

मेरे प्रिय पाठक वृन्दों!

आज मानवता का ह्रास हो रहा है। चहुँओर मानवता अशान्ति की ओर अग्रसर है। अशान्ति ही अशान्ति है। मानव को मानवतावादी गुण धारण कर सदाचार व सत्यता की ओर उन्मुख होना चाहिए था किन्तु ऐसा न होकर मानव मानवता को छोड़ झूठ, पाखण्ड, असुरता, अमानवीय व्यवहार को अपनाकर मानवता के, नैतिकता के मूल्यों को छोड़कर अमानवीय व्यवहार को अपना रहा है। नैतिकता के मूल्यों से नीचे गिर रहा है। आइये, इस विषय पर कुछ चर्चा हम करते हैं। प्रात:काल हम उठकर प्रात:कालीन वेद मन्त्रों का पाठ करते हैं। उसके आखिरी मन्त्र में कहा है–

ओ३म् भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः श्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह।।

प्रार्थना :– हे सकल ऐश्वर्य के देने हारे सम्पन्न जगदीश्वर! जिससे आपका निश्चय करके सज्जन व विद्वान् लोग सभी प्रशंसा करते हैं। सो आप हे ऐश्वर्यवान्! इस संसार में हमारे गृहस्थ आश्रम में अग्रगामी होकर आगे–आगे सत्कर्मों को बढ़ाने हारे होइये। आप ही समस्त ऐश्वर्य के दाता होने से आप ही पूज्यनीय हैं, उस हेतु हम सकल मानव सकल ऐश्वर्यों से सम्पन्न होकर इस संसार के उपकार में तन–मन–धन के द्वारा हम प्रवृत्त होवें। आपसे प्रभु हमारी यही कामना है। हम अमृतमयी इस सुघड़ बेला में शुभ कर्मों की ओर अग्रसर हों और आपकी स्तुति–वन्दना प्रभु करते रहें।

जीवन में ऐश्वर्य भरो प्रभु अमृत रस का पान करें।
अमृतमयी सुघड़ बेला में शुभ कर्मों का ध्यान करें।।
हम सब हों सौभाग्यवान नित धरते रहें तुम्हारा ध्यान।
सब जग के उपकारी होवें ऐसी कृपा करो भगवान्।।

आगे भागवत पुराण स्कन्ध–३, अध्याय–६, श्लोक–३० में कहा है–

मुखतोऽवर्तत ब्रह्म पुरुषस्य च श्रुतिः।
यस्तन्मुखत्वा द्वार्णानां मुख्योः वेदः।।

अर्थ– हे विदुरजी! वेद साक्षात् परम पिता नारायण से प्रकट हुए हैं। चारों वेद उन्हीं के मुख की वाणी है। इसलिए सभी वर्णों को वेद पढ़ने व सुनने का अधिकार है। वेदों के द्वारा ही मानव का विकास सम्भव है।

सज्जनों! आगे भागवत पुराण स्कन्ध–५ अध्याय–१५ श्लोक–१ में कहा है–

हे राजनः! वी मनुर्वतमानंचानार्या अवेद सामान्यातां।
देवता स्वमनीषया पापी यस्यांकलोकल्पभिष्यति।।

अर्थ– शुकदेवजी ने कहा– हे राजन्! कलियुग में बहुत से पाखण्डी–अनार्य लोग अपनी बुद्धि से वेद विरुद्ध कल्पना करके धर्म के मर्म को न जानकर अपने स्वार्थ के लिए घोर नरक का रास्ता अपना रहे हैं। उन्हें कभी भी स्वर्ग (सुख) व मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। ये लोग मानवता के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं।

मेरे प्रिय सज्जन पुरुषों! चारों वेद मानव कल्याण के लिए हैं। उनको पढ़कर मानव में मानवता आती है और मानव आत्मज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त कर सदाचरण करता हुआ तत्व ज्ञान की राह पर चल प्रभु को पाने के लक्ष्य तक पहुँच जाता है। मानव जीवन के कर्मकाण्ड से लेकर अन्य सभी सामग्री वेदों में वर्णित है। आज का मानव–मानव नहीं स्वार्थपरता में पड़कर अनेकों भगवान मानने, अनेकों देवी–देवता मानने, नए–नए गुरु बनाने वाले सभी पाखण्ड–कुरीतियों व स्वार्थ लोलुपता में पड़कर जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। वेद ज्ञान को नहीं जाना इन लोगों ने तो स्वार्थ के लिए पाखण्डी, ढोंगी, मिथ्यावादी गुरुओं का ज्ञान सीख रखा है। वेद ज्ञान जानते ही नहीं हैं। ये लोग अन्धेरे मार्ग पर भटक रहे हैं और अपनी सन्तान के भविष्य से भी खिलवाड़ कर रहे हैं। उन्हें भी उसी मार्ग में धकेल रहे हैं। मानव जीवन को व्यर्थ ही पशु की तरह गँवा रहे हैं। इन्होंने मानव जीवन का महत्व ही नहीं जाना। मानव जीवन क्या है? मानव बनने का प्रयत्न ही नहीं किया। मानव जीवन क्या है? आगे सुनिये–

१. मानव उसे कहते हैं जो अपने जीवन में सदाचारी रहा हो, शुभ कर्म करने वाला मानव है।
२. जो बिना विचार किये किसी कार्य को न करे, वह मानव है।
३. सत्य–असत्य की पहचान कर सत्य के मार्ग पर चले, वही मानव है।
४. मानवता के कार्य करे, यज्ञ–सन्ध्या–धर्म–तप–दान आदि कार्य करे, यह मानव के कार्य है।
५. वेदों के बताए मार्ग का अनुसरण करता हुआ आगे बढ़े, वह मानव है।
६. दुःख–सुख में समान भाव से रहे, वह मानव है।
७. अपने सुख के लिए किसी को दुःखी न करे, वह मानव है।
८. स्वार्थ का त्याग कर परोपकार–परमार्थ में जीवन लगाए, वह मानव है।
९. किसी की निंदा चुगली न करे, वह मानव है।
१०. मोक्ष प्राप्ति हेतु वेदों के कल्याण मार्ग पर आगे बढ़े, वह मानव है।

सज्जनों, वेद कहता है–

तन्तु तन्वन् राजसो मानुमन्विहि ज्योतिष्यतः पतोरक्षीधया कृतान्।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव दैव्यं जनम्।।

अर्थ– हे मनुष्य! संसार का ताना–बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश

आर्य शब्द का अर्थ

'ॠ गतौ' धातु से **'आर्य'** शब्द सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है **'गतिः प्रापणार्थे'** अर्थात् गति–ज्ञान, गमन, प्राप्ति करने और प्राप्त कराने वाले को आर्य कहते हैं। प्रमाण:–

आर्य ईश्वरपुत्रः। निरुक्त(६/२६)

अर्थात् आर्य ईश्वर के पुत्र का नाम है।

वेद मे ईश्वर कहता है कि–

अहं भूमिमददामायार्य। (ॠ ४/२६/२)

अर्थात् मैं इस भूमि का राज्य आर्यों के लिये प्रदान करता हूँ।

के साथ जा, बुद्धि से परिष्कृत किये हुए मार्गों की तू रक्षा कर। निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के साथ उलझन रहित कर्मों को आगे बढ़ा और इन उपायों से हे मानव! तू मानव बन और देव हितकारी सन्तान उत्पन्न कर आगे धर्म मार्ग पर चलकर मानव जीवन को सफल बना।

इसी कड़ी में महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है– **मानव उसको कहा जाता है जो मननशील हो, जो स्वात्मवत् बन अन्यों के दु:ख–सुख और लाभ–हानि को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे। धर्मात्मा पुरुष चाहे निर्बल हो, चाहे वह अनाथ हो, उससे अवश्य डरता रहे। उन्नति और प्रियाचरण करे। अधर्मी चाहे चक्रवर्ती बलवान हो तथापि उसका नाश और उसकी अवनति सदा किया करें। उसको बलशाली अधिक न बनने दें। इस कार्य में चाहे कितना ही कष्ट उठाना पड़े, तब भी मानव धर्म से विचलित न होवे। वही मानव है।**

महर्षि यास्काचार्य कहते हैं–

ये मत्वाकर्माणि सीव्न्तिते मानवाः।

जो विचारपूर्वक कार्य करता है वही मानव है। जो बिना विचारे कार्य करता है वह मानव कदापि नहीं हो सकता।

पाठक वृन्दों! हम–आप सभी जानते हैं आज की मानवीय दशा क्या है? जघन्य सन्तान, विद्रोही सन्तान, अयोग्य सन्तान, आपस में लड़ना–झगड़ना, भाई से भाई की लड़ाई, भाई–बहिन की लड़ाई, पिता–पुत्र की लड़ाई, पति–पत्नी की लड़ाई, सास–बहू की लड़ाई, भाभी–ननद की लड़ाई एवं साम्प्रदायिकता की लड़ाई इत्यादि संघर्ष हो रहे हैं। क्या यही मानवीयता है?

वेद कहता है– ***संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्।।***

हे मानव पुत्रों! तुम्हारी चाल एक हो, तुम्हारे बोल एक हों, तुम्हारे विचार एक हों, तुम सभी समान विचार वाले हों।

आज हमारी–तुम्हारी चाल एक नहीं है। हमारे विचार एक नहीं हैं। हम में समानता नहीं है। आज का मानव संवादी नहीं विवादी बन गया है। आपस में मतभेदी होकर लड़–झगड़ रहे हैं। किसी शायर ने कहा है–

हुस्ने सूरत से ज्यादा हुस्ने सीख चाहिये।
आदमी में सबसे पहले आदमीयत चाहिये।।

यदि किसी मानव का शरीर सुन्दर और सुडौल और स्वस्थ है किन्तु उसमें मानवता नहीं है तो उस शरीर से क्या लाभ है? कहा है–

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युर्लोके भूमिभार भूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जिस मानव के पास न विद्या है, न तप है, न ज्ञान है, न शील है, न ही विचार शक्ति है, न चरित्र है, न गुण है, न ही मानव धर्म है; वह मनुष्य पशु के समान इस धरती पर विचरण कर रहे हैं। शक्ल सूरत से तो मानव हैं किन्तु ये लोग धरती पर एक बोझ रूप हैं।

अत: वेद में जो **'मनुर्भवः'** मानव बनने की बात कही गई है। साथ ही मानव बनने के साधन भी बताए गए हैं। आइये, हम वेद की बात मानकर मानव बनेंगे तभी कल्याण हो सकता है। ■

(क्रमशः अगले अंक में)

युग नायक योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी

योगिराज सदाचारी थे, ईश भक्त तपधारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।

द्वापर युग का अन्त निकट था, व्याकुल था जग सारा।
वेद मार्ग को त्याग, कष्ट में था तब यह जग सारा।।
यहाँ सैकड़ों शासक थे, गन्दा था हाल हमारा।
आपस में लड़ते थे, बहती थी, शौणित की धारा।।
मार–काट का जोर यहाँ था, अक्ल गई थी मारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।१।।

जरासंघ, शिशुपाल, कंस थे, महानीच अभिमानी।
जगदीश्वर को भूल गए थे, करते थे शैतानी।।
शकुनी, दुर्योधन, दु:शासन, थे भारी अज्ञानी।
जनता थी भयभीत खलों से, करते थे नादानी।।
धर्म–कर्म को त्याग, पाप करते थे अत्याचारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।२।।

कृपाचार्य, द्रोण, भीष्म ने, सत्पथ त्याग दिया था।
प्रमादी बनकर लालच से, रिश्ता जोड़ लिया था।।
गलत काम में दुर्योधन की, मदद खूब करते थे।
परमपिता परमेश्वर से वे, तनिक नहीं डरते थे।।
दुनिया की दुर्दशा देखकर, गरजे कृष्ण मुरारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।३।।

सबसे पहले श्रीकृष्ण ने, पापी कंस मिटाया।
श्रीकृष्ण ने भीम के द्वारा, जरासंघ मरवाया।।
राज दिया उसके बेटे को, भारी त्याग दिखाया।
बनवाया सम्राट् युधिष्ठिर देख जगत् चकराया।।
रक्षक थे श्रीकृष्ण धर्म के, जग के थे हितकारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।४।।

उस योगी को दोष लगाना, महापाप है मानो।
गोपी वल्लभ, चोर बताना, महापाप है मानो।।
राधा प्रेमी, समझ नचाना, महापाप है मानो।
देव पुरुष की हँसी उड़ाना, महापाप है मानो।।
निबलों–विकलों के रक्षक थे, श्रीकृष्ण तपधारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।५।।

सकल जगत् के सब नर–नारी, मूर्खता अब त्यागो।
श्रीकृष्ण की शिक्षा मानो, घोर नींद से जागो।।
चाहो यदि कल्याण साथियों! वैदिक पथ अपनाओ।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, जीवन सफल बनाओ।।
'नन्दलाल' निर्भय बन सच्चा, तू वैदिक प्रचारी।
युग नायक श्री कृष्णचन्द्र के, गुण गाओ नर–नारी।।६।।

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

१४ सितम्बर हिन्दी दिवस पर विशेष प्रस्तुति

आर्यों! क्या आपको स्मरण है हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का रक्तरंजित संघर्ष?

● रामफल सिंह आर्य
वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के समय से लेकर सन् १९६९–७० तक आर्य समाज ने जो कार्य किया वह स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। यद्यपि इस काल अवधि के बीच में कुछ ऐसे अवसर भी आए जब आर्य समाज के समक्ष बड़ी विकराल समस्याएँ मुँह खोलकर खड़ी हुई। प्रथम अवसर तो महर्षि के बलिदान के उपरान्त आया जबकि सारा ढाँचा एक बार तो काँप उठा, लड़खड़ाता दिखाई दिया। परन्तु धन्य हैं उन त्यागी तपस्वी महात्माओं को, जिन्होंने इस महादायित्व को अपने कन्धों पर धारण करके इसे एक क्रान्ति का रूप दे दिया और विश्व को दाँतों तले उंगली दबाने के लिए विवश कर दिया। यद्यपि उस समय कार्य करने में इतनी बाधाएँ थीं कि उनकी ओर आज भी दृष्टिपात करने पर भय सा लगता है। दूसरा अवसर उस समय आया जब हमारे देश के उस समय के भाग्य विधाताओं के कारण इस विशाल देश के दो टुकड़े हो गए और आर्य समाज का केन्द्रीय स्थान लाहौर, पाकिस्तान में ही रह गया। लाखों लोग अपने आत्मीयजनों, घर, धन सम्पत्ति को छोड़कर बड़ी दीन–हीन दशा में भारत आए। यह कहना अनुचित न होगा कि पाकिस्तान बनने से यदि किसी धार्मिक संस्था को सबसे अधिक हानि उठानी पड़ी तो वह आर्य समाज ही था। जो लोग पेट की अग्नि शान्त करने, सिर के ऊपर छत के लिए तथा अपनी व अपने परिवार की लाज ढाँपने के लिए ही विवश होकर यहाँ–वहाँ भटकते फिर रहे हों उनसे संस्थागत कार्यों की उन्नति की आशा रखना बालू की दीवार बनाने के समान था। फिर भी धन्य हैं वे देशभक्त, वे ऋषिभक्त, वे आर्य समाज के दीवाने जिन्होंने इन कठिनाइयों को सहते–सहते अपनी संस्था को न केवल जीवित रखा, अपितु इसे और भी आगे बढ़ाया। मैं एक बार रोहतक से दिल्ली जाने के लिए रेलगाड़ी में बैठा तो एक परिवार भी रोहतक से उसी डिब्बे में चढ़ा। उनमें एक वृद्धा माता थी। बैठते ही उसने अपने थैले से एक पुस्तक निकाली और परिवार को पढ़कर सुनाने लगी। देखो! इसमें स्वामीजी ने यह लिखा है। मैं कुछ देर सुनता रहा। उस माता की भाषा पंजाबी (मुल्तानी) थी। स्पष्ट था कि वह पाकिस्तान से आई हुई थी। कुछ देर के उपरान्त मैंने पूछ ही लिया कि माताजी, आप आर्य समाजी हैं? वह बड़े गर्व से बोली– **''हमारा पूरा परिवार आर्य समाजी है। हम पाकिस्तान में भी प्रत्येक रविवार को नियम से आर्य समाज में जाया करते थे। यहाँ आने पर कुछ दिन के लिए तो बड़े कष्टों में रहे, परन्तु जैसे ही पेट भरने का प्रबन्ध हो गया, हम फिर आर्य समाज में जाने लगे।''** ऐसे लोगों के चरणों में मेरा मस्तक सदैव श्रद्धा से झुक जाता है। यह किसी एक परिवार की गाथा नहीं है। ऐसे न जाने कितने परिवार थे जो अपना सब कुछ गँवाकर यहाँ आए और पुन: आर्य समाज रूपी बगीचे में पुष्प बनकर खिले। यह उस महर्षि का, उस देवता का, उस अद्वितीय वीर का, उस तेजपुंज का तप, त्याग व बलिदान था जिसने लोगों को वेद–पथ का ऐसा अनुयायी बना दिया कि कठिन परिस्थितियाँ भी उन्हें उस मार्ग से हटा न सकीं। समय–समय पर आर्यों के सम्मुख क्या–क्या चुनौतियाँ आईं और कैसे उन्होंने वीरतापूर्वक इनका सामना किया। आइये देखें एक निम्न आन्दोलन के वर्णन में :–

सन् १९४९ में भीमसेन सच्चर की अध्यक्षता में एक निश्चय तैयार किया गया था। इसे **'सच्चर सूत्र'** के नाम से जाना गया था। इसमें हरियाणा एवं पंजाब (तात्कालिक पंजाब) में भाषा की नीति निर्धारण करना था। कालान्तर में इसे सरकार में सभा पटल पर रखकर एक नियम में परिवर्तित किया जाना था। इस निश्चय समिति में चार व्यक्ति सम्मिलित थे, भीमसेन सच्चर, गोपीचन्द भार्गव, उज्ज्वल सिंह तथा करतार सिंह। यह ड्राफ्ट १.१०.१९४९ को दिल्ली में तैयार किया गया था। दिनांक २९.०८.१९५५ को पंजाब के तत्कालीन मुख्यमन्त्री भीमसेन सच्चर ने पंजाब की भाषा, समस्या और सच्चर सूत्र के सम्बन्ध में चण्डीगढ़ सचिवालय में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में एक वक्तव्य दिया जिसका मुख्य आशय यह था कि वे विविध क्षेत्रों से सूचनाएँ एकत्रित करने में लगे हैं और ज्यों ही सूचनाएँ मिल जाएँगी तो विधानसभा के समक्ष इस प्रस्ताव को रखकर इसमें अगला कदम उठाया जाएगा। पाठकों की जानकारी के लिए यहाँ यह बताना आवश्यक होगा कि उपरोक्त सच्चर सूत्र में जो सबसे आपत्तिजनक बात थी वह यह थी कि इसमें हरियाणा तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र में सभी विद्यार्थियों के लिए गुरुमुखी लिपि में लिखित पंजाबी के अध्ययन को अनिवार्य ठहराया गया था। इतना ही नहीं, अपितु हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए विद्यालय में एक संख्या निश्चित की गई थी कि इतने से कम होने पर उन्हें हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था सरकार की ओर से नहीं की जाएगी। इससे पूर्व पंजाब में पेप्सू व्यवस्था के अन्तर्गत बच्चों के माता–पिता तथा अभिभावकों को उनकी शिक्षा का माध्यम चुनने का अधिकार नहीं था।

पंजाब में उस समय भाषा के आधार पर हिन्दी भाषी क्षेत्र तथा पंजाबी भाषी क्षेत्र बनाए गए थे। पंजाबी क्षेत्र में होशियारपुर, जालन्धर, लुधियाना, फिरोजपुर, अमृतसर, गुरुदासपुर, पटियाला, भटिण्डा, कपूरथला तथा अम्बाला का कुछ भाग रखा गया था और हिन्दी भाषी क्षेत्र में शिमला, कांगड़ा, हिसार, रोहतक, गुड़गाँव, करनाल, महेन्द्रगढ़ और अम्बाला तथा संगरूर मण्डल के कुछ भाग सम्मिलित किये गये थे। उस समय के आँकड़ों के आधार पर हिन्दी भाषी क्षेत्र में ९६ प्रतिशत लोग हिन्दी, ४ प्रतिशत से भी कम पंजाबी तथा पंजाबी क्षेत्र में ५५ प्रतिशत पंजाबी भाषी और

४५ प्रतिशत हिन्दी भाषी लोग थे। कुछ क्षेत्र यथा होशियारपुर में हिन्दी भाषी लोगों का प्रतिशत ७२ से भी अधिक था। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि लोगों की भाषा सम्बन्धी स्थिति को देखते हुए जान-बूझ कर उन पर पंजाबी को थोपने का प्रयास किया गया था अथवा यूँ कहें कि हिन्दी के प्रति द्वेषपूर्ण तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार किया गया था। इस समिति के सदस्यों के ऊपर भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री जो किसी प्रकार भी हिन्दी से प्रेम करने वाले न थे, उनका वरदहस्त था। अब स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा क्षेत्रों में इस योजना (षड्यन्त्र कहें तो अधिक उपयुक्त होगा) के विरुद्ध रोष व्याप्त होना स्वाभाविक ही था। आर्य समाज के लोगों ने इस पर बड़ा गम्भीरतापूर्वक विचार किया और राष्ट्रभाषा हिन्दी के इस उपेक्षापूर्ण कृत्य पर स्थान-स्थान पर लोग चिन्तन करने लगे। विचार किया गया कि इसके लिए सरकार से आग्रह किया जाए और यदि वह इस ओर समुचित ध्यान नहीं देती है तो फिर आन्दोलन भी किया जाए।

अत: पंजाब में इस आन्दोलन की रूपरेखा पर विचार करने के लिए पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी महाराज २ अप्रैल १९५६ शुक्रवार के दिन स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ के आश्रम विरजानन्द वैदिक संस्थान खेड़ाखुर्द में पधारे। उस समय पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी का स्वास्थ्य ठीक न था। उन्हें उच्च रक्तचाप का रोग उग्र रूप में था। अत: स्वामी वेदानन्द जी ने कहा कि अभी आप आन्दोलन के कार्य में शीघ्रता न करें। इसके अतिरिक्त एक अन्य कारण यह था कि महर्षि दयानन्द के विद्वेषी लोग जो व्यक्तिगत स्वार्थ की दलदल में फँसे हैं वे भी विरोध करने के लिए तैयार बैठे थे, परन्तु वीरवर यतिवर्य स्वामी आत्मानन्द जी इन बाधाओं की चिन्ता कहाँ करने वाले थे? उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि ऋषि दयानन्द ने हमें विघ्न बाधाओं से घबराना नहीं सिखाया। अत: डरने की कोई बात नहीं है। उसके उपरान्त २५.४.१९५६ को पुन: स्वामीजी के पास खेड़ाखुर्द पहुँच गए, विचार-विमर्श हुआ और उसके पश्चात् दिनांक २५.५.१९५६ को तीसरी बार स्वामीजी फिर खेड़ाखुर्द गए। इस बार स्वामी वेदानन्द जी ने कहा कि आप अम्बाला में होने वाले हिन्दी सम्मेलन में अवश्य जाएँ। हिन्दी सत्याग्रह हम पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ करेंगे।

अम्बाला में हिन्दी सम्मेलन भाद्रपद शुक्ल २४ संवत् २०१३ तदनुसार ९.९.१९५६ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी आत्मानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रशासन से निम्न माँगें स्वीकार करवाने का प्रस्ताव पारित हुआ :-

१. सम्पूर्ण नए पंजाब राज्य में एक ही भाषा योजना लागू होनी चाहिए।

२. शिक्षा संस्थाओं में शिक्षण के माध्यम का चुनाव बच्चों के माता-पिता की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए।

३. किसी विशेष स्तर पर दोनों भाषाओं (हिन्दी पंजाबी) में से किसी एक भाषा का द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाना अनिवार्य नहीं होना चाहिए।

४. शासन के प्रत्येक स्तर पर अंग्रेजी भाषा का स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए।

५. मण्डल के स्तर या उससे नीचे के प्रशासन की सब सूचनाएँ और निर्देश दोनों भाषाओं में होना चाहिए।

६. किसी भी भाषा में प्रार्थना पत्र देने की आज्ञा होनी चाहिए। उनके उत्तर भी उसी भाषा में होना चाहिए।

७. मण्डल स्तर पर उसके नीचे के न्यायालय और अन्य कार्यालयों के प्रशासन अभिलेख दोनों लिपियों में होने चाहिये।

बड़े ही आश्चर्य का विषय था कि इन उपरोक्त सर्वहितैषी माँगों के ऊपर प्रशासन विचार न कर सका। अत: विभिन्न स्थानों पर आन्दोलन की तैयारी के लिए कार्य शुरू हो गया और हिन्दी रक्षा समिति का गठन कर लिया गया। दिनांक ५.५.१९५७ को जालन्धर में सांईदास एंग्लो संस्कृत विद्यालय में एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। उसमें हिन्दी रक्षा समिति के विभिन्न स्थानों से लगभग १०० से भी अधिक सदस्यों ने भाग लिया। उस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि ३० मई से सत्याग्रह शुरू कर दिया जाए जिसका प्रथम रूप **'सद्भावना यात्रा'** का होगा। स्वयं सेवकों की भर्ती करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया और स्वामी आत्मानन्द जी उस सत्याग्रह के सर्वाधिकारी नियत किये गये। १२ डिक्टेटर भी इस सत्याग्रह के लिए चुन लिए गए। हरियाणा प्रान्त से ५००० स्वयं सेवकों ने अपने नाम सत्याग्रह के लिए दिये। १७.५.१९५७ को अम्बाला आर्य समाज रेलवे रोड में एक बैठक रखी गई। इसके साथ ही स्वामीजी के पटु शिष्य आनन्द स्वामीजी महाराज भी आन्दोलन में जुट गए और उन्होंने घोषणा की कि अब यह कदम पीछे नहीं हटाया जाएगा। पंजाब में हिन्दी की रक्षा के लिए जो भी बलिदान देना पड़ेगा, हम देंगे।

१९.५.१९५७ को स्वामी आत्मानन्द जी दिल्ली पहुँचे। उससे पूर्व दिल्ली की हिन्दी प्रेमी जनता को उनके आगमन की सूचना दी जा चुकी थी। अत: दिल्ली स्टेशन पर रेलगाड़ी से जब वे उतरे तो उनका ऐसा अभूतपूर्व स्वागत हुआ कि जो सदैव स्मरण रहेगा। स्वामीजी ने **'सद्भावना यात्रा'** के निमित्त अनेक स्थानों की यात्राएँ की, वहाँ की जनता को एकत्रित किया और २३ मई को उनके आश्रम से उन्हें विदाई दी गई जिसमें भारी संख्या में लोग एकत्रित हुए। उन्हें १४३२ रु. की थैली भेंट की गई और एक भव्य जुलूस ने उन्हें अम्बाला पहुँचाने के लिए यमुना नगर स्टेशन पर विदाई दी। २४ मई को अम्बाला में भी एक भव्य शोभायात्रा आनन्द स्वामीजी, श्री आनन्द भिक्षुजी, स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी एवं अधिवक्ता श्री गोपालकृष्ण पिपलानी के साथ अम्बाला के प्रमुख भागों से होती हुई रेलवे स्टेशन तक गई। वहाँ से स्वामीजी को अमृतसर पहुँचना था क्योंकि सद्भावना यात्रा का आरम्भ यहाँ से होना था। मार्ग में पड़ने वाले स्टेशनों पर भी स्वामीजी का अभूतपूर्व स्वागत किया गया। अमृतसर में आन्दोलन ने व्यापक रूप लिया और यह विचार किया कि यदि सरकार ५-६ मास तक नहीं मानती है तो आनन्द स्वामीजी और महात्मा आनन्द भिक्षुजी अनशन करके अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देंगे। आन्दोलन के समय यदि सरकार ने धारा १४४ लगाई तो उसे तोड़ा जाएगा। सरकार से जो बन पड़े कर ले। चार जत्थों की योजना भी उसी समय बनाई गई। प्रथम जत्था स्वामी आत्मानन्द के साथ चण्डीगढ़ पहुँचेगा, दूसरा जत्था स्वामी रामेश्वरानन्द जी घरौंडा से लेकर चलेंगे, तीसरा जत्था पंजाब जनसंघ के प्रधान आचार्य रामदेव के साथ और चौथा जत्था **'वीर अर्जुन'** के सम्पादक श्री वीरेन्द्र जी १२ जून को लेकर फिरोजपुर में विरोध प्रदर्शन करेंगे। यह भी विचार किया गया कि यदि स्वामी आत्मानन्द जी को गिरफ्तार कर लिया जाता है तो पीछे से आन्दोलन की रूपरेखा क्या रहेगी। ■ **(क्रमश: आगामी अंक में)**

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : **योग विद्या प्रश्नोत्तरी**
संकलयिता : **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
सम्पादक : **आचार्य दिनेश जी, आचार्य प्रियेश जी, आचार्य योगेश जी**
प्रकाशक : दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट, आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता.तलोद, जि.साबरकाँठा, गुजरात-३८३३०७
चलभाष : ९४०९४१५०११, ईमेल: darshanyog@gmail.com
कुल पृष्ठ : १८४ । मूल्य : ८० रुपये
छपाई और गेटअप : उत्तम

प्राप्ति स्थान

दर्शन योग धाम, संस्कृति वन, लाकरोड़ा, गांधीनगर, गुजरात, चलभाष : ९५३७६४९०८२
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, साबरकाँठा, गुजरात चलभाष : ९८९८८४९३४१
दर्शन योग महाविद्यालय (महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया) सुन्दरपुर रोहतक, हरियाणा, चलभाष : ७०२७०२६१७५

ईश्वर ने हमें यह श्रेष्ठ मनुष्य जीवन प्रदान किया है। मनुष्य जीवन प्राप्त कर व्यक्ति अनेक प्रकार के पाप-पुण्य आदि कर्म करता रहता हैं और इन कर्मों के फलस्वरुप विभिन्न योनियों में सुख-दु:ख रूप फल भोगता है। संसार में कर्म करते हुए व्यक्ति अपने आपको सुखी और शान्त रखना चाहता है और सुख-शान्ति की खोज में व्यक्ति इधर-उधर भटकता रहता है। पुण्य कर्मों के फलस्वरूप श्रेष्ठ गुरुजन, मार्गदर्शक आदि प्राप्त होते हैं। उनके माध्यम से उसे स्थायी सुख का मार्ग दिखाई देता है। भारत ऋषि-मुनियों का देश है। ऐसे ही

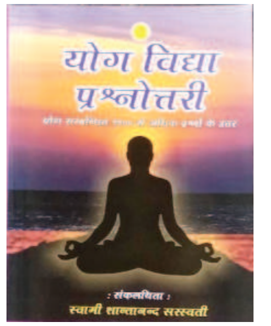

एक श्रेष्ठ ऋषि हुए महर्षि पतञ्जलि जी जिनके द्वारा रचित सूत्रों तथा महर्षि व्यास जी द्वारा रचित उन सूत्रों के भाष्य को हम पढ़ते हैं। इस ग्रन्थ का नाम है **'योगदर्शन'** । षड्दर्शनों में एक दर्शन है योगदर्शन।

योगदर्शन में सम्पूर्ण दु:खों से मुक्ति तथा स्थायी सुख की प्राप्ति के उपाय बताये गये हैं। इस ग्रन्थ को सामान्य जनमानस सरलता से समझ पाए इसलिए पूज्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी ने इस दर्शन की गूढ़ बातों को प्रश्न-उत्तर शैली में हमारे सामने प्रस्तुत किया हैं। स्वामी जी पिछले २१ वर्षों से वेदादि सत्य शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन तथा ध्यान- साधना में संलग्न हैं। इस पुस्तक को पढ़ने से हम योग विद्या से सम्बन्धित अनेक बातों को सरलता से जान सकते हैं और दैनिक जीवन व्यवहार में इस योग विद्या को क्रियात्मक रूप से प्रयोग कर हम अपने आत्मविश्वास को बढ़ाकर जीवन पथ पर आने वाली हर कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। तथा अपने अन्दर विद्यमान सुप्त शक्तियों को जागृत कर जीवन को नया मोड़ देने में सक्षम हो सकते हैं।

योग विद्या से सम्बन्धित सत्य तथ्यों को इस पुस्तक में संकलन किया गया है। इस पुस्तक में हम ऋषियों के द्वारा बतायें गयें ध्यान, समाधि आदि से जुड़े सत्य सिद्धान्तों को भी अच्छी प्रकार जान-समझ सकते हैं। इस पुस्तक को श्रद्धापूर्वक एकाग्रचित्त होकर पढ़ने से हमें जीवन का लक्ष्य तथा व्यवहार में आने वाले अनेक कष्ट-बाधाओं से निकलने का उपाय भी प्राप्त होगा। आशा करते हैं आप सभी इस पुस्तक का लाभ लेंगे तथा अन्यों तक भी यह पुस्तक पहुँचाने में सहायक होंगे। आशा है पूज्य स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी द्वारा संकलित इस नूतन कृति का सम्यक् स्वागत होगा और वैदिक धर्म के प्रचार में यह पुस्तक विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। इस उत्तम कृति के संकलयिता, सम्पादक एवं प्रकाशक सबको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

समीक्षक : आचार्य रमेश आर्य, दर्शन योग धाम, लाकरोड़ा

(पृष्ठ ६ का शेष भाग...)

महाभारत के पश्चात् और पराधीनता के काल के मध्य मातृशक्ति को ज्ञान से समृद्ध बनाया होता तो १८०००-२०००० महिलाएँ मुट्ठी भर आतताइयों के भय से जीवित जल मरने (जौहर प्रथा) के स्थान पर आततायियों का सामना उसी प्रकार से करती जैसे रानी दुर्गावती, महारानी लक्ष्मीबाई और अन्य वीरांगनाओं ने किया और शत्रुओं के दाँत खट्टे किये। जौहर प्रथा में जीवित जल मरने वाली अथवा सामूहिक पाशविक अत्याचार की शिकार अथवा अरब के बाजार में दो-दो दीनार में बेची जाने वाली ललनाएँ एक-एक पत्थर भी मारती तो आतताई भारत पर राज करना तो दूर, आँख उठाकर भी नहीं देखते। वह तो ईश्वर कृपा से देव दयानन्द का अवतरण हो गया और यह देश स्वतन्त्र हो गया अन्यथा यह देश अब तक पूर्ण ईसाई बन गया होता और अब भी नहीं चेते तो हिन्दू राष्ट्र तो छोड़ो, पुन: पराधीनता का दिन भी देखना पड़ सकता है।

ऐसे धूर्त-पाखण्डियों ने सनातन धर्म-संस्कृति के सामने बौने मत-पन्थ सम्प्रदायों के सामने सनातन धर्म संस्कृति को बौना कर दिया है। चाहे वे सैद्धान्तिक रूप में सनातन धर्म-संस्कृति के सामने बौने हों, स्वीकार्य नहीं हो, किन्तु उनके अनुयाइयों का अपनी विचारधारा के प्रति दृढ़ विश्वास और समर्पण प्रशंसनीय है। उनकी विचारधारा का अनुयायी हो या अन्य वह निर्धारित लीक से हटकर कुछ बोलता है तो उसकी एक ही सजा होती है, **'सर तन से जुदा'** जबकि यहाँ कोई देखने, सुनने, कहने वाला नहीं। जिसकी जैसी समझ में आता है बैण्ड बजाकर चले जाता है। इस गधे ने मातृशक्ति के मान-सम्मान को जो क्षति पहुँचाई है, कहीं कोई प्रतिक्रिया नहीं, कहीं कोई विरोध नहीं। कानून-महिला आयोग सभी सोए पड़े हैं। यहाँ तक कि जिस नारी जाति के मान-सम्मान को ठेस पहुँचाई गई। उस नारी जाति की भी कोई प्रतिक्रिया नहीं। कम से कम उसे तो ऐसे गपोड़शंखियों का बहिष्कार करना चाहिए था।

ऐसे ही कुछ कारणों से यह कहा जा सकता है कि हमारी स्वतन्त्रता अपूर्ण है। जब तक वेदों की प्रतिष्ठा पूर्णरूपेण स्थापित नहीं होती और वेद विरुद्ध मान्यताओं का नियन्त्रण-शमन नहीं होता तब तक ना तो कानून व्यवस्था वेद सम्मत होगी और न ही इस देश में पाप से डरने वाले लोग ही मिलेंगे तो नेता और राज्याधिकारी कहाँ से त्यागी-तपस्वी होंगे ? अपितु भोगी-विलासी अवश्य होंगे। वे चाहे धर्माधिकारी हो, नेता हो अथवा राज्याधिकारी हो, उन्हें पुण्यार्जन करने का मानव जीवन स्वर्णिम अवसर प्रतीत नहीं होता। उन्हें तो प्रारब्ध के किन्हीं शुभ कर्मों से प्राप्त यह धर्माधिकारी, नेता, राज्याधिकारी का अवसर भोग भोगने और अकूत धन-सम्पदा एकत्रित करने का स्वर्णिम अवसर प्रतीत होगा। पाप की उन्हें कोई चिन्ता नहीं क्योंकि पाप को धोने वाली उनके चलते-फिरते भगवानों की लांड्रियाँ जो हैं।

हे प्रभु! मेरे ऋषि देव दयानन्द का वेदों की ओर लौटने वाला आह्वान साकार करो और मानव जाति को अनार्ष मत-पन्थों की कारागार से मुक्ति दिलवाकर वास्तविक धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करो। ■

आज बेटियों की दशा-दुर्दशा पर जनमानस

● **मोहनलाल दशौरा 'आर्य'**
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

संसार में हर प्राणी की दो ही जातियाँ हैं– नर और मादा। स्त्री–पुरुष दोनों मिलकर संसार का विस्तार और विकास करने में लगे हैं। भारतीय वैदिक सनातन संस्कृति में स्त्री–पुरुष को बराबरी का दर्जा दिया गया था। पुरुष प्रधान समाज में भी **'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'** का मन्त्र कारगर था। स्त्रियाँ देवियाँ कही जाती थी। गृहिणी होकर भी शिक्षा संस्कार, यज्ञादि में अग्रणी थी। मानव की प्रथम गुरु होने के साथ माता **'निर्माता भवति'** होने के कारण उसका पद उच्च ही था। कालान्तर में मुस्लिम आक्रान्ताओं व शासकों ने भारतीय संस्कृति में घुसपैठ कर इसको छिन्न–भिन्न कर दिया। स्त्री जाति की दुर्दशा हुई। शिक्षा के अभाव के साथ इसे सेविका, दासी व भोग की वस्तु व पाँव की जूती तक ठहरा दिया गया। एक नर चार नारियों तक से पत्नी के रूप में भोग कर सकता। जैसे फार्मूले गढ़े गए। आज भी प्रचलित प्रथा है– **'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।'** कहकर स्त्री जाति को निम्न स्तर पर पहुँचा दिया गया और वर्तमान भी यह कार्य किये जा रहे हैं।

आज के स्वतन्त्र भारत में स्थिति काफी बदलती जा रही है। नारी जाति को फिर वही स्थान, शिक्षा और बराबरी का दर्जा मिल रहा है बल्कि बालिका के मानसिक–शारीरिक विकास और शिक्षा संस्कार व उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ शासन द्वारा संचालित हैं। फलस्वरूप महिला शिक्षित व योग्य होकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। टीचर, नर्स, डॉक्टर से लेकर सरपंच, विधायक, सांसद, मन्त्री, मुख्यमन्त्री, विदेशमन्त्री, वित्तमन्त्री, राजदूत, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति के पद को सुशोभित कर चुकी है। अब तो रक्षा आर्मी, पुलिस, नेवी, पायलट, प्रशासनिक सेवा में भी महिलाओं की भागीदारी है।

परन्तु जहाँ गुलाब के सुन्दर खुशबूदार फूलों का बगीचा सज रहा है, वहीं पर गुलाब में काँटे भी चुभन दे रहे हैं। आज भी पाश्चात्य भौतिक अर्थप्रधान, भोगवादी, अति फैशनेबल अश्लील शिक्षा और संस्कृति हावी होकर नारी जाति को भोगवादी जीवन की तरफ घसीट रही है। नैतिक स्तर व चरित्र, बिना उचित शिक्षा और संस्कारों के कारण पतन की राह पर चला जा रहा है। आज भी खास या सामान्य, शिक्षित हो या अर्ध शिक्षित, अनपढ़, नारी जाति असुरक्षित है तथा उसे भोग की वस्तु के रूप में ही देखा जा रहा है। लव अफेयर्स, लव जेहाद, लिव इन रिलेशनशिप, स्वच्छन्दता, मोबाईल, इन्टरनेट, टीवी, सिनेमा, तामसी और भोगवादी जीवन को प्रोत्साहन देकर समस्याएँ बढ़ा रहे हैं।

आज नारी जाति जितनी शिक्षा और सुविधाएँ प्राप्त कर रही हैं उतना ही उसके साथ दुर्व्यवहार बढ़ता जा रहा है। विवाह शादी में सौदेबाजी, दलाली, दहेज व व्यापारीकरण बढ़ता जा रहा है। आर्थिक बिन्दुओं पर हजारों मामले देश के न्यायालयों में चल रहे हैं व बढ़ते जा रहे हैं। फिर अनैतिक अवैध सम्बन्ध, छेड़छाड़, ज्यादती, अपहरण, बलात्कार के मामले भी नित्य की सुर्खियाँ (समाचार) बनते जा रहे हैं। अपवाद छोड़ हम देख रहे हैं नेता, अफसर, सन्त–महन्त, योगी–भोगी व खास या आम वर्ग कोई भी नारी अत्याचार, दुष्कृत्य, ज्यादती से मुक्त नहीं है। चाचा, मामा, जीजा, भाई, पड़ोसी, रिश्तेदार व कहीं–कहीं बाप तक दरिन्दे बन रहे हैं। अवयस्क, मासूम व अबोध बालिकाओं के साथ पशुओं को भी शर्मसार करने वाला घृणित निर्दयता का व्यवहार 'यूज एंड थ्रो' का हो रहा है। इधर शराब, नशा, जुआ, चोरी, ठगी, मुफ्तखोरी का विस्तार भी नारी जाति पर अत्याचार बढ़ा रहा है। बेटे ने माँ को, पति ने पत्नी की लत के कारण पैसे न देने पर मारा या मार दिया जैसे समाचार भी कई बार मिलते हैं। सरकारों को राजस्व की हानि होती है इस कारण नशाबन्दी में रुकावट आ रही है।

कुछ भी हो, स्त्री जाति को शिक्षा, पद, स्थान, सुविधा, सुरक्षा मिले इसके लिए मानव का नैतिक कर्तव्य तो बनता ही है, साथ ही शासन (सरकारों) को भी कुछ परिवर्तन व ठोस कदम उठाना होंगे।

१. पूर्ण नशाबन्दी कानून हो जिसका सख्ती से पालन सुनिश्चित हो।

२. नैतिक, चारित्रिक शिक्षा अनिवार्य हो। केवल जीविका मूलक (पैकेज) शिक्षा न होकर जीवन मूलक हो, संस्कार–संस्कृति रक्षक हो।

३. विज्ञान, इन्टरनेट, विज्ञापन, टेकनोलॉजी, इलेक्ट्रोन व विकास समय की जरूरत है। परन्तु महिलाओं को मॉडल, नुमाइश के रूप में प्रदर्शन की वस्तु न बनाया–समझा जाए। नग्न वेशभूषा व अश्लील प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध हो।

४. सिनेमा, टीवी पर आपत्तिजनक प्रसारण पर सेंसर हो।

५. दुष्कृत्य, ज्यादती, बलात्कारी को चौराहों पर शारीरिक सजा दी जावे।

६. दुर्गुण, दुर्व्यसन मुक्त स्वाभिमान भारत की कल्पना (रामराज) की साकार होने की तरफ शासन व हर खास व आम का कदम हो।

नारी जाति का सम्मान हो।

बालक–बालिका में भेद न हो।

इस पर स्वस्थ मानसिकता और चिन्तन की जरूरत है। ■

आर्य समाज का अर्थ

महर्षि वेदव्यास जी ने निम्न ८ गुणों से युक्त व्यक्ति को आर्य कहा है।

ज्ञानी तुष्टश्च दान्तश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।
दाता दयालुर्नम्रश्च स्यादार्यो ह्यष्टभिर्गुणैः।।

अर्थ :– जो ज्ञानी हो, सदा सन्तुष्ट रहने वाला हो, मन को वश में करने वाला हो, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, दानी, दयालु और नम्र हो, वह आर्य कहलाता है।

DOLLAR
WEAR THE CHANGE
DOLLAR
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित